धनबाद, शुक्रवार 21.06.2024
मूल्य- ₹ 3
वर्ष-30 अंक-120 पृष्ठ- 12
ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष-15
संवत 2081

झारखण्ड से प्रकाशित सर्वाधिक लोकप्रिय दैनिक

बिहार ऑब्जर्वर

मादक पदार्थों पर रोक के लिए पूर्णत: संकल्पित झारखण्ड सरकार...

RESIST!
REDUCING SUBSTANCE INGESTION AND STOPPING TRAFFICKING

अपनी नसों में नशा नहीं
जिंदगी को दौड़ने दीजिये

नशा से छुटकारे के लिए तुरंत संपर्क करें

टोल फ्री नं- 112 (24x7) पर कॉल करें

रिनपास, राँची | केंद्रीय मनोचिकित्सा संस्थान, राँची
अखिल भारतीय आयुर्विज्ञान संस्थान, देवघर | जिला अस्पताल के आईसीटीसी/एआरटीसी परामर्श केंद्र

सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, झारखण्ड सरकार

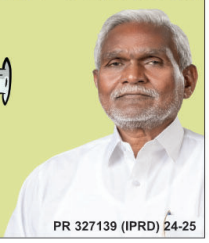

PR 327139 (IPRD) 24-25

25 से 50 वर्ष की महिलाओं को सरकार देगी आर्थिक सहयोग : सीएम

रांची (ससे): मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने अधिकारियों को निर्देश दिया है कि राज्य में शीघ्र मुख्यमंत्री बहन बेटी स्वावलम्बन प्रोत्साहन योजना की शुरुआत करें. इस योजना के तहत २५ वर्ष से ऊपर तथा ५० वर्ष से कम उम्र की सभी वर्ग समुदाय की गरीब जरूरतमंद महिलाओं को आर्थिक सहायता प्रदान की जाएगी.शीघ्र ही इसकी सौगात महिलाओं को मिलेगी. यह निर्देश उन्होंने गुरूवार को महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग की समीक्षा के दौरान दिया.

आईटी की मदद लेकर शीघ्र तैयार करें पोर्टल

मुख्यमंत्री ने कहा है कि हमारी सरकार झारखंड प्रदेश की महिलाओं की बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य एवं पोषण स्तर में सतत सुधार, महिला सशक्तीकरण, परिवार में महिलाओं की निर्णायक भूमिका सुनिश्चित कराने के लिए प्रतिबद्ध है. मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि मुख्यमंत्री बहन बेटी स्वावलम्बन प्रोत्साहन योजना का लाभ निर्धारित समय सीमा के अंतर्गत सभी वर्ग समुदाय के पात्र महिलाओं को मिलना प्रारंभ हो, इस निमित्त विभाग अपनी पूरी तैयारी युद्धस्तर पर करना सुनिश्चित करे. मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि इस महत्वपूर्ण योजना का व्यापक प्रचार-प्रसार करना भी अति आवश्यक है. इसलिए विभाग व्यापक प्रचार-प्रसार करने की कार्ययोजना जल्द बनाएं. मुख्यमंत्री ने अधिकारियों को निर्देश दिया कि इस योजना से संबंधित सभी प्रक्रिया सरल और पारदर्शी हो यह सुनिश्चित करें. आईटी विभाग का पूरा सहयोग लें.

बैठक में मुख्यमंत्री ने सूचना प्रौद्योगिकी विभाग के अधिकारियों को निर्देश दिया कि जल्द से जल्द इस योजना का एक बेहतर पोर्टल तैयार करें. मुख्यमंत्री ने कहा कि इस योजना के सफल संचालन के लिए जरूरी है कि महिला, बाल विकास एवं सामाजिक सुरक्षा विभाग तथा सूचना प्रौद्योगिकी विभाग एक बेहतर तालमेल और समन्वय के साथ योजना के संचालन को मूर्त रूप दें.

सभी पेंशनधारियों को समभव भुगतान सुनिश्चित करें

मुख्यमंत्री सोरेन ने सर्वजन पेंशन योजना के तहत सभी प्रकार की पेंशन योजनाओं की समीक्षा करते हुए विभागीय अधिकारियों को निर्देश दिया कि सर्वजन पेंशन योजना से आच्छादित पेंशनधारियों को पेंशन राशि का भुगतान निर्धारित समय पर करें.

मुख्यमंत्री ने कहा कि अगले एक सप्ताह के भीतर लंबित बकाया पेंशन राशि का भुगतान लाभुकों के खाते में हस्तांतरित करना सुनिश्चित करें. बैठक में राज्य के मुख्य सचिव एल खियांगते, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, महिला, विभाग के सचिव मनोज कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव अरवा राजकमल, विशेष कार्य पदाधिकारी जैप आईटी राजकुमार गुप्ता उपस्थित थे.

नीट मामले में छात्रों के हितों से कोई समझौता नहीं किया जाएगा: धर्मेंद्र प्रधान

नई दिल्ली (ईएमएस): केंद्रीय शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा है कि नीट मामले में शिक्षा मंत्रालय बिहार सरकार के संपर्क में हैं। इस मामले में छात्रों के हितों से कोई समझौता नहीं किया जाएगा। आरोप साबित होने पर दोषियों को कड़ी से कड़ी सजा होगी। धर्मेंद्र प्रधान ने एक प्रेस वार्ता में कहा कि परीक्षा में पारदर्शिता हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता है।

प्रधान ने कहा, पटना से हमें कुछ जानकारी भी आ रही है। आज भी कुछ चर्चा हुई है। पटना पुलिस के पास कुछ जानकारी आई जो सबके सामने भी है। डिटेल्ड रिपोर्ट जल्द भारत सरकार को भेजेंगे। शिक्षामंत्री ने कहा, मैं आपको विश्वास दिलाता हूं कि इस मामले में जो भी दोषी पाया जाएगा, चाहे वो एनटीए हो या एनटीए से जुड़ा कोई अधिकारी हो, उसके खिलाफ सख्त से सख्त कार्रवाई की जाएगी। मैं आपको ये भी सूचित करना चाहूंगा कि ▶▶ 4

पीएम मोदी श्रीनगर में 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह का नेतृत्व करेंगे

नई दिल्ली (ईएमएस): २१ जून २०२४ को १०वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस (आईडीवाई) के अवसर पर, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी कल एसकेआईसीसी में अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस समारोह का नेतृत्व करेंगे। इस वर्ष की विषय-वस्तु, स्वयं और समाज के लिए योग; व्यक्तिगत तंदुरुस्ती और सामाजिक सद्भाव दोनों को बढ़ावा देने में योग की महत्वपूर्ण भूमिका पर जोर देती है।

प्रधानमंत्री के नेतृत्व में आयोजित इस कार्यक्रम में केंद्र शासित प्रदेश जम्मू-कश्मीर के उपराज्यपाल मनोज सिन्हा, केंद्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) तथा केंद्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण राज्यमंत्री प्रतापराव गणपतराव जाधव और कई अन्य गणमान्य व्यक्ति भी भाग लेंगे। इस कार्यक्रम का उद्देश्य योग के अभ्यास के माध्यम से वैश्विक स्वास्थ्य और तंदुरुस्ती को बढ़ावा देने के संदेश के साथ हजारों प्रतिभागियों को एक साथ लाना है। इस अवसर पर, प्रधानमंत्री उपस्थित लोगों को संबोधित करेंगे और सामान्य योग कार्य-कलाप सत्र में भाग लेंगे, जिसमें शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक विकास में योग के महत्व पर प्रकाश डाला जाएगा।

योग के लाभों की समग्रता को अधिकतम करने के लिए, प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने सभी ग्राम प्रधानों को एक पत्र भी लिखा है, जिसमें कहा गया है कि, मैं आपसे जमीनी स्तर पर योग और मोटे अनाजों के बारे में अधिक जागरूकता ▶▶ 4

भर्तृहरि महताब बनेंगे लोकसभा के प्रोटेम स्पीकर, नए सांसदों को दिलाएंगे शपथ

नई दिल्ली (ईएमएस): सात बार के लोकसभा सदस्य भर्तृहरि महताब को लोकसभा का अस्थायी अध्यक्ष (प्रोटेम) नियुक्त किया गया। भर्तृहरि महताब नए सांसदों को शपथ दिलाएंगे। संसदीय कार्य मंत्री किरेन रिजीजू ने बताया कि भर्तृहरि महताब लोकसभा अध्यक्ष का चुनाव होने तक पीठासीन अधिकारी के रूप में कर्तव्यों का निर्वहन करेंगे। लोकसभा सदस्य के. सुरेश, टीआर बालू, राधा मोहन सिंह, फग्गन सिंह कुलस्ते और सुदीप बंद्योपाध्याय अस्थायी अध्यक्ष की सहायता करेंगे।

अठारहवीं लोकसभा का पहला सत्र २४ जून से शुरू होगा। इस दौरान निचले सदन के नए सदस्य शपथ लेंगे और फिर २६ जून को लोकसभा अध्यक्ष का चुनाव होगा। राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मु २७ जून को लोकसभा और राज्यसभा की संयुक्त बैठक को संबोधित करेंगी और अगले पांच वर्ष के लिए नई सरकार के कामकाज की रूपरेखा प्रस्तुत करेंगी।

भर्तृहरि महताब ओडिशा के कटक लोकसभा क्षेत्र से भाजपा सांसद हैं। वह पहले बीजू जनता दल में हुआ करते थे। महताब ने कटक सीट पर अपने निकटतम प्रतिद्वंद्वी बीजद के संतरूप मिश्रा को ५७,०७७ वोटों से हराया।

अबतक 90 भारतीयों ने गंवाई जान

नई दिल्ली (ईएमएस): सऊदी अरब के मक्का में गर्मी का सितम थमता नहीं दिख रहा है। भीषण गर्मी और हीटवेव के बीच अब तक यहां ९० भारतीयों सहित अलग-अलग देशों के ५५० से ज्यादा लोगों की मौत हो चुकी है। इन मौतों कारण हीटवेव या इनलेस (कोई बीमारी) बताया जा रहा है। सभी लोगों की मौत नेचुरली हुई है।

यानी इनमें से कोई भी हादसे का शिकार नहीं हुआ है और ना ही किसी के भी शरीर पर चोट के कोई निशान पाए गए हैं। सामने आए आंकड़ों के मुताबिक मरने वालों में सबसे ज्यादा संख्या ३२३ मिस्र के लोगों की है।

पीएम मोदी डल झील के किनारे करेंगे योगा

नई दिल्ली (ईएमएस): प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शुक्रवार को कश्मीर में नेशनल योगा डे पर आयोजित कार्यक्रम का हिस्सा बनेंगे। वे डल झील के किनारे योगा करेंगे।

वहीं प्रधानमंत्री १५०० हजार करोड़ की परियोजनाओं का उद्घाटन व शिलान्यास करेंगे। इन कार्यों में बुनियादी ढांचे, जल आपूर्ति, शिक्षा और बहुत कुछ शामिल है।

नीट काउंसलिंग रोकने से सुप्रीम कोर्ट का फिर इनकार

कहा- आखिरी सुनवाई के बाद परीक्षा रद्द होती है तो काउंसलिंग भी रद्द हो जाएगी

नई दिल्ली (ईएमएस): सुप्रीम कोर्ट ने गुरुवार को हुई सुनवाई में नीट यूजी काउंसलिंग पर रोक लगाने से फिर इनकार कर दिया है। कोर्ट ने कहा है कि आखिरी सुनवाई के बाद परीक्षा कैंसिल होती है तो काउंसलिंग भी कैंसिल हो जाएगी। इससे पहले ११ जून को भी सुप्रीम कोर्ट ने यह अपील खारिज की थी। आज सुप्रीम कोर्ट में परीक्षा रद्द करने की मांग वाली नई याचिका पर भी सुनवाई हुई। यह अर्जी ४९ स्टूडेंट्स और स्टूडेंट फेडरेशन ऑफ इंडिया ने लगाई थी। इस पर अगली सुनवाई ८ जुलाई को होगी।

याचिकाकर्ताओं ने एग्जाम में ६२० से ज्यादा स्कोर वाले स्टूडेंट्स का बैकग्राउंड चेक करने और फॉरेंसिक जांच करने की मांग की है। वहीं, पेपर लीक के आरोप की सीबीआई जांच की भी मांग की है। इसके साथ ही सुप्रीम कोर्ट ने राजस्थान, ▶▶ 4

यहां से शुरू होगा तृतीय विश्व युद्ध, चीन की हरकतें करवाएंगी दुनिया में कलह

नई दिल्ली (एजेंसी): चीन के नौसैनिकों ने फिलिपींस के मरीन कमांडो की उंगली काट दी. नाव में टक्कर मारी. फिलिपींस ने ब्रह्मोस, टोमाहॉक और ड्रब्-६ मिसाइलें तैनात कर दी हैं.

किसी भी समय ये तनाव की स्थिति बड़े जंग में बदल सकती है. अमेरिका फिलिपींस की मदद करेगा. ऐसे में तीसरा विश्व युद्ध साउथ चाइना सी से शुरू हो सकता है.

चीन और फिलिपींस हथियारबंद संघर्ष के करीब पहुंच रहे हैं. अगर साउथ चाइना सी यानी दक्षिणी चीन सागर में इन दोनों देशों में जंग छिड़ती है,

तो ये विशालकाय युद्ध या फिर तीसरे विश्व युद्ध की शक्ल ले सकता है. क्योंकि फिलिपींस के समर्थन में अमेरिका रहता है. चीन का उग्र रूप फिलिपींस के साथ-साथ अमेरिका को भी आमने-सामने खड़ा कर देगा. चीन की समुद्री सेना और फिलिपींस के कोस्टगार्ड के बीच १७ जून २०२४ को संघर्ष हुआ. चीन के नौसैनिकों ने फिलिपींस के रीसप्लाई वेसल को रोका. उसपर पानी की बौछार की.

अब इस विवादित समुद्री क्षेत्र में कई स्थानों पर छोटे-मोटे या फिर बड़े संघर्ष की आशंका है. सेकेंड थॉमस शोल पर पहले भी हुई हैं घटनाएं।

एक सार्वजनिक बयान में अमेरिका ने स्पष्ट तौर पर इसे चीन का उग्र व्यवहार और गलत कार्रवाई बताई है. इससे पहले भी छह-सात बार इस तरह की हरकत चीन कर चुका है. सेकेंड थॉमस शोल में ही ये सारी घटनाएं इसी साल हो चुकी हैं. इसकी वजह से साउथ चाइना सी में शांति और स्थिरता खत्म हो रही है.

बीसीसीएल
BCCL
भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
Bharat Coking Coal Limited

"योगः कर्मसु कौशलम्"
अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

"करें योग रहें निरोग"

"योग धर्म नहीं, विज्ञान है, इसमें शरीर, मन और आत्मा को जोड़ने का विधान है।"

भारत कोकिंग कोल लिमिटेड
(एक मिनीरत्न कम्पनी)
(कोल इण्डिया लिमिटेड की एक अनुषंगी कंपनी)
कोयला भवन, कोयला नगर, धनबाद
facebook.com/BCCLofficial twitter.com/bcclofficial instagram.com/bccl.official

हम सब का एक ही नारा, नशा मुक्त जीवन हो हमारा : उपायुक्त

न्यू टाउन हॉल में मादक पदार्थों के रोकथाम हेतु जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन

धनबाद (कासं) : गुरुवार को जिला समाज कल्याण कार्यालय एवं जिला जनसम्पर्क कार्यालय के संयुक्त तत्वावधान में मादक पदार्थों के विरुद्ध चलाए जा रहे जागरूकता कार्यक्रम के तहत न्यू टाउन हॉल में जिला स्तरीय कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की शुरुआत उपायुक्त माधवी मिश्रा, सिटी एसपी अजित कुमार, डालसा के डॉ कुमार विमलेंदु समेत अन्य पदाधिकारी द्वारा दीप प्रज्वलित कर की गई।

कार्यक्रम के दौरान सभी बच्चों को पीपीटी के माध्यम से मादक पदार्थों के दुष्प्रभाव के बारे में जानकारियां दी गई। साथ ही उपायुक्त, सिटी एसपी समेत अन्य पदाधिकारी एवं विभिन्न विद्यालय से आए छात्र-छात्राओं ने मादक पदार्थों के विरुद्ध न्यू टाउन हॉल में हस्ताक्षर अभियान हेतु लगाये गए हस्ताक्षर पट्ट पर हस्ताक्षर कर इस मुहिम में शामिल हुए एवं बच्चों ने संकल्प लिया कि जीवन में कभी भी किसी प्रकार के नशे दूर रहेंगे और समाज के और भी साथियों को इसके प्रति जागरूक करेंगे। इस दौरान उपायुक्त ने कहा कि निषिद्ध मादक पदार्थों का दुरुपयोग को कम करने, इसके व्यापार में संलिप्त तस्करों तथा

उपयोगकर्ताओं के विरुद्ध सख्त कानूनी कार्रवाई के साथ-साथ समाज को विशेषकर किशोर तथा युवा वर्ग को इसके दुष्प्रभाव के प्रति जागरूक करने के उद्देश्य से राज्य सरकार द्वारा प्रस्तावित राज्यव्यापी जागरूकता कार्यक्रम जिले में भी संचालित किया जा रहा है।

इस अभियान में शिक्षकों की भूमिका अहम हो जाती है, सभी शिक्षक छात्रों को अच्छी शिक्षा दे एवं उनपर ध्यान भी दे क्योंकि इस उम्र में बच्चे अक्सर नई चीजों की तरफ आकर्षित होते हैं ओर कई बार गलत चीजों की तरफ चले जाते हैं जिससे उनके भविष्य अधर में चली जाती है। उपायुक्त ने कहा कि प्रभावी परिणाम के लिए मादक पदार्थों के खिलाफ सभी विभागों एवं एजेन्सियों को आपसी समन्वय बनाकर जागरूकता अभियान संचालित किया जा रहा है जिसके तहत जिला प्रशासन सहित समाज कल्याण विभाग, जनसम्पर्क कार्यालय, जेएसएलपीएस की महिला संगठनों, पंचायती राज संस्थाओं, शैक्षणिक संस्थाओं समेत अन्य विभागों को अपने-अपने स्तर से कार्यक्रम आयोजित किया जा रहा है। जो भी बच्चे नशे की आदि हैं उन्हें इन सभी चीजों से बाहर निकलना भी हमारी प्राथमिकता है एवं जो भी बच्चे इसके चपेट में भी नहीं आए हैं उन्हें भी इनसे बचा कर रखना हमारी प्राथमिकता है। सिटी एसपी अजित कुमार ने कहा कि इस अभियान में जिला प्रशासन के अलावा समाज के नागरिकों की भूमिका भी महत्वपूर्ण है। खासकर बच्चों के माता-पिता एवं शिक्षक इसकी महत्वपूर्ण भूमिका में रहते हैं।

इसलिए आवश्यक है कि सभी पेरेंट्स अपने-अपने बच्चों पर अवश्य नजर रखें साथ-साथ अपने आस पड़ोस के बच्चों पर भी नजर रखें। ताकि आपके बच्चों के साथ-साथ समाज के बच्चों को भी नशा एवं मादक पदार्थों से दूर रखा जाए। यदि कोई बच्चे आपको नशे के शिकार में दिखते हैं तो अवश्य हमे सूचना दे ताकि उन्हें इन चीजों से दूर रखा जाए। समाज के प्रति अपनी जिम्मेदारी अवश्य सुनिश्चित करें। कार्यशाला में सिटी एसपी अजित कुमार, डालसा से (एलएडीसीएस) डॉ. कुमार विमलेंदु, निदेशक डीआरडीए राजीव रंजन, जिला समाज कल्याण पदाधिकारी अनिता कुजूर, जिला जनसम्पर्क पदाधिकारी सुनील कुमार सिंह, डीपीएम जेएसएलपीएस शैलेश रंजन, सहायक नगर आयुक्त संतोषिणी मुर्मू, डीएसपी मुख्यालय-१ शंकर कामती समेत अन्य पदाधिकारी एवं युवा छात्र-छात्राएं शामिल हुए।

योग दिवस के रूप में मनाया जायेगा श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि

धनबाद (कासं) : भारतीय जनता पार्टी धनबाद जिला महानगर के अध्यक्ष श्रवण राय ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का संगठन कार्य हमेशा चलता रहता है। इसी निमित्त १०वां योग दिवस भारतीय जनता पार्टी धनबाद जिला महानगर में भव्य रूप से मनाया जाएगा। योग दिवस के प्रभारी के रूप में जिला अध्यक्ष श्रवण राय ने जिला उपाध्यक्ष मानस प्रसून को नियुक्त किया है। जिला अध्यक्ष श्रवण राय ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी धनबाद जिला महानगर के सभी १७ मंडल, सात मोर्चा और प्रकोष्ठ योग दिवस मनाएंगे।

भारतीय जनता पार्टी के आराध्य पुरुष पंडित श्यामा प्रसाद मुखर्जी की पुण्यतिथि २३ जून से एक पखवाड़े के रूप में मनाएगी। एक पखवाड़े के कार्यक्रम में विचार गोष्ठी तथा पन्ना प्रमुख स्तर तक के सभी कार्यकर्ता एक पेड़ मां के नाम कार्यक्रम करना है। जिसमें अपनी मां के साथ पेड़ लगाना है। इस पखवाड़ा के दौरान जितने भी कार्यक्रम होंगे सभी कार्यक्रम पौधारोपण कार्यक्रम के साथ प्रारंभ होंगे। २५ जून को आपातकाल लगा था उसे दिन को काला दिवस के रूप में मनाना है। इस कार्यक्रम के लिए जिला अध्यक्ष श्रवण राय ने जिला महामंत्री रवि सिन्हा को प्रभारी मनोनीत किया है। आपातकाल दिवस के निमित्त एक पत्रकार वार्ता का भी आयोजन होगा।

३० तारीख से पूर्व की भांति प्रत्येक महीने के अंतिम रविवार को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी मन की बात कार्यक्रम करेंगे। जिसे भारतीय जनता पार्टी धनबाद जिले के सभी कार्यकर्ता अपने-अपने बूथों पर सुनेंगे।

दी आर्ट ऑफ लिविंग संस्था ने की विभिन्न संस्थानों में योग-प्राणायाम का अभ्यस्त

धनबाद (कासं) : आर्ट ऑफ लिविंग ब्यूरो ऑफ कम्युनिकेशन धनबाद मीडिया प्रभारी मयंक सिंह ने बताया कि १०वीं अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मौके पर दी आर्ट ऑफ लिविंग संस्थान को धनबाद के विभिन्न सरकारी व निजी संस्थानों ने योग, प्राणायाम और ध्यान अभ्यास के लिए निमंत्रण दिया है। गुरूवार को मंडल कारा धनबाद में डाक्टर राम नारायण और संदीप कौशल ने ६० कारावास बंदियों को योगाभ्यास करवाया वहीं कल ४०० लोगों को करवाने की व्यवस्था की गई है। वही प्रशिक्षिका सोनी कुमारी ने सिटी लाइव मीडिया हाउस के सभी मीडियाकर्मी व चंचनी कॉलोनी स्थित नई दिशा वूमेन ऑर्गेनाइजेशन में वॉलंटियर जूही महतो के साथ अंतर्राष्ट्रीय योग प्रोटोकॉल को कराया। आर्ट ऑफ लिविंग प्रशिक्षक व वोलेंटियर्स कल बीबीएमके यूनिवर्सिटी, वाहिनी रेलवे सुरक्षा विशेष बल धनबाद, पीवीआर इनॉक्स, बीसीसीएल मुनीडीह, एसबीआई, आयकर विभाग, कार्मेल स्कूल आदि में करवाएंगे।

21 जून ही नहीं बल्कि प्रत्येक दिन योग दिवस मनाया जाना चाहिए : ढुल्लू

गोविंदपुर (ससे) : भाजपा धनबाद जिला ग्रामीण द्वारा राजविलास रिजॉर्ट कौआबांध में योग दिवस की पूर्व संध्या पर गुरुवार को आयोजित योगाभ्यास कार्यक्रम को संबोधित करते हुए सांसद ढुल्लू महतो ने कहा कि केवल २१ जून ही नहीं बल्कि प्रत्येक दिन योग दिवस के रूप में मनाया जाना चाहिए और प्रत्येक व्यक्ति को अपने घरों में प्रातः योग करना चाहिए। इससे अनेक बीमारियों से हमें मुक्ति मिल सकती है और चिकित्सकों के यहां जाने और दवा खाने से छुटकारा मिल सकता है। उन्होंने कहा कि योग को अपनी दिनचर्या में शामिल करने वाले निरोग रह रहे हैं। उन्होंने संयुक्त राष्ट्र संघ से २१ दिसंबर को योग दिवस मनाने की पहल के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का आभार प्रकट किया। उन्होंने कार्यक्रम में शामिल सभी भाजपाइयों से योग का प्रशिक्षण लेने और २१ जून को अपने-अपने क्षेत्र में योग शिविर लगाने की अपील की। इस अवसर पर योगाचार्य लक्ष्मीकांत पंडित किशोर कुमार, किशोर कुमार व अनु कुमार ने शिविर में शामिल भाजपाइयों को प्रशिक्षण दिया और अभ्यास कराया। कार्यक्रम में संयोजक नंदलाल अग्रवाल ने सभी का स्वागत किया। जिलाध्यक्ष घनश्याम ग्रोवर ने योग शिविर के लिए मंडल प्रभारियों की घोषणा की। मौके पर प्रदेश कार्यसमिति सदस्य ज्ञान रंजन सिन्हा, तारा देवी, जिला उपाध्यक्ष नन्दलाल अग्रवाल, बलदेव महतो, संजय महतो, मीडिया प्रभारी रतिरंजन गिरि, मोहन कुंभकार, कुमार महतो, राजेश चौधरी, ओमप्रकाश बजाज, जहीर अंसारी, सुजीत चौधरी, दिनेश मंडल, कृटि भूषण रूज, संजय झा, काजल नाग, प्रशांत बनर्जी, विश्वनाथ पाल, नवल चौधरी तालेश्वर साव, जग्गू साव, विवेकानंद पांडेय, गोपाल भारती, नीतू शंकर, संतराम चौधरी आदि थे।

माँ काली के दरबार में भाजपा नेता योगेंद्र यादव पहुंचे

जोड़ापोखर (ससे) : जोड़ापोखर थाना के पीछे सुंदरनगर बस्ती स्थित काली मंदिर में कमिटी के सदस्यों द्वारा ६वां वार्षिक मन्दिर भवन निर्माण दिवस समारोह का आयोजन किया गया है। हलांकि ५४ वर्ष से ही स्थानीय लोगों द्वारा एक बेदी पर माँ काली की पूजा-अर्चना किया जाता था।

गुरुवार को को बस्ती के अलावा क्षेत्र के भक्तों की भीड़ उमड़ पड़ी है। माँ काली के दरबार में माथा टेकने धनबाद के सांसद ढुल्लू महतो भाजपा के वरिष्ठ नेता योगेंद्र यादव भी पहुंच कर माँ का आशीर्वाद प्राप्त किया है। दोनों ने धनबाद एवं झरिया वासियों की सलामती की दुआ मांगी है। मंदिर के पुजारी दिलीप चक्रवर्ती एवं सौरभ चक्रवर्ती ने सुबह से ही माँ का महापूजा, हवन, आरती, पुष्पांजलि अर्पण भक्तों ने किया है। इस अवसर पर सुंदर कांड का आयोजन किया गया है। जिसमें पाठ में कई भजनकर्ता ने भाग लिया, जिसमें क्षेत्र के भजन कीर्तन मंडली ने भाग लिया है। वही महाभोग प्रसाद का वितरण किया गया, जिसमें सभी धर्मावलम्बियों ने भाग लिया है। आयोजन मंडली में शामिल है देव कुमार दत्ता, गणेश केशरी, बच्चू बनर्जी, विजय साह, प्रदीप मुखर्जी, सुनील मिश्रा आदि शामिल है।

बीसीसीएल के विभिन्न क्षेत्रों ने लहराया स्वच्छता का परचम

धनबाद (कासं) : १६ से ३० जून तक चलने वाले देशव्यापी स्वच्छता पखवाड़ा-२०२४ के अंतर्गत गुरूवार को बीसीसीएल के पश्चिमी झरिया क्षेत्र ने संसिखरा गांव, मुनीडीह में प्लास्टिक और कचरा प्रबंधन पर जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किया गया।

मुनीडीह गांव में जूट बैग का वितरण किया गया। उपरोक्त कार्य में मुनीडीह गांव के मुखिया चक्रधर महतो, प्रमुख आरती देवी, बिनीता कुमारी (एपीएम डब्ल्यूजे क्षेत्र), कुमारी वर्षा उप प्रबंधक (कार्मिक), कुमारी अनुपमा प्रबंधक (कार्मिक), मनमोहन प्रसाद (उप प्रबंधक) (ईएंडएम) सहित मुनीडीह क्षेत्र के कर्मचारी तथा अधिकारीगण उपस्थित थे।

सिजुआ क्षेत्रीय कार्यालय के द्वारा राजगंज के दलदली गाँव में साफ-सफाई का कार्य किया गया एवं ग्रामीणों में स्वच्छता जागरूकता फैलायी गयी तथा साथ ही स्वच्छता संबंधित कविता का पाठ करके ग्रामीण जनता में स्वच्छता का संदेश प्रसारित किया गया। तत्पश्चात राजगंज बाजार में स्वच्छता कार्यक्रम चलाया गया एवं स्वच्छता संबंधित कविता का पाठ किया गया। कार्यक्रम के दौरान बाजार में अनेक महिलाओं एवं पुरूषों की उपस्थिति रही। उक्त कार्यक्रम में सिजुआ क्षेत्र के क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक ने अपने वक्तव्य में कार्यक्रम में उपस्थित सभी लोगों को बीसीसीएल द्वारा आयोजित स्वच्छता पखवाड़ा के उद्देश्यों से अवगत कराया तथा राजगंज बाजार के आसपास के अनेकों दुकानों में जाकर दुकानदारों को स्वच्छता के प्रति जागरूक करने का कार्य भी किया। इस अवसर पर क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक, सिजुआ क्षेत्र, सहायक प्रबंधक (का.), सिजुआ क्षेत्र के साथ-साथ अनेक कर्मचारियों ने भी हिस्सा लिया, जिसमें महिला कर्मियों की भागीदारी भी रही।

वाशरी डिवीजन क्षेत्र द्वारा वाशरी डिवीजन की परिधि में अवस्थित गांवों सुगियाडीह एवं खरनागढ़ा में प्लास्टिक अपशिष्ट प्रबंधन पर जागरूकता अभियान चलाया गया। यह कार्यक्रम महाप्रबंधक, वाशरी डिवीजन की अध्यक्षता में संचालित किया गया जिसमें क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक वा.डि. सुनील कुमार, शैलेन्द्र कुमार तथा अन्य अधिकारियों एवं कर्मचारियों ने हिस्सा लिया। जागरूकता जत्था, वाशरी डिवीजन मुख्यालय से महाप्रबंधक, वा.डि. द्वारा हरी झंडी दिखाने के साथ जागरुकता भ्रमण हेतु प्रस्थान किया एवं सीसीडब्लू कॉलोनी होते हुए सुगियाडीह एवं खरनागढ़ा गांव पहुंचा जहां पर गांव के लोगों को प्लास्टिक के उपयोग न करने हेतु जागरूक किया गया।

पत्नी को मारपीट की सूचना पर पहुंची पुलिस, पति के पास से मिला 80 जिंदा कारतूस, गिरफ्तार

धनबाद (कासं) : पुलिस अधीक्षक नगर अजीत कुमार के कार्यालय कक्ष में एक प्रेस वार्ता आयोजित की गई जिसमें पुलिस उपाधीक्षक विधि- व्यवस्था दीपक कुमार भी मौजूद थे।

प्रेस वार्ता के दौरान एसपी ने बताया कि स्वाती कुमारी, पति राहुल कुमार सिंह, सा० अनन्या अपार्टमेंट फ्लैट नं.-४०२ स्टील गेट, थाना सरायढेला, जिला धनबाद के द्वारा सूचना मिला कि उनके पति द्वारा मारपीट किया जा रहा है। इस सूचना पर पुलिस फ्लैट नं० ४०२ अनन्या अपार्टमेंट पहुंची और गेट खुलवाया तो स्वाती कुमारी रोते हुए बोली कि उनका पति मारपीट करता है और जेवर चुराने का आरोप लगाता है।

स्वाती बोली कि घर में जेवर खोजे नहीं मिला। राहुल कुमार सिंह के कमरा में अलमीरा है जिसका चाभी राहुल कुमार ही रखता है और किसी को नहीं देता है। अगर राहुल कुमार सिंह के अलमीरा को खोला जाएगा तो संभवतः जेवर मिल सकता है। पुलिस के द्वारा राहुल को समझाने के उपरांत राहुल खुद अलमीरा के अपने पास रखे चाभी से खोल कर दिखाने लगा तो देखा गया कि वह एक छोटे बैग को छिपाने का प्रयास कर रहा है। पुलिस के द्वारा पूछा गया कि बैग में क्या है तो वह अपने कमरा से भागने का कोशिश किये लेकिन पुलिस की उपस्थित रहने के कारण नहीं भाग पाया। उक्त बैग को खोला गया तो उसमें कुल ८० जिन्दा कारतूस बरामद हुआ। इस संदर्भ में कोई वैध कागजात नहीं दिखाया गया तदोउपरांत विधिवत जब्ति सूची तैयार किया गया तथा इस संदर्भ में सरायढेला थाना कांण्ड सं० १३९/०२४ दिनांक १९.०६.०२४ धारा-२५ (१-एए) शस्त्र अधिनियम अंकित किया गया।

आयष्मान आरोग्य मन्दिर के सभी सीएचओ को दिया योग प्रशिक्षण

धनबाद (कासं) : अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के पूर्व संध्या में गुरूवार को बोकारो जिला के आयुमान आरोग्य मन्दिर के नोडल पदाधिकारी डा. सेलिना टुडू के अध्यक्षता में सभी आयुष्मान आरोग्य मन्दिर के सभी सीएचओ को योगासन के बारे में विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया जिसमें सभी सीएचओ को मानसिक स्वास्थ्य एवं तनाव मुक्ति से सम्बन्धित योग के बारे में बताया गया।

योग प्रशिक्षक स्वपन कुमार, पूनम कुमारी एवं धरनीधर साहिस के द्वारा सभी प्रतिभागियों को बताया गया कि योग का मतलब जोड़ना है। योग मनुष्य को दीर्घायु बनाता है। सभी प्रशिक्षकों द्वारा प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के आसन के बारे में बताया गया जैसे वज्रासन, सिद्धासन, वक्रासन, गौमुखासन, हलासन, नौकासन, मकरासन एवं सवासन आदि के बारे में बताया गया।

योगासन प्रशिक्षण के पश्चात जिलापरामर्शी मो. असलम तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम बोकारो के द्वारा सभी प्रतिभागियों को तम्बाकू निषेध पर सामूहिक शपथ दिलाया गया साथ ही सभी सीएचओ को बताया गया कि कल योग दिवस के अवसर पर अपने-अपने आयुष्मान आरोग्य मन्दिर में योगासन के पश्चात तम्बाकू किसी भी नशीली पदार्थ न लेने हेतु शपथ का आयोजन जरूर करेंगे ताकि बोकारो जिला को नशा मुक्ति जिला की तरफ अग्रसर किया जा सके।

प्रशिक्षण में बोकारो जिला के आयुष्मान आरोग्य मन्दिर के नोडल पदाधिकारी डा० सेलिना टुडू, कार्यक्रम प्रबंधक प्रदीप कुमार सिन्हा, जिला कार्यक्रम सहायक आरती कुमारी मिश्रा, जिला परामर्शी मो. असलम, असीम कुमार, प्रशिक्षण स्वप्न कुमार, पूनम कुमारी आदि उपस्थित थे।

गैस सर्विस से दो पक्षों के मजदूरों के बीच मारपीट

कतरास (ससे) : बरोरा थाना अंतर्गत बेहराकुदर स्थित इंडेन गैस सर्विस के गोदाम में कार्यरत मजदूरों के दो पक्षों के बीच विवाद हो गया। विवाद देखते ही देखते झड़प में बदल गयी। दोनों पक्षों के बीच जमकर मारपीट हुई।

दरअसल गैस सर्विस के गोदाम में कार्यरत पूर्व के मजदूर गोदाम के समक्ष धरने पर बैठे थे। इनका यह आरोप था कि बिना किसी कारण के इन सभी ३० मजदूरों को गैस सर्विस संचालक राजेश राम द्वारा गत दो महीने पूर्व कार्य से हटा दिया गया है और विगत ५ वर्षों से वेतन भी बकाया रखा गया है। लंबे समय से वेतन बकाया रहने से इन मजदूरों की घर की स्थिति

काफी दयनीय हो गयी थी। इसी बीच इन सभी को कार्य से हटाकर नए मजदूरों को बहाल कर कार्य कराया जा रहा था। इसी को लेकर धरने के दौरान दोनों पक्षों के बीच झड़प हो गयी। सूचना मिलते ही बरोरा पुलिस मौके पर पहुँची। साथ ही मारपीट को सुलझाते हुए सभी को शांत कराया। मामले में गैस सर्विस संचालक राजेश राम ने कहा कि पूर्व के मजदूरों के शिकायत से जुड़ा मामला न्यायालय में लंबित है तो ऐसी स्थिति में हाथापाई करना नाजायज है। वही प्रशासन के हस्तक्षेप के बाद यह आश्वासन दिया गया कि सभी पक्षों के बीच थाने में वार्ता कर समुचित रास्ता निकाला जाएगा।

डी.बी. पब्लिकेशन्स प्रा. लि. के लिए जोड़ाफाटक रोड, धनबाद से राजेन्द्र कुमार अग्रवाल द्वारा मुद्रित एवं अंजना अग्रवाल द्वारा प्रकाशित. संपादक - गणेश मिश्रा. फोन - 9431726337
e-mail : biharobserver@gmail.com RNI No- 58991/95. * पी.आर.बी. एक्ट के तहत समाचार चयन एवं प्रकाशन के लिए गणेश मिश्रा जिम्मेवार होंगे एवं समस्त विवाद धनबाद न्यायालय के अधीन होंगे

रफ्तार की कहर से दुर्घटनाओं में उजड़ गए कितने परिवार

धनबाद (कासं) : धनबाद की सड़कों पर रफ्तार का कहर देखिए हुजूर! रोज लोग मर रहे हैं। वाहन चलाने वाले भी नहीं सुधर रहे हैं,तो उन्हें सुधारने की ठोस कोशिश भी नहीं की जा रही है। इसी साल २० अप्रैल को बॉलीवुड अभिनेता पंकज त्रिपाठी की बहन सरिता तिवारी और बहनोई राजेश तिवारी निरसा में जीटी रोड पर सड़क दुर्घटना का शिकार हो गए थे। दुर्घटना में राजेश तिवारी की जान चली गई थी।

६ मई को असर्फी अस्पताल के सामने विपरीत दिशा में तेज रफ्तार स्कॉर्पियो डिवाइडर फांद कर दूसरी लेन में घुसी और स्कूटी से जा रही दो बहनों को रौंद दिया। शिक्षक पुत्री दो बहनों ने दम तोड़ दिया था।

२५ मई को जीटी रोड पर बरवाअड्डा के कल्याणपुर के पास एक कार कंटेनर से जा टकराई। कुल आठ लोग कार पर सवार थे। सभी शादी का रिश्ता तय करने के लिए रायगंज जा रहे थे। घटना में तीन लोगों की मौत हो गई थी। १ जून को मेमको मोड़ के समीप तेज रफ्तार स्कॉर्पियो ने पिता पुत्री को जोरदार टक्कर मारते हुए दूसरी कार से टकराई थी। घटना में इलाज के दौरान कुछ दिन बाद तोपचांची के एक व्यक्ति की मौत हो गई थी। यह तो है हाल की कुछ भीषण दुर्घटनाएं,

जिन में कई परिवार तबाह हो गए। मंगलवार की देर रात लोहारबरवा में हुई हृदय बिदारक सड़क दुर्घटना में ४ युवकों की मौत हो गई। पांचवां भी गंभीर रूप से घायल है। यह दुर्घटना इतनी भीषण थी कि कार में ही मृतकों की बांडी फंस गई थी। धनबाद की सड़कों पर दुर्घटनाएं रुकने का नाम नहीं ले रही है। मंगलवार की रात हुई दुर्घटना ने एक बार फिर लोगों को विचलित कर दिया है। घटना के कारण के बारे में तरहतरह की बातें कही जा रही है। प्रमुख बातें हैं कि कार रॉन्ग साइड से जा रही थी। हाल के दिनों में आठ लेन सड़क और जीटी रोड पर दुर्घटनाओं के पीछे रॉन्ग साइड से गाड़ी चलाना कारण बन रही है।

धनबाद जिले में ना तो रफ्तार पर काबू पाने के लिए अभियान चलाया जा रहा है और नहीं रॉन्ग साइड वाहन चलाने वालों पर अंकुश लगाया जा रहा है। शराब के नशे में भी बेपरवाह ढंग से गाड़ियां चलाई जा रही है। लोगों का कहना है कि जीटी रोड पर और ८ लेन सड़क के सर्विस लेने के अतिक्रमण के कारण भी गाड़ियां रॉन्ग साइड से चल रही है। सर्विस लेन पर आम लोगों के सायसाथ दुकानदारों और बड़े बहनों का कब्जा रहता है। जीटी रोड के थानों के बाहर लगी बड़ीबड़ी गाड़ियां भी सर्विस लेन में अवरोध पैदा कर रही है। गोविंदपुर थाने के बाहर बड़े वाहन खड़े हैं। यही हाल निरसा, राजगंज और तोपचांची थाने का भी है। शहर की सड़कों की भी स्थिति बहुत अच्छी नहीं है। यहां भी हाई स्पीड बाइक तेजी से चलती है। साथ में प्रेशर हॉर्न बजाते लड़के जब चलते हैं तो अन्य वाहन चालकों को परेशानी हो जाती है। कभीकभी तो यह भी दुर्घटना का बड़ा कारण बन जाती है। वैसे सूचना मिली है कि बुधवार की रात पुलिस ने पूरे जिले में ड्रंक और ड्राइव चलाया। स्थानीय पुलिस के सायसाथ ट्रैफिक पुलिस भी शराब पीकर वाहन चलाने वालों के खिलाफ अभियान में शामिल थी। अभियान में दर्जनों चालकों को शराब के नशे में वाहन चलाते पकड़ा गया। वैसे, मंगलवार की रात सड़क दुर्घटना में मृत युवकों के परिजनों के क्रंदन से सभी का कलेजा फट रहा था। अतिक्रमण सिर्फ जीटी रोड और ८ लेन सड़क पर ही नहीं है। शहर की सड़कों पर भी अतिक्रमण है।

शहर की सड़कों का हाल तो यह है कि सड़क के दोनों तरफ दुकान लगती हैं। और जो जगह बचती है वहां गाड़ियां खड़ी कर दी जाती है। नतीजा होता है कि पैदल चलने वालों को भी परेशानी होती है। निगम बीचबीच में अतिक्रमण हटाता जरूर है लेकिन फिर दुकानदार अपनी जगह पर काबिज हो जाते हैं। सबसे आश्चर्यजनक बात है कि धनबाद के कोहिनूर मैदान में निगम ने वेंडिंग जोन बनाया, लेकिन वह वेंडिंग जोन अभी तक आबाद नहीं हुआ। दुकानदार गए तो जरूर लेकिन खरीदारों के नहीं जाने से फिर रोड पर दुकान लगाने लगे। जो भी हो लेकिन अब सख्त कार्रवाई की जरूरत है, अन्यथा लोगों की जान इसी तरह से जाती रहेगी।

सत्संगभवन धर्मशाला में रक्तदान शिविर आयोजित

केन्दुआ (सासे) : केंदुआ सत्संग भवन धर्मशाला में गुरुवार को ७वां रक्तदान शिविर मारवाड़ी युवा मंच केन्दुआ शाखा एवं एशियन ब्लाका दास जालान सुपर स्पेशलिस्ट हॉस्पिटल के ब्लड बैंक के संयुक्त तत्वावधान में आयोजन किया गया। इस शिविर का उद्घाटन केंदुआडीह थाना के सब इंस्पेक्टर धीरज कुमार मिश्रा ने किया। मंच के संरक्षक राम गोपाल भुवानिया और वरिष्ठ पत्रकार रमेश तिवारी ने संयुक्त रूप से किया। इस अवसर पर मंच के प्रांतीय उपाध्यक्ष अजय तायल, डॉ सी पी दुबे, सहायक मंत्री विकाश अग्रवाल, निवर्तमान प्रांतीय संयोजक पंकज भुवानिया, मनोज सिंघल मुख्यरुप से उपस्थित थे। ब्लड बैंक के चिकित्सक डॉ एन के सिंह के नेतृत्व में कुल ३१ यूनिट रक्त संग्रह किया गया। शिविर को सफल बनाने में शाखा अध्यक्ष करण अग्रवाल, नवीन खण्डेलवाल, अनिल सिंघल, आशीष सिंघल, हर्ष मित्तल, केशव अग्रवाल, श्रवण बंसल, अजय गर्ग, आकाश मित्तल, आयुष अग्रवाल, गोलू मित्तल, मुकुल केडिया, अरुण मित्तल, तुषार अग्रवाल, गोविंद राउत, राजा चोरसिया, बजरंग अग्रवाल, रमेश रवानी, आदि का सराहनीय योगदान रहा।

अपग्रेडेशन के नाम पर हो सकते हैं ठगी के शिकार

धनबाद (कासं) : कुछ सालों से स्मार्टफोन और सोशल मीडिया बड़ी आबादी के जिंदगी का प्रमुख हिस्सा बन गए है। धीरेधीरे बैंकिंग से लेकर सोशल लाइफ तक सब कुछ ऑनलाइन होता जा रहा है। ऐसे में धोखेबाज भी अपने काम और ठगी के तरीके को ऑनलाइन कर लिया है। आए दिन किसी न किसी के साथ ऑनलाइन ठगी के मामले सामने आते रहते है। धनबाद में फिलहाल बीएसएनएल मोबाइल नंबर के केवाईसी अपग्रेडेशन के नाम पर साइबर फ्रॉड का खेल खूब चल रहा है। बीएसएनएल की तरह हूबहू चिट्ठी बनाकर पहले व्हाट्सएप पर भेजा जाता है। फिर ग्राहकों को कॉल किया जाता है। कहा जाता है कि बीएसएनएल नंबर का केवाईसी अपडेट करा लें, नहीं तो २४ घंटे के अंदर आपका फोन बंद हो जाएगा। बहुत सारे लोग इसके झांसे में आ भी जाते है। यहां तक की बीएसएनएल के अधिकारियों तक को भी फ्रॉड करने वाले नहीं छोड़ते है।

उन तक भी यह मैसेज पहुंचा देते है। धनबाद में आज कई बीएसएनएल के उपभोक्ताओं को इस तरह के संदेश भेजकर उन्हें ठगने की कोशिश की गई है। जो होशियार लोग हैं, वह लोग तो एंटरटेन करने के बजाए बीएसएनएल ऑफिस पहुंच गए। बहुत लोगों को यह जानकारी नहीं है कि केवाईसी अपडेट ऑन लाइन करने का कोई प्रावधान नहीं है। एक उपभोक्ता के अनुसार बीएसएनएल के एक अधिकारी भी गुरुवार को स्वीकार किया कि उनके पास भी ऐसे संदेश आए है। उन्होंने इसकी सूचना बड़े अधिकारियों को दे दी है। ठगी करने वाले पहले व्हाट्सएप पर पत्र भेजते हैं, फिर वीडियो कॉल करते हैं और कहते हैं कि हम जैसा कह रहे हैं, वैसा करते रहिये। आपका केवाईसी अपडेट हो जाएगा। जो लोग इनके झांसे में आ जाएंगे, उनका तो खाता साइबर अपराधी नील कर देंगे। उपभोक्ता ने दि न्यूज पोस्ट को भेजी गई चिट्ठी भी उपलब्ध कराई है और लोगों को सचेत करने का अनुरोध किया है। साइबर अपराधी ठगी के नएनए तरीके को इस्तेमाल कर लोगों को ठग रहे है। धनबाद के बगल जामताड़ा से निकले साइबर अपराधी देश के हर राज्य में फैल गए है। साइबर अपराध की घटनाओं को ताबड़तोड़ अंजाम दे रहे है। झारखंड का देवघर सबसे बड़ा साइबर फ्रॉड का केंद्र बन गया है। गिरिडीह, बोकारो, धनबाद भी पीछे नहीं है।

आश्चर्य की बात है कि जब साइबर अपराधियों के एक तरीके से लोग वाकिफ हो जाते हैं, तो फटाफट दूसरे तरीके अख्तियार कर लेते है। धनबाद में भी साइबर अपराध की लगातार घटनाएं हो रही है। साइबर अपराधियों की समानांतर व्यवस्था चल रही है। अपराधियों का गैंग, कहीं भी बैठकर कहीं से साइबर अपराध की घटना को अंजाम दे रहे है। धनबाद कोयलांचल में तो हर महीने बाहर के प्रदेशों की पुलिस पहुंचती है और लोगों को पकड़कर ले जाती है। बावजूद साइबर ठगी का धंधा बंद होता है। पुलिस लगातार कोशिश कर रही है, लेकिन साइबर अपराधियों की गतिविधियों पर अंकुश नहीं लग रहा है। यह साइबर अपराधी इतने चतुर है कि ठगी करने का हमेशा कुछ ना कुछ नया हथकंडा अपना लेते है। कभी किसी को कुछ बता कर तो कभी किसी को कुछ कह कर झांसे में लेते हैं और फिर अकाउंट खाली कर देते है।

धोखरा में प्रेस प्रतिनिधि का निधन

बलियापुर (सासे) : धोखरा निवासी, समाजसेवी व प्रेस प्रतिनिधि जितेन चंद्र गोराई का निधन गुरुवार को उनके आवास में हो गया। वह ७० वर्ष के थे। काफी दिनों से बीमार चल रहे थे। अपने पीछे ३ पुत्र एवं एक पुत्री समेत भरा पूरा परिवार छोड़ गए हैं। वे भाजपा नेता सुजीत गोराई के पिता थे। निधन की खबर पाकर सांसद दुलू महतो, मासस नेता चंद्रदेव महतो, घनश्याम ग्रोवर, सपन बनर्जी, अजमल खान, संजय रवानी, आशीष गोराई, नवीन कुमार, संजय गोराई आदि ने शोक संवेदना प्रकट किया।

खड़ी हाईवा में स्कॉर्पियो ने मारी टक्कर, 2 घायल

कतरास (सासे) : धनबाद के बरोरा थाना अंतर्गत हीरक रोड पर मुराईडीह कोलियरी कार्यालय के समीप एक खड़ी हाईवा में तेज रफ्तार से आ रही स्कॉर्पियो ने पीछे से टक्कर मार दीटक्कर इतनी तेज थी कि स्कॉर्पियो के परखच्चे उड़ गए। घटना में वाहन के एयर बैग भी खुले दिखे। घटना देर रात की होने के कारण पूरी जानकारी नहीं मिल पाई है। हलांकि यह बताया जा रहा है कि दो घायलों को गम्भीरवस्था में इलाज के लिए धनबाद भेजा गया है। फिलहाल घटना में शामिल दोनों वाहन को पुलिस की निगरानी में रखा गया हैं।

बाइक के धक्के से महिला घायल

केंदुआ (सासे) : केन्दुआडीह थाना क्षेत्र अंतर्गत धनबाद बोकारो मध्य मार्ग एन एच ३२ पर केंदुआपुल हनुमान मंदिर के समीप तड़के सुबह बाईक के धक्के से केंदुआ खटीक पट्टी निवासी शीला देवी पति स्व. संतलाल पासी ४४ गंभीर रूप से घायल हो गई। घटना के सबंध में बताया जाता है कि बाईक संख्या जेएच१०एसी८२०६ जो करकेन्द की ओर से धनबाद की ओर जा रही थी, ठीक उसी समय शीला एवं उनकी पुत्री काजल कुमारी सड़क किनारे खड़ी थी। तभी अनियंत्रित बाईक ने टक्कर मार दिया। जिससे शीला देवी के सिर में गंभीर चोट लगी है। जिसे आनन फानन में उपचार के लिए बाईक सवार व् अन्य लोगों के सहयोग से स्थानीय नर्सिंग होम ले जाया गया । जहां उसकी स्थिति बिगड़ता देख बेहतर उपचार के लिए एसएनएमएमसीएच हॉस्पिटल धनबाद में भर्ती कराया। जहां उनकी हालत चिंताजनक बताई जा रही है। इस सम्बंध में पीड़ित शीला की पुत्री काजल कुमारी ने केंदुआडीह थाना में लिखित शिकायत दी है।

मारपीट में दो महिला घायल

बलियापुर (सासे) : करमाटांड़ में हुई मारपीट में महिला खुशबू देवी व जिरा देवी गंभीर रूप से घायल हो गई। बलियापुर सीएचसी में इलाज किया गया। स्थिति नाजुक देख चिकित्सक ने शहीद निर्मल महतो अस्पताल अस्पताल धनबाद रेफर कर दिया। लिखित शिकायत में करमाटांड़ निवासी गुरु पद रवानी ने कहा कि मेरे पुत्रवधू खुशबू देवी बगल के राशन दुकान में राशन लेने गई थी। वापस आने के क्रम धीरेंद्र रवानी, परमेश्वर रवानी, पंकज रवानी ने साड़ी खींचकर मारपीट करने लगा। रड से खुशबू देवी को मार कर सर फोड़ दिया। बचाने गई बूढ़ी मां जिरा देवी को भी मार कर हाथ तोड़ दिया। खबर मिलने पर सीएचसी में भर्ती किया गया। दोनों की ईलाज धनबाद में चल रहा है। लिखित शिकायत पर बलियापुर पुलिस ने कांड संख्या ८१/२४ के तहत धारा ३२३, ३२४, ३२५, ३४१, ३४२, ३५४, ५०४, ५०६ के तहत मामला दर्ज कर कार्रवाई में पुलिस जुट गई हैं। पुलिस आरोपी को गिरफ्तार के लिए छापामारी कर रही है।

पेयजल को ले ग्रामीणों ने किया नारेबाजी

बलियापुर (सासे) : दुधिया पंचायत के बेड़ा नियामतपुर के ग्रामीणों को गर्मी के इन दिनों पीने का पानी के लिए काफी परेशानियों का सामना करना पड़ता है। करीब १ किलोमीटर दूर से पीने का पानी लाकर लोग प्यास बुझाते हैं। गांव में व्याप्त जल संकट से नाराज ग्रामीणों ने गुरुवार को गांव में प्रदर्शन किया। जिला प्रशासन एवं पीएचईडी के विभाग के विरुद्ध जमकर नारेबाजी की गई। इस दौरान गांव के इमरान खान, शेख वाहीद, सुल्तान खान, सलीम खान, समरुद्दीन खान, इकबाल खान, मन्नान खान, शेख जफरुल, सद्दाम, शाहबाज आदि थे।

असंगठित मजदूरों ने किया चक्का जाम

पुटकी (सासे) : गोपालीचक कोलियरी के अंतर्गत पुटकी १७ नम्बर में चल रहे एसटीजी आउट सोर्सिंग कंपनी के मनमानी एवं तानाशाही रवैए के विरुद्ध गुरुवार को अहले सुबह असंगठित मजदूरो ने चक्का जाम कर दिया। जो पांच घंटे तक जारी रहा। कंपनी के प्रबंधक मधु सिंह एवं वाई के सिंह कार्य स्थल पर पहुंच कर मजदूरों की मांगों के प्रति आश्वस्त करते हुए १५ दिन के अंदर मांग पूरा कर दिया जाएगा। तब जाकर आंदोलन समाप्त हुआ। मजदूरों को प्रमुख मांग में नो वर्क नो पे, सभी को एक समान मजदूरी दी जाय, बीसीसीएल मजदूरों को १३२० रुपए प्रति हाजरी भुगतान करती है जबकि कंपनी किसी को ७०० तो किसी को ५०० रुपए प्रति हाजरी दे रही है। वही मजदूरों को छुट्टी भी दिया जाय, तीस दिन काम लिया जा रहा है। मेडिकल और वीटीसी नहीं कराया गया है। असंगठित मजदूरों की ओर से अजय रवानी ने कहा कि प्रबंधन हम मजदूरों का शोषण कर रही है। बीसीसीएल के वजह से काम बंद हुआ। हम मजदूरों का क्या दोष है। हमारा मजदूरी भुगतान किया जाय। आंदोलनरत मजदूरों में सुनील कुमार सिंह, संजय कुमार, सत्येंद्र कुमार चौहान, पंकज कुमार सिंह, सुरेंद्र कुमार, रूपेश कुमार, भुनेश्वर मंडल, विकाश रवानी, धर्मजीत कुमार एवं अन्य सैकड़ों मजदूर थे।

भारत की सबसे मूल्यवान हस्तियों में दीपिका किशारा व आलिया

मुंबई (ईएमएस) : वित्तीय और जोखिम सलाहकार फर्म क्रॉल की नई रिपोर्ट में भारत की सबसे मूल्यवान हस्तियों की शीर्ष रैंक में बदलाव हुआ है। अभिनेत्री आलिया भट्ट, दीपिका पादुकोण और कियारा आडवाणी भारत की सबसे मूल्यवान हस्तियों की सूची २०२३ में अपनी जगह बनाने वाली शीर्ष तीन अभिनेत्रियां बनी है। रिपोर्ट में आलिया भट्ट को १०१.१ मिलियन के ब्रांड मूल्य के साथ पांचवें स्थान पर और दीपिका को ९६ मिलियन के साथ छठे स्थान पर दिखाया गया है। दोनों अभिनेत्रियों की २०२२ की रैंकिंग में मामूली गिरावट आई है। हालांकि, सबसे बड़ा बदलाव ये हैं कि कियारा आडवाणी, जो २०२२ में १६वें स्थान पर थीं, २०२३ में ६० मिलियन के ब्रांड मूल्य के साथ १२वें स्थान पर पहुँच गई।

स्वच्छता पखवारा का आयोजन

पुटकी (सासे) : सदर प्रखंड धनबाद के समशिखरा पंचायत स्थित पंचायत सचिवालय एवं उत्क्रमित मध्य विद्यालय मुनीडीह बस्ती में गुरुवार को बीसीसीएल डब्ल्यूजे एरिया मुनीडीह के द्वारा स्वच्छता पखवारा का आयोजन किया। कार्यक्रम में धनबाद प्रखंड प्रमुख आरती देवी व समशिखरा पंचायत मुखिया चक्रधर महतो ने ग्रामीणों एवं छात्रछात्राओं के बीच जूट बैग का वितरण किया। मौके पर क्षेत्रीय कार्मिक प्रबंधक विनीता कुमारी, अनुपमा कुमारी, वर्षा कुमारी, उपमुखिया सीता देवी, अमित कुमार, दीपक महतो, ललिता देवी, ललित चौहान, सुमित्रा राय, आशा देवी, लक्ष्मी देवी व अन्य थे।

चैंनई से मजदूर लालू महतो के परीजनों ने घर वापसी की लगाई गुहार

धनबाद (कासं) : धनबाद जिले के टुंडी थाना अंतर्गत राजाभिटा पंचायत के ताराटांड़ निवासी सखीचन्द महतो अपने प्रवासी मजदूर बेटे लालू महतो उम्र लगभग २८ वर्ष के लापता होने की शिकायत धनबाद जिले के स्थानीय टुंडी थाना, घटना स्थल पौषक थाना क्षेत्र बरवाअड्डा थाना, धनबाद जिला प्रशासन आदि संबंधित सभी विभागीय पदाधिकारियों को अपने बेटे के सकुशल घर वापसी के लिए दरदर की ठोकरें खाने के बाद भी अपने बेटे प्रवासी मजदूर लालू महतो का अभी तक चैन्नई से सकुशल घर वापसी नहीं करवाया जा रहा है। प्रवासी मजदूर लालू महतो के पिता और परिजनों के द्वारा शिकायत किया गया है कि स्थानीय थाना के द्वारा रिश्वत लेकर आरोपियों को बचाया जा रहा है।

आरोपियों के द्वारा परीजनों को खुले आम चुनौती दिया जा रहा है कि जो करना है कर लो लालू महतो को घर वापसी नहीं करवाया जाएगा। प्रवासी मजदूर लालू महतो के परीज़न बहुत ही गरीब किसान परिवार से हैं। किसी तरह खेती किसानी

दिहाड़ी मजदूरी कर अपने बेटे को चैन्नई से घर वापसी के लिए संघर्ष कर रहे हैं। पीड़ित के दो छोटेछोटे बच्चे है। परीजनों के द्वारा कहा गया है उनके बेटे लालू महतो रंग पेंट पुताई का काम दिहाड़ी मजदूरी के रूप में काम करके किसी तरह घर परिवार चला रहें थें। स्थानीय गांव ठीकेदार बिचौलियों के द्वारा अच्छे वेतन मजदूरी के लोभ लालच देकर चंगुल में फंसा कर धनबाद जिला अंतर्गत बरवाअड्डा थाना क्षेत्र के भेलाटांड़ खटाल के पास ले गया और वहां से घर भी आने नहीं दिया गया वहीं से ग्रायब करके झारखंड से बाहर दूसरे राज्य चैन्नई ले जाया गया। लालू महतो का मोबाइल भी बंद बता रहा है परीजनों के द्वारा स्थानीय थाना टुंडी बरवाअड्डा थाना और धनबाद जिला प्रशासन से अपने बेटे के घर वापसी के लिए

लगभग छः महीने से घर वापसी के लिए संघर्ष कर रहे हैं लेकिन जिला प्रशासन कुछ मदद नहीं कर रहें है।

आरोप है कि प्रशासन द्वारा रिश्वत लेकर आरोपियों पर कार्रवाई नहीं किया जा रहा है। ग्रामीणों के द्वारा सूचना मिलते ही झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति व झारखंड लोकतांत्रिक क्रांतिकारी मोर्चा के बरवाअड्डा जोन टीम के द्वारा संज्ञान में लेकर लालू महतो के सकुशल घर वापसी के लिए पीड़ित परिजनों से मिलकर परीजनों ढांढस बंधाया। वहीं झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति के धनबाद जिला मीडिया प्रभारी युवा क्रांतिकारी रंजीत कुमार महतो के द्वारा स्थानीय टुंडी थाना बरवाअड्डा थाना धनबाद जिला प्रशासन झारखंड राज्य प्रवासी नियंत्रण कक्ष और चैन्नई के प्रवासी नियंत्रण कक्ष के पदाधिकारियों से संपर्क कर सकुशल घर वापसी के लिए मांग किया गया वहीं कहा गया कि अगर स्थानीय जिला प्रशासन अगर आरोपियों को रिश्वत लेकर बचाया जा रहा है और २४ घंटे के अंदर प्रवासी मजदूर लालू महतो को पता लगा कर सकुशल घर वापसी नहीं करवाया गया तो इसका सारा जवाबदेही जिला प्रशासन राज्य स्तरीय प्रवासी नियंत्रण कक्ष के पदाधिकारियों का होगा। हमारे झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति धनबाद जिला बरवाअड्डा जोन की पूरी टीम लोकतांत्रिक क्रांतिकारी तरीके से आंदोलन के लिए बाध्य होगा। किसी मजदूर किसान का बेटा गायब है लापता हैं और स्थानीय थाना और जिला प्रशासन वातानुकूलित सरकारी कमरों में बैठेबैठे रिश्वत लेकर आरोपियों को बचाया जा रहा है।

मौके पर उपस्थित झारखंडी भाषा खतियान संघर्ष समिति के केंद्रीय उपाध्यक्ष प्रकाश विश्वकर्मा धनबाद जिला मीडिया प्रभारी युवा क्रांतिकारी रंजीत कुमार महतो, केंद्रीय उपाध्यक्ष युवा मोर्चा, छोटा टाइगर, छोटू रजक, धनबाद जिला उपाध्यक्ष युवा मोर्चा प्रेम रजक, केंद्रीय सचिव युवा मोर्चा पप्पु पहाड़ी महतो, बरवाअड्डा जोन प्रवक्ता नीरज शर्मा, टुंडी प्रखंड अध्यक्ष युवा मोर्चा भागीरथ महतो, मनोज महतो, सोनू महतो आदि थे।

डीपीएस में विद्यार्थियों का उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित

अपने लक्ष्य के प्रति रखें दीवानगी, कामयाबी जरूर कदम चूमेगी : डीआईजी झा

बोकारो (ससे): दिल्ली पब्लिक स्कूल (डीपीएस) बोकारो में ११वीं कक्षा (सत्र २०२४-२५) के नामांकित विद्यार्थियों की कक्षाएं गुरुवार को प्रारंभ हुई। पहले दिन प्रेरणा से ओत-प्रोत उन्मुखीकरण कार्यक्रम (ओरिएंटेशन प्रोग्राम) का आयोजन किया गया। विद्यालय के कालिदास कला भवन में आयोजित इस कार्यक्रम में दो अलग-अलग सत्रों में विद्यार्थियों को पढ़ाई व जीवन में आगे बढ़ने के लिए जरूरी बातें बताई गईं। कार्यक्रम के अतिथि वक्ता कोयला क्षेत्र के पुलिस उप महानिरीक्षक (डीआईजी) सुरेन्द्र कुमार झा थे। अपने संबोधन में विद्यार्थियों को प्रेरित करते हुए उन्होंने कहा कि जब हमारे भीतर अपने लक्ष्य के प्रति एक जुनून और दीवानापन होगा, तो निश्चय ही कामयाबी हमारे कदम चूमेगी।

योजनाबद्ध तरीके से अपने ध्येय को पाने का अनवरत प्रयास करते रहें। अपने पहले ही प्रयास में यूपीएससी पास कर आईपीएस अफसर बनने वाले श्री झा ने अपने जीवन के अनुभव साझा किए। कहा कि जब वह छठी कक्षा में थे, उसी समय गंगाजल फिल्म देखकर वह काफी प्रभावित हुए थे। इस फिल्म ने उनका पूरा जीवन बदल दिया। उनके माता-पिता चाहते थे कि वह एक इंजीनियर बनें, लेकिन फिल्म देखने के बाद उनमें एक बड़ा पुलिस अधिकारी बनने, वर्दी पहनने और यूपीएससी के भवन तक पहुंचने की जो दीवानगी जगी, उसी ने आज उन्हें इस मुकाम पर पहुंचाया है।

उन्होंने यह भी कहा कि वह एकलव्य के रूप में अप्रत्यक्ष रूप से डीपीएस बोकारो से प्रेरित रहे हैं। यहां की शैक्षणिक गरिमा जगजाहिर है और इस स्कूल से निकले विद्यार्थी हर क्षेत्र में अपनी सफलता का परचम लहरा रहे हैं।

उन्होंने विद्यार्थियों को सबसे पहले एक अच्छा इंसान बनने की प्रेरणा देते हुए कहा कि एक अच्छा इंसान ही अच्छा विद्यार्थी और अच्छा नागरिक बन सकता है। व्यक्तित्व विकास पर बल देते हुए उन्होंने विद्यार्थियों को आलोचनाओं को सकारात्मक रूप में लेने, नैतिक व भावनात्मक मूल्य बनाए रखने तथा अपने शिक्षकों, अभिभावकों एवं समाज में सभी तबके के लोगों का सदैव सम्मान करने की भी प्रेरणा दी। उन्होंने यह भी कहा कि बच्चे अपना दीपक स्वयं बनें। कुछ ऐसा करें कि समाज के लिए वे प्रेरणा बन सकें, क्योंकि वो ही समाज व राष्ट्र के भविष्य-निर्माता हैं। इस दौरान उन्होंने विद्यार्थियों के बीच जाकर उनके कई प्रश्नों के उत्तर देकर उनकी जिज्ञासाएं शांत कीं और उनका मार्गदर्शन किया। इसके पूर्व, श्री झा का स्वागत पौधा भेंट कर किया गया।

विद्यालय के प्राचार्य डॉ. ए एस गंगवार ने अतिथि वक्ता डीआईजी श्री झा का स्वागत किया तथा विद्यालय की ओर से स्मृति-चिह्न भेंट किया। विद्यार्थियों को संबोधित करते हुए प्राचार्य डॉ. गंगवार ने कहा कि कक्षा ११ उच्च शिक्षा और भविष्य के करियर की दिशा में पहला कदम है। यह अपनी बुद्धिमत्ता, कौशल और क्षमता को विस्तारित करने का अवसर है। उन्होंने विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य के प्रति केंद्रित रहने तथा अपना रास्ता स्वयं तय करने की प्रेरणा दी। यह भी कहा कि यह समय उनके लिए काफी महत्वपूर्ण है, जिसे सोशल मीडिया के चक्कर में पड़कर वे नष्ट न करें। इस दौरान प्राचार्य ने विद्यालय की विश्वस्तरीय शैक्षणिक सुविधाओं तथा उत्कृष्टता की कड़ी में १०वीं-१२वीं बोर्ड, नीट, जेईई एड्वांस्ड, एनआईडी, एनडीए सहित विभिन्न परीक्षाओं की उपलब्धियों पर भी प्रकाश डाला।

इसके पूर्व, प्रथम सत्र में ओरिएंटेशन प्रोग्राम को इस वर्ष की सीबीएसई १२वीं बोर्ड जिला साइंस टॉपर विद्यालय की छात्रा साक्षी प्रिया, कॉमर्स संकाय की स्कूल टॉपर श्रीकृति केडिया, जेईई एडवांस्ड में कैटेगरी रैंक ५१६ पानेवाले छात्र स्पर्श राज एवं रिम्स में अध्ययनरत मेडिकल की छात्रा अस्मिता ने भी संबोधित किया। उन्होंने ११वीं के विद्यार्थियों को सफलता के गुर सिखाए। इस अवसर पर संबंधित शिक्षकों ने विद्यार्थियों को विद्यालय के नियम-कायदों, अनुशासन, शैक्षणिक एवं सह-शैक्षणिक गतिविधियों की विस्तार से जानकारी दी।

दिव्यंगता प्रमाण पत्र 3 दिनों के अंदर निर्गत करना सुनिश्चित करेंगे: डीसी

बोकारो (ससे): गुरुवार को उपायुक्त विजया जाधव के निर्देश पर जिले के शहरी एवं प्रखंड स्तरीय सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों में दिव्यांगता शिविर का आयोजन कल दिनांक २१ जून, २०२४ दिन शुक्रवार से आयोजित किया जाएगा, जिसमें विभिन्न विशेषज्ञ चिकित्साको की भी प्रतिनियुक्ति की गई। साथ ही उक्त क्षेत्र के योग्य लाभुकों को शत प्रतिशत पेंशन स्वीकृति (मुख्यमंत्री राज्य वृद्धावस्था पेंशन, मुख्यमंत्री राज्य निराश्रित महिला सम्मान पेंशन योजना, स्वामी विवेकानंद नि:शक्त स्वावलंबन प्रोत्साहन योजना एवं एचआइवी. आईडीएस पीड़ित व्यक्ति को सहायतार्थ पेंशन) एवं स्वीकृत पेंशनधारियों का जिन्हें किसी कारणवश पेंशन भुगतान नहीं हो पा रहा है का त्रुटि निराकरण से संबंधित आवेदनों का जांचोपरांत नियमानुसार निष्पादन भी किया जाएगा। यह सभी शिविर पूर्वाह्न १०:३० बजे से अपराह्न ४:०० बजे तक प्राप्त आवेदनों का निष्पादन ससमय किया जाएगा। इसमें सभी लाभुकों से अनुरोध किया गया है कि अपने साथ आधार कार्ड, मोबाइल नंबर, फोटोग्राफ, बैंक खाता, दिव्यंगकता प्रमाण पत्र एवं आवासीय प्रमाण पत्र साथ लेकर जरूर आये ताकि एंट्री कराने हेतु यथोचित करवाई की जा सके।

उपायुक्त विजया जाधव ने सिविल सर्जन डॉ दिनेश कुमार को निर्देश दिया है कि प्रस्तावित दिव्यंगकता शिविर में सभी चिकित्सा विशेषज्ञों की प्रतिनियुक्ति करना सुनिश्चित करेंगे। साथ ही निर्धारित तिथिवार व स्थानो पर दिव्यांगजनों की जांच कर दिव्यंगता प्रमाण पत्र तीन दिनों के अंदर निर्गत करना भी सुनिश्चित करेंगे।

उन्होंने सभी प्रतिनियुक्त पदाधिकारी, कर्मियों एवं चिकित्सकों को निर्देश दिया है कि आयोजित शिविर में निश्चित रूप से निर्धारित समय पर उपस्थित होना सुनिश्चित करेंगे।

योग का मतलब जोड़ना है एवं योग मनुष्य को दीर्घायु बनाता है: प्रशिक्षक

बोकारो (ससे): अन्तर्राष्ट्रीय योग दिवस के पूर्व संध्या में आज दिनांक २० जून,२०२४ को बोकारो जिला के आयुष्मान आरोग्य मन्दिर के नोडल पदाधिकारी डा० सेलिना टूडू की अध्यक्षता में सभी आयुष्मान आरोग्य मन्दिर के सभी सी०एच०ओ० को योगासन के बारे में विस्तृत प्रशिक्षण दिया गया, जिसमें सभी सी०एच०ओ० को मानसिक स्वास्थ्य एंव तनाव मुक्ति से सम्बन्धित योग के बारे में बताया गया।

योग प्रशिक्षक स्वपन कुमार, पूनम कुमारी एवं धरनीधर साहिस के द्वारा सभी प्रतिभागियों को बताया गया कि योग का मतलब जोड़ना है एवं योग मनुष्य को दीर्घायु बनाता है साथ ही सभी प्रशिक्षको द्वारा प्रतिभागियों को विभिन्न प्रकार के आसन के बारे में बताया गया जैसे वज्रासन, सिद्धासन,वक्रासन, गौमुखासन, हलासन, नौकासन, मकरासन एवं सवासन आदि के बारे में बताया गया।

योगासन प्रशिक्षण के पश्चात तम्बाकू नियंत्रण कार्यक्रम के जिला परामर्शी मो० असलम के द्वारा सभी प्रतिभागियों को तम्बाकू निषेध पर सामूहिक शपथ दिलाया गया। साथ ही सभी सी०एच०ओ० को बताया गया कि कल योग दिवस के अवसर पर अपने अपने आयुष्मान आरोग्य मन्दिर में योगासन के पश्चात तम्बाकू किसी भी नशीली पदार्थ न लेने हेतु शपथ का आयोजन जरूर करेंगे ताकि बोकारो जिला को नशा मुक्ति जिला की तरफ अग्रसर किया जा सके।

प्रशिक्षण में बोकारो जिला के आयुष्मान आरोग्य मन्दिर के नोडल पदाधिकारी डा० सेलिना टूडू, कार्यक्रम प्रबंधक प्रदीप कुमार सिन्हा, जिला कार्यक्रम सहायक आरती कुमारी मिश्रा आदि उपस्थित थे।

बीएसएल को मिला प्रतिष्ठित ग्रीनटेक इंटरनेशनल ईएचएस अवार्ड

बोकारो (ससे): बोकारो स्टील प्लांट ने एनवायरनमेंट लीडरशिप श्रेणी में प्रतिष्ठित ग्रीनटेक अंतर्राष्ट्रीय पर्यावरण, स्वास्थ्य और सुरक्षा पुरस्कार-२०२४ जीतकर एक बड़ी उपलब्धि हासिल की है. ग्रीनटेक इंटरनेशनल एनवायरनमेंट, हेल्थ एंड सेफ्टी अवार्ड- २०२४ बोकारो स्टील प्लांट द्वारा सस्टेनेबल गोल को प्राप्त करने की दिशा में रेस्पोंसिबल, इनोवेटिव प्रैक्टिसेज तथा नए इनिशिएटिव के लिए दिया गया है.

इस अवार्ड के लिए बीएसएल के महाप्रबन्धक (पर्यावरण), एनपी श्रीवास्तव तथा सहायक महाप्रबन्धक (पर्यावरण) श्री नितेश रंजन द्वारा जूरी के सदस्यों के समक्ष दिनाँक २७ मई २०२४ को प्रस्तुति दी गई थी. ईको-फ्रेंडली ग्रीन स्टील के उत्पादन में बोकारो स्टील प्लांट की गतिशील पहल और स्टील बनाने के दौरान उत्पन्न अपशिष्ट पदार्थों से इको-फ्रेंडली उत्पादों को बनाने के प्रयासों से जूरी के सदस्य काफी प्रभावित हुए.

डीकार्बोनाइजेशन के माध्यम से पर्यावरण-अनुकूल हरित इस्पात का उत्पादन, सर्कुलर इकोनॉमी की अवधारणा के माध्यम से अपशिष्ट पदार्थों को बाहर निकालना और मूल्य सृजन के प्रयास तथा सेल/बीएसएल द्वारा सुरक्षा के लिए प्रोजेक्ट कवच के तहत सह-सांस्कृतिक अभियान की जूरी के सदस्यों के द्वारा अत्यधिक सराहना की गई.

पिछले तीन वर्षों में पार्टिकुलेट मैटर में २९.३३% की कमी और विशिष्ट अपशिष्ट निर्वहन में ८५.०९% की कमी सहित अन्य ऐसे प्रयासों से बोकारो स्टील की प्रणालियाँ व प्रक्रियाएँ अधिक पर्यावरण अनुकूल बनी हैं. बीएसएल द्वारा रेल बैलास्ट, फ्लाई-ऐश एलडी स्लैग ईंट, सीमेंट बनाने में स्लैग का उपयोग, स्लैग से पेवर ब्लॉक और अपशिष्ट उत्पादों से पर्यावरण के अनुकूल सॉइल कंडीशनर सहित पर्यावरण अनुकूल उत्पादों को बनाने में अभिनव पहल की गई है. हाल ही में बोकारो स्टील ने बायो-गैस और खाद में कैंटीन के कचरे के रूपांतरण के लिए संयंत्र के अंदर एक बायो-डाइजेस्टर प्लांट स्थापित किया है. भारत द्वारा सीओपी २६ में दिए गए कमिटमेंट वर्ष २०३० तक अक्षय ऊर्जा के ५०० ग्रीड के महत्वाकांक्षी लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए बोकारो स्टील ने एक और पर्यावरण के अनुकूल उत्पाद तैयार किया है जो अत्यधिक मिश्र धातु जंग प्रतिरोधी ग्रेड उत्कृष्ट संक्षारण प्रतिरोध प्रदर्शित करता है - सौर ऊर्जा के लिए सौर पैनलों के निर्माण के लिए ४ गुना बेहतर है. बीएसएल ने मौसम प्रतिरोधी स्टील आईएस ११५८७ के लिए लाइसेंस भी प्राप्त किया है जो एक आयात विकल्प और मेक इन इंडिया अभियान के रूप में कॉर्टन स्टील के लिए एक स्वदेशी समकक्ष ग्रेड है. ग्लोबल ईएचएस अवार्ड्स २०२४, थाईलैंड के श्रम मंत्री की गरिमामय उपस्थिति में बोकारो स्टील प्लांट को २८ जून २०२४ को बैंकॉक में प्रदान किया जाएगा.

पंचायत ने 40 हजार रुपये लगाई 'इज्जत' की कीमत

आगरा(ईएमएस): बेटी के साथ हुई छेड़छाड़ के बदले पंचायत ने ४० हजार रुपए दिलाने का फरमान सुना दिया। पंचायत और आरोपियों के दवाब में आकर पीड़िता और उसके पिता ने समझौता कर लिया। अब दोनों ने न्याय की गुहार लगाई है। खंदौली थाना क्षेत्र के एक गांव की यह घटना एक माह पूर्व की है। युवती के पिता ने बताया कि उसकी बेटी खेत में शौच के लिए गई थी। पड़ोस में रहने वाले ४५ साल के अधेड़ ने उससे छेड़छाड़ कर दी। पिता ने आरोपी के खिलाफ थाना खंदौली में छेड़छाड़ व पोक्सो की धारा में मुकदमा दर्ज कराया। आरोपी पक्ष दबाव बनाकर पंचायत कराई और समझौता करा दिया। पिता का आरोप है कि आरोपियों की दहशत के चलते समझौता किया था। पैसा नहीं बेटी को इंसाफ चाहिए।

पंचों ने आर्थिक दंड की रकम को सीधे पीड़ित पक्ष को न देकर एक पूर्व प्रधान पर रखवा दिया। पीड़िता के पिता का कहना है कि बेटी ने १६४ के बयान आरोपी के खिलाफ दिए फिर भी आरोपी पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। उन्होंने आरोपी पक्ष व पंचों से कोई रकम नहीं ली है। पीड़िता का कहना है कि गांव में उनके समाज के दो ही परिवार रहते हैं। पुलिस ने आरोपी को बचाव का पूरा समय दिया है। थाना अध्यक्ष खंदौली राजीव कुमार सोलंकी ने बताया कि पीड़िता के पिता की तहरीर पर छेड़छाड़ और पोक्सो में तहत मुकदमा दर्ज किया गया था। जांच मे पीड़िता बालिग पाई गई। जांच मे पोक्सो की धारा हटा दी गई है। छेड़छाड़ के मामले में आरोपी को कोई सजा नहीं मिलने से पीड़ित युवती आहत है। उसने पिता का आरोप है कि बेटी नाबालिग है।

बाल हृदय जांच को लेकर शिविर का आयोजन 24 से

बोकारो (ससे): उपायुक्त विजया जाधव के निर्देश पर आगामी २४ जून से चास प्रखंड के विभिन्न विद्यालयों में श्री सत्य साई संजीवनी अस्पताल के सहयोग से बाल हृदय जांच शिविर का आयोजन किया जाएगा। इसको लेकर सभी तैयारियां पूरी कर ली गई। स्वास्थ्य विभाग से समन्वय स्थापित कर शिविर का आयोजन किया जा रहा है।

शिविर में स्कूली बच्चों का तो जांच होगा ही। इस शिविर में आमजन/अभिभावक भी शून्य से १५ वर्ष के बच्चों का हृदय जांच करवा सकते है। उपायुक्त ने आमजनों/ अभिभावकों से निर्धारित तिथियों को निर्धारित स्थान पर सुबह ०९ बजे से अपराह्न ०४ बजे तक आयोजित शिविर में उपस्थित होकर जांच सुविधा का लाभ उठाने का अपील किया है।

फायर सेफ्टी मैनेजमेंट प्रशिक्षण का आयोजन

बोकारो (ससे): चास नगर निगम स्थित भगवती कॉलोनी चास स्थित फर्स्ट एड प्रशिक्षण संस्थान में फायर सेफ्टी मैनेजमेंट प्रशिक्षण का आयोजन किया गया, जिसका उद्घाटन रेड क्रॉस के प्रशिक्षण पदाधिकारी सह सिविल डिफेंस बोकारो के डिवीजनल वार्डन डॉक्टर एस पी वर्मा एवं चास फायर स्टेशन के पदाधिकारी सुदामा पासवान ने किया*। कार्यक्रम में आग लगने की घटना से बचाव एवं घटना हो जाने पर त्वरित कार्रवाई कर जान माल की सुरक्षा कैसे की जाए इसकी प्रायोगिक प्रशिक्षण दी गई। प्रशिक्षण में ओ एन जी सी के तहत संविदा पर कार्य करने वाले पदाधिकारी एवं कर्मचारी तथा खनन अभियंताओं ने भाग लिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि सिविल डिफेंस बोकारो के डिवीजनल वार्डन तथा रेड क्रॉस के प्रशिक्षण पदाधिकारी डॉ एस पी वर्मा ने आग लगी घटना में होने वाले घायलों को प्राथमिक चिकित्सा देने के गुरु उपायों को बताया।

फायर स्टेशन के पदाधिकारी श्री सुदामा पासवान ने विभिन्न प्रकार की आग लगी घटनाओं को प्रदर्शित कर एवं आग बुझाकर दिखाए एवं सिविल डिफेंस बोकारो के डिप्टी डिवीजनल वार्डन सह रेड क्रॉस के राष्ट्रीय आपदा प्रबंधन के सदस्य डॉक्टर निशांत कुमार ने आग से बचने के उपाय को विस्तृत रूप से बताया।

कार्यक्रम में विशेष रूप से डॉक्टर पूजा, डॉक्टर पदमा एवं फायर स्टेशन चास के श्री विनोद जी एवं राज झा तथा स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण संगठन के गगन बावरी एवं आकाश अस्पताल चास के पदाधिकारी एवं कर्मचारियों ने सहयोग कर आयोजन को सफल बनाय।

डीडीसी ने किया विकास योजनाओं की समीक्षा

डुमरी (ससे): प्रखंड सह अंचल कार्यालय सभागार में गुरूवार को मनरेगा योजना एवं अबुआ आवास निर्माण कार्य प्रगति की समीक्षा हेतु समीक्षात्मक बैठक आयोजित की गई जिसकी अध्यक्षता बीडीओ अन्वेषा ओना ने किया जबकि इस दौरान डीडीसी दीपक कुमार दुबे ने उक्त योजनाओं की कार्य प्रगति की समीक्षा की साथ ही योजनाओं के क्रियान्वयन के लिए आवश्यक दिशा निर्देश दिया। डीडीसी ने बैठक में उपस्थित कर्मियों को अबुआ आवास एवं मनरेगा योजनाओं की कार्य प्रगति की समीक्षा की साथ ही अबुआ आवास निर्माण में जो सुधार की आवश्यकता है उसमें सुधार करने का निर्देश दिया ताकि चलाए जा रहे योजनाओं में प्रगति लाया जा सके। बताया गया कि डुमरी प्रखंड में प्रथम चरण में १६४९ अबुआ आवास का लक्ष्य निर्धारित था। जिसमें १४७८ लाभुको के खाते में प्रथम किस्त की राशि भेजा जा चुका है जबकि २४७ लाभुको के खाते में दूसरी किस्त की राशि भेजी जा चुकी है शेष लाभुको के पिलिंथ लेबल तक का कार्य पूर्ण करवा कर दूसरी किस्त की राशि जारी करने की बात कही गयी।

वहीं दूसरे चरण में ६५५ लाभुको को अबुआ आवास देने हेतु जीओ टैग किया जा चुका है। बैठक में सीओ शशिभूषण वर्मा सहित उपरोक्त योजनाओं से जुड़े सभी कर्मी उपस्थित थे।

सेल ने भारत के सर्वश्रेष्ठ नियोक्ताओं में जगह बनाई

नई दिल्ली (ससे): देश की महारत्न सार्वजनिक इस्पात उत्पादक कंपनी स्टील अथॉरिटी ऑफ इंडिया लिमिटेड (सेल) ने नेशन बिल्डर्स - २०२४ के बीच भारत के सर्वश्रेष्ठ नियोक्ताओं में अपनी जगह बनाई है। सेल को यह मान्यता 'ग्रेट प्लेस टू वर्क इंस्टीट्यूट - इंडिया' द्वारा प्रदान किया गया। यह प्रतिष्ठित पुरस्कार सेल की राष्ट्र-निर्माण के प्रति अटूट प्रतिबद्धता की विरासत और मज़बूत भरोसे की कार्यसंस्कृति बनाने के प्रयासों को मान्यता प्रदान करता है। इससे पहले, सेल ने दिसंबर २०२३ में ग्रेट प्लेस टू वर्क इंस्टीट्यूट, इंडिया द्वारा दिसंबर २०२३ से दिसंबर २०२४ के लिए 'ग्रेट प्लेस टू वर्क' प्रमाणन हासिल किया था।

आज़ादी के बाद, एक देश के तौर पर उभरने के शुरुआती सालों में सार्वजनिक क्षेत्र के तहत सेल के इस्पात संयंत्र राष्ट्र निर्माता रहे। देश को आत्मनिर्भर बनाने और तीव्रगति से औद्योगिकीकरण के लिए बुनियादी ढाँचा बनाने के लिए ५० और ६० के दशक में भारी पूंजीगत व्यय के साथ इस्पात संयंत्र स्थापित किए गए थे। इसके बाद, सेल और भारत में इस्पात क्षेत्र, लगातार आगे बढ़ते हुए दुनिया में दूसरा सबसे बड़ा इस्पात उत्पादक देश बन गया है। भारत की राष्ट्र निर्माण विकास गाथा में, सेल का स्थान गौरवपूर्ण है।

ग्रेट प्लेस टू वर्क - इंडिया ने कठोर मानदंडों को पूरा करने वाले संगठनों को सम्मानित करने के लिए इस महत्वपूर्ण पुरस्कार की स्थापना की है, जिनका मूल्यांकन स्वतंत्र तरीके से किया जाता है। सेल की ओर से यह पुरस्कार सेल के निदेशक (कार्मिक) श्री के के सिंह ने १९ जून, २०२४ को मुंबई में आयोजित एक पुरस्कार समारोह में ग्रहण किया। इस उपलब्धि की सराहना करते हुए सेल के अध्यक्ष श्री अमरेंदु प्रकाश ने कहा, ग्रेट प्लेस टू वर्क -इंडिया द्वारा प्रदान किया गया यह सम्मान हमारे लिए बेहद खुशी और गौरव की बात है। यह पुरस्कार सेल के कार्मिकों की वर्षों की कड़ी मेहनत और समर्पण का प्रमाण है। यह सम्मान हमें और भी बेहतर करने का आत्मविश्वास देता है।

पृष्ठ एक का शेषांश

नीट मामले में छात्रों के हितों से---

सरकार एक हाई लेवल कमेटी का गठन करने जा रही है। जल्द ही दूध का दूध और पानी का पानी हो जाएगा। केंद्रीय शिक्षामंत्री धर्मेंद्र प्रधान ने कहा, एक अलग घटना (बिहार पेपर लीक) का असर उन लाखों छात्रों पर नहीं पड़ना चाहिए, जिन्होंने ईमानदारी से परीक्षा दी। ज्ञात रहे कि नीट एग्जाम में बहुत ज्यादा नंबर दिए जाने के आरोप लगे हैं। इस वजह से इस साल रिकॉर्ड ६७ कैंडिडेट्स ने परफेक्ट स्कोर के साथ टॉप रैंक हासिल किया है। पिछले साल टॉप रैंक पर मात्र दो स्टूडेंट आए थे।

ऐसे में स्टूडेंट्स का आरोप है कि कई कैंडिडेट्स के मार्क्स प्लान के तहत घटाए और बढ़ाए गए हैं। दूसरी ओर, ६ सेंटर में एग्जाम कराने में देरी हुई। समय की बर्बादी की भरपाई के लिए ऐसे सेंटरों में कम से कम १५०० स्टूडेंट्स को ग्रेस मार्क्स भी दिए गए, जो जांच के दायरे में हैं।

पीएम मोदी श्रीनगर में---

फैलाकर समग्र स्वास्थ्य को लोगों के नेतृत्व वाला आंदोलन बनाने का आग्रह करता हूं। पिछले अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस आयोजनों की तरह, प्रधानमंत्री के पत्र से निश्चित रूप से अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के अवसर पर आसपास के पंचायतों, आंगनवाड़ियों और सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों सहित अन्य स्थानों पर योग गतिविधियों में तेजी आएगी। केंद्रीय आयुष राज्य मंत्री (स्वतंत्र प्रभार) प्रतापराव गणपतराव जाधव ने आयुष सचिव वैद्य राजेश कोटेचा और जम्मू-कश्मीर के वरिष्ठ अधिकारियों के साथ आज श्रीनगर में एसकेआईसीसी, जो २१ जून के मुख्य कार्यक्रम का आयोजन स्थल है, का दौरा किया और जमीनी स्तर पर विभिन्न तैयारियों का जायजा लिया। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के मुख्य कार्यक्रम को सभी योग उत्साही लोगों के लिए एक उत्साहवर्धक अनुभव बनाने के लिए तैयारियां जोरों पर हैं।

नीट काउंसलिंग रोकने से---

कलकत्ता और बॉम्बे हाईकोर्ट में नीट यूजी केस में दायर याचिकाओं को क्लब कर दिया है। अब इन पर सुप्रीम कोर्ट में ८ जुलाई को सुनवाई होगी। नेशनल टेस्टिंग एजेंसी ने यह मांग की थी। सुप्रीम कोर्ट में इस मामले की सुनवाई जस्टिस विक्रम नाथ और जस्टिस एसवीएन भट्टी की वेकेशन बेंच कर रही है।

पटना हाई कोर्ट से नीतीश सरकार को झटका सरकारी नौकरियों में 65 फीसदी आरक्षण रद्द

पटना (एजेंसी): बिहार में नीतीश कुमार के नेतृत्व वाली राज्य सरकार को एक बड़ा झटका लगा है. पटना हाई कोर्ट ने २० जून, २०२४ दिन गुरुवार को पिछड़ा वर्ग, अत्यंत पिछड़ा वर्ग, अनुसूचित जाति और अनुसूचित जनजाति के लिए आरक्षण को ५० से प्रतिशत से ६५ प्रतिशत बढ़ाने के विधायिका के फैसले को रद्द कर दिया.

बिहार पदों और सेवाओं में रिक्तियों का आरक्षण संशोधन विधेयक और बिहार आरक्षण (शैक्षणिक संस्थानों में प्रवेश) संशोधन विधेयक, २०२३ को हाल ही में शीतकालीन सत्र के दौरान राज्य विधानमंडल द्वारा मंजूरी दे दी गई थी, जब सरकार ने राज्य के ऐतिहासिक जाति सर्वेक्षण का विधानसभा में रिपोर्ट पेश किया था.

दोनों विधेयकों में अनुसूचित जाति के लिए कोटा १६ से बढ़ाकर २० प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति के लिए १ से २ प्रतिशत, अत्यंत पिछड़ी जाति के लिए १८ से २५ प्रतिशत और अन्य पिछड़ा वर्ग के लिए कोटा बढ़ाने की मांग की गई है. जाति-आधारित आरक्षण को ५० से बढ़ाकर ६५ प्रतिशत करने के लिए १५ से १८ प्रतिशत किया गया था.

राज्य में जाति सर्वेक्षण के निष्कर्षों के आधार पर सरकार ने अनुसूचित जाति के लिए कोटा बढ़ाकर २० फीसदी, अनुसूचित जनजाति के लिए २ फीसदी, अत्यंत पिछड़ा वर्ग के लिए २५ फीसदी और अन्य पिछड़ा वर्ग से १८ फीसदी के लिए कोटा बढ़ा दिया.

लोस में चुनावी हार के कारण तलाशने में जुटीं भाजपा की 40 टीमें

लखनऊ(ईएमएस): हाल ही में हुए लोकसभा चुनाव में भाजपा को बड़ा झटका लगा है। उत्तर प्रदेश से पार्टी का ८ प्रतिशत वोट चोरी हो गया है। इतनी बड़ी चोरी कैसे हो गई इसकी तलाश के लिए भाजपा ने ४० टीमें गठित कीं है। वोटों की चोरी के कारण तलाशे जा रहे हैं। साथ में घर के भेदियों की भी खोज हो रही है।

कहा जा रहा है कि स्थानीय मीडिया की नाराजगी भी भाजपा के लिए हार का एक बड़ा कारण रहा है। इस पर भी विचार किया जा रहा ताकि हार के लिए जिम्मेदारी तय की जा सके। पार्टी की एसटीएफ की ४० टीमें ८० लोकसभा क्षेत्रों में जांच में जुटी हैं। हार की समीक्षा में कार्यकर्ताओं का गुस्सा और गुबार फूट रहा है।

नीतीश कैबिनेट की बैठक में 22 एजेंडों पर लगी मुहर, 4 और शहरों में शुरू होगी मेट्रो सेवा

पटना (एजेंसी): बिहार के सियासी गलियारे से एक और बड़ी खबर आ रही है कि नीतीश कैबिनेट की बैठक खत्म हो गयी है. इस मीटिंग में कुल २२ एजेंडों पर मुहर लगी है. इस मीटिंग में जनता के हित में कई बड़े फैसले लिए गये हैं. मुख्यमंत्री नीतीश कुमार की अध्यक्षता में कैबिनेट की बैठक में गया, मुजफ्फरपुर, भागलपुर और दरभंगा में मेट्रो रेल चलाने की सैद्धांतिक स्वीकृति मिली है.

सबसे महत्वपूर्ण निर्णय यह है कि राज्य सरकार ने चार शहरों में परिचालन का निर्णय लिया है. मुजफ्फरपुर, गया, दरभंगा और भागलपुर में मेट्रो चलाई जाएगी. २०% राज्य और २० केंद्र का सहयोग रहेगा, बाकी फाइनेंशियल इंस्टीट्यूट पैसा लगाएगी. राज्य में खेल पर विशेष ध्यान दिया जायेगा. प्रत्येक पंचायत में खेल क्लब का गठन किया जाएगा. राज्य सरकार समय- समय पर उसे सहयोग करेगी. खेल विभाग में ९८ पद पर बहाली भी होगी.

सरकार ने खेल विभाग में ५८ पदों के सृजन पर अपनी स्वीकृति दे दी है. वहीं राज्य के हर पंचायत में खेल क्लब बनाने का निर्णय सरकार ने लिया है. बिहार सरकार इन क्लबों से राज्य के खिलाड़ियों को जोड़ेगी. नियुक्त को लेकर सरकार ने नया फैसला लिया है. आयोग अब ऑफलाइन और ऑनलाइन एग्जाम लेगा।

मौसम को देखते हुए डीजल अनुदान के लिए १५० करोड़ स्वीकृत किया जाएगा. ७५ रुपए प्रति लीटर अनुदान दिया जाएगा. एक एकड़ में १० लीटर दिया जाएगा. पीपीपी मोड पर गरीबों के लिए आवास बनाया जाएगा. जो शहरों में फुटपाथ और नालों के किनारे रहते है, उनको घर उपलब्ध कराया जाएगा.

मुख्यमंत्री निजी नलकूप योजना के तहत ३५ हजार नल लगाए जाएंगे. बिहार वाहन चालक सेवा शर्त अधिनियम २०२४ स्वीकृति हुई है. ४६ पॉलिटेक्निक कॉलेज के लिए ८० करोड़ की योजना है. वहीं ३८ कॉलेज के लिए ६८ करोड़ ५४ लाख रुपये मशीन कंप्यूटर ऑस्कर के लिए स्वीकृति प्रदान की गई है.

भाजपा नेताओं पर आक्रामक सीता सोरेन क्यों ढूंढ़ रही घर वापसी की राह?

दुमका (ससे) : दुमका लोकसभा सीट से चुनाव हारने के बाद सीता सोरेन की आक्रामकता क्या यूं ही है? या इसके पीछे कोई कहानी है। क्या वह भाजपा को टाटा बाय-बाय करने का बहाना ढूंढ रही है? क्या अगर घर वापसी की वह सोच रही है तो झारखंड मुक्ति मोर्चा इसे स्वीकार करेगा? निर्णय अब देवर का नहीं, बल्कि गोतनी का होगा। कल्पना सोरेन के हाथ अभी झारखंड मुक्ति मोर्चा की कमान है। सीता सोरेन अभी नाला से झारखंड मुक्ति मोर्चा के टिकट पर विधायक है।

वैसे सीता सोरेन के भाजपा नेताओं पर लगाए गए आरोपों के बाद संथाल की राजनीति गर्म हो गई है। भाजपा भी इस मामले में चुप है। वह भी समय का इंतजार कर रही है। सीता सोरेन के निशाने पर पूर्व मंत्री लुईस मरांडी और पूर्व सांसद सुनील सोरेन है। सारठ के विधायक रणधीर सिंह भी उनके टारगेट पर है। लेकिन संथाल से यह संकेत आ रहे हैं कि सीता सोरेन फिर घर वापसी कर सकती है। वैसे दुमका से चुनाव जीते नलिन सोरेन तो यह कहकर बच निकलते हैं कि वापसी का निर्णय तो पार्टी सुप्रीमो ही कर सकते है। वैसे भाजपा ने लोकसभा चुनाव के पहले सोरेन परिवार में तोड़फोड़ कर सीता सोरेन को भाजपा में पार्टी का प्रत्याशी बनाया।

उसके पहले भाजपा दुमका से सुनील सोरेन को अपना प्रत्याशी घोषित कर चुकी थी। प्रत्याशी घोषित होने के बाद सुनील सोरेन का नाम वापस ले लिया गया और सीता सोरेन को दुमका से भाजपा ने प्रत्याशी बनाया। इसके बाद सवाल उठने लगे थे कि दुमका से झारखंड मुक्ति मोर्चा का प्रत्याशी कौन होगा। कई तरह की चर्चाएं चलने लगी थी। बात यह भी होने लगी थी कि हेमंत सोरेन जेल से ही दुमका लोकसभा का चुनाव लड़ेंगे, लेकिन झारखंड मुक्ति मोर्चा ने अपने विधायक नलिन सोरेन पर दांव खेला और यह दावं फिट बैठ गया और नलिन सोरेन चुनाव जीत गए। अब विधानसभा चुनाव भी सामने है। वैसे जामा विधानसभा क्षेत्र में सीता सोरेन को लीड मिली है। यह चर्चा तेज हो गई है कि हो सकता है कि सीता सोरेन फिर झामुमो में लौट जाए। लेकिन अभी यह सब कयास है। वैसे, दुमका सीट हारने के बाद भाजपा में सिर फुटौव्वल चल रही है। लोकसभा चुनाव परिणाम आने के बाद संथाल परगना प्रमंडल में भाजपा में घमासान थमने का नाम नहीं ले रहा है। प्रमंडल की तीन सीट में से एक मात्र सीट गोड्डा पर भाजपा की जीत हुई है। राजमहल के साथ-साथ दुमका सीट पर पराजय का सामना करना पड़ा है। चुनाव परिणाम के बाद सबसे ज्यादा चर्चा में दुमका है। एक तरफ तो समीक्षा बैठक में कार्यकर्ताओं ने जमकर बबाल काटा, वहीं पार्टी प्रत्याशी रही सीता सोरेन ने जिला से लेकर प्रदेश स्तर के नेताओं पर गंभीर आरोप लगा कर माहौल को और गर्म कर दिया।

दुमका लोकसभा के जामा विधानसभा पर सबकी नजर थी। क्योंकि झामुमो के टिकट पर सीता सोरेन तीन बार यहां से विधायक है। पार्टी और परिवार से बगावत कर भाजपा के टिकट पर लोक सभा चुनाव लड़ने वाली सीता सोरेन को खुद उनके विधानसभा क्षेत्र की जनता ने बहुत अधिक समर्थन नहीं दिया. भाजपा को जामा से बढ़त मिली जरूर लेकिन अपेक्षा के अनुरूप नहीं रही। २०१९ में यहाँ से भाजपा को लगभग ८ हजार की लीड मिली थी, जो इस बार घटकर ६ हजार ७०० पर आ गई। झामुमो प्रत्याशी नलीन सोरेन शिकारीपाड़ा से ७ टर्म के विधायक थे। इस बार जब पार्टी ने उन्हें लोकसभा का प्रत्याशी बनाया तो शिकारीपाड़ा के मतदाताओं ने नलीन सोरेन का दिल खोल कर स्वागत किया। यही वजह रही कि २०१९ में जब शिबू सोरेन प्रत्याशी थे, तो शिकारीपाड़ा से झामुमो को ८८४० मतों की बढ़त थी, जो इस बार २५ हजार के पार पहुँच गई।

2025 के चुनाव में जनता महागठबंधन को जीरो पर आउट करेगी: नित्यानन्द राय

पटना (एजेंसी): केंद्रीय गृह राज्य मंत्री नित्यानंद राय ने गुरुवार को कहा कि बिहार की जनता २०२५ के चुनाव में महागठबंधन को जीरो पर आउट करेगी. बिहार के लोगों ने इसका मन बना लिया है. प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की सरकार में फिर से केंद्रीय गृह राज्य मंत्री बनने के बाद पहली बार पटना पहुंचने पर राय का पटना हवाई अड्डे पर भाजपा के नेताओं और कार्यकर्ताओं ने जोरदार स्वागत किया.

पत्रकारों से चर्चा करते हुए राय ने कहा है कि बिहार में होने वाले २०२५ विधानसभा चुनाव में जनता परिवारवादी और भ्रष्टाचारी नेता तेजस्वी यादव को समाप्त कर देगी. बिहार के लोगों ने इस बारे में मन बना लिया है. उन्होंने आगे कहा, बिहार में मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के नेतृत्व में और पीएम मोदी के आशीर्वाद से यहां विकास की धारा बह रही है. बिहारवासियों के मन में आज पीएम मोदी हैं और पीएम मोदी के मन में देश और बिहार का एक-एक वासी है.

केंद्रीय मंत्री ने कहा कि बुधवार को बिहार की धरती पर नालंदा यूनिवर्सिटी के कार्यक्रम में सम्मिलित होकर पीएम मोदी ने देश और दुनिया को बता दिया कि उन्हें बिहार से कितना प्रेम है. राजद नेता तेजस्वी यादव को निशाने पर लेते हुए उन्होंने कहा कि २०२५ के चुनाव में परिवारवादी और भ्रष्टाचारी तेजस्वी यादव को समाप्त कर देंगे. राजनीति के अखाड़े में उन्हें धूल चटा देंगे. महागठबंधन को जीरो पर आउट करा देंगे.

उन्होंने कानून व्यवस्था से जुड़े एक प्रश्न के उत्तर में कहा कि आज नीतीश सरकार में अपराधियों को संरक्षण नहीं, सजा दी जाती है.

पटना में फिल्म फेस्टिवल का आयोजन, डिप्टी सीएम विजय सिन्हा ने किया शुभारंभ

पटना (एजेंसी): बिहार फिल्म महोत्सव का शुभारंभ १९ जून, २०२४ दिन बुधवार को उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने दीप जलाकर किया। २३ जून तक चलने वाले इस फिल्म समारोह में देश-विदेश की कई ख्याति लाभ फिल्मों का प्रदर्शन किया जाएगा और सिने प्रेमियों को शानदार फिल्मों को देखने का अवसर मिलेगा. रीजेंट सिनेमा में फिल्म का शुभारंभ बेहद शानदार तरीके से किया गया.

इस मौके पर उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिंह के साथ कला संस्कृति एवं युवा विभाग बिहार की अपर मुख्य सचिव हरजोत कौर भी उपस्थित हुई. साइन यात्रा और हाउस आफ वैरायटी की तरफ से आयोजित पटना सिने फेस्टा फिल्म प्रेमियों के लिए बेहद शानदार फिल्मों का कलेक्शन इस फिल्म उत्सव में लेकर आई है.

इस मौके पर विशिष्ट अतिथि के तौर पर निलंजन रीता दत्त राष्ट्रीय पुरस्कार प्राप्त फिल्म निर्देशक, विकास कुमार अभिनेता, निर्माता और डायलॉग कोच ,अजय ब्रह्मात्मज फिल्म समीक्षक और सुमन सिंह फेस्टिवल डायरेक्टर ने इस शानदार आयोजन के लिए सभी के सहयोग की सराहना की. फिल्म महोत्सव की शुरुआत गुजराती भाषा के फिल्म का जो कयो कलर से हुई और दूसरे फिल्म हिंदी की गुलमोहर दिखाई गईं.पटना सिने फेस्टा को बिहार के कला संस्कृति एवं युवा विभाग भारतीय फिल्म और टेलिविज़न संस्थान पुणे राष्ट्रीय फिल्म विकास निगम और राष्ट्रीय फिल्म संग्रहालय समेत फिल्म क्रिटिक गिल्ड ने भी सहयोग किया है. इस आयोजन की खासियत इसे समझा जा सकता है कि इसमें क्यूरेटेड कई ऐसी फिल्में शामिल हुई है जो अब तक किसी थिएटर में रिलीज नहीं हुई है, लेकिन कंस मामी इफी भूषण टोरंटो जैसे प्रतिष्ठित फेस्टिवल में वर्ल्ड प्रीमियर हो चुका है.

यूपी में चुनाव खत्म होते ही धड़ाधड़ पुलिस एनकाउंटर लखनऊ समेत कई इलाकों में गरजा बुलडोजर

लखनऊ (एजेंसी): यूपी में लोकसभा चुनाव पूरी तरह से निष्पक्ष और भयमुक्त हुए है. चुनाव के नतीजे आने के बाद विभिन्न पर्व-त्योहारों को सकुशल संपन्न कराने वाली यूपी पुलिस का इकबाल एक बार फिर बुलंदी पर है. अपराध और आपराधियों के खिलाफ मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ के जीरो टॉलरेंस की नीति को अमलीजामा पहनाने में जुटी यूपी पुलिस की निगाहें अपराधियों के खिलाफ दोबारा टेढ़ी हो चुकी हैं. पिछले १५ दिनों की रिपोर्ट पर नजर डाले तो बदमाशों के खिलाफ चली ७९ कार्रवाई से अपराधियों के पांव एक बार फिर उखड़ने शुरू हो गये हैं.

४ जून से १९ जून के बीच हुए इन मुठभेड़ों में दो बदमाशों को ढेर किया जा चुका है. जबकि ९६ अपराधी घायल हुए हैं. एनकाउंटर के दौरान यूपी पुलिस को अबतक १३९ बदमाशों को गिरफ्तार करने में कामयाबी मिली है. हालांकि इन मुठभेड़ों के दौरान सात पुलिसकर्मी भी घायल हुए हैं.

प्रदेश के पुलिस महानिदेशक प्रशांत कुमार के अनुसार राज्य स्तर के चिह्नित ६८ माफिया गैंग के सदस्य और सहयोगियों के खिलाफ कार्रवाई लगातार जारी है. अबतक विभिन्न माफिया गिरोह के ९ सदस्यों के खिलाफ विभिन्न स्तरों पर कार्रवाई की गई है. इनमें से तीन की गिरफ्तारी की जा चुकी है. जबकि १ के खिलाफ गैंगेस्टर और २ के खिलाफ गुंडा एक्ट के तहत कार्रवाई की गई है.

इसके अलावा भदोही के माफिया विजय मिश्रा के खिलाफ पेंडिग केसीस में न्यायालय में सघन पैरवी करते हुए बीते १३ जून को उसे सजा दिलाई जा चुकी है. वहीं मुजफ्फरनगर का ५० हजार का फरार इनामिया माफिया विनय त्यागी उर्फ टिंकू को गिरफ्तार करने में पुलिस को बड़ी सफलता मिली है.

कानपुर के सऊद अख्तर गैंग का शातिर अपराधी आसिफ उर्फ पप्पू स्मार्ट पर भी २५ हजार का इनाम घोषित था. जिसे पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया है. यही नहीं अंबेडकरन नगर के अजय सिंह उर्फ सिपाही गैंग के सक्रिय सदस्य उत्कर्ष सिंह को भी एसटीएफ ने दबोच लिया है. उत्कर्ष पर भी २५ हजार का इनाम घोषित था. इसके साथ ही मुजफ्फरनगर के कुख्यात माफिया सुशील उर्फ मूंछ की ४.४५७० हेक्टेयर जमीन को कुर्क किया गया है, जिसकी कीमत साढ़े चार करोड़ रुपए आंकी गई है. वहीं पुलिस मुठभेड़ में जौनपुर के कुख्यात प्रशांत सिंह उर्फ प्रिंस और मुजफ्फरनगर के दुर्दांत निलेश राय को ढेर किया जा चुका है.

राम मंदिर के गर्भगृह में भौतिक सुख का अभाव मुख्य पुजारी ने कहा, नहीं समझ रहा कोई

अयोध्या(एजेंसी): बीती २२ जनवरी को प्रभु राम अपने भव्य महल में विराजमान हुए हैं. इस बीच रोजाना लाखों लोगों ने दर्शन किए. लेकिन अब पुजारी को कई तरह की दिक्कत का सामना भी करना पड़ रहा है. लगभग १००० करोड़ रुपए की लागत से बने राम मंदिर के गर्भगृह में कई तकनीकी की कमी है जिससे पुजारी परेशान दिख रहे हैं .

गर्भगृह में रामलला को स्नान अभिषेक कराने के बाद जो पानी फर्श पर गिरता है, उसकी निकासी की व्यवस्था नहीं की गई. इतना ही नहीं, राम मंदिर के मुख्य पुजारी ने इस पर कई सारे सवाल भी खड़े किए हैं. राम मंदिर के मुख्य पुजारी का कहना है कि जब प्रभु राम का श्रृंगार होता है उसके पहले प्रतिदिन उन्हें स्नान कराया जाता है, जिसमें सरयू जल के अलावा उन्हें मधु पर्क से भी स्नान कराया जाता है. मधु पर्क में दूध, दही, घी, शहद मिला होता है. इससे स्नान करने के बाद उन्हें फिर सरयू जल से नहलाया जाता है. स्नान के बाद जो पानी फर्श पर गिरता है उसे कहां ले जाया जाए यह बड़ा सवाल है. क्योंकि गर्भगृह में पानी निकालने का साधन नहीं है . मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने कहा कि गर्भगृह तो अच्छा बना है. लेकिन, भौतिक सुविधा नहीं है. इतना ही नहीं चिलचिलाती धूप और गर्मी में प्रभु राम कूलर के सहारे हैं. ऐसी भी खराब पड़ा है. श्री राम जन्मभूमि मंदिर के मुख्य पुजारी आचार्य सत्येंद्र दास ने बताया कि प्रभु राम की सेवा आराधना बहुत अच्छे से की जा रही है. सुबह ४:०० से प्रभु राम की आराधना शुरू हो जाती है, जिसमें सबसे पहले प्रभु राम को नींद से जगाया जाता है. सरयू जल से स्नान कराया जाता है. इसके बाद नवीन वस्त्र धारण कराए जाते हैं. फिर मंगला आरती के बाद श्रद्धालुओं के लिए दर्शन शुरू होते हैं. आचार्य सत्येंद्र दास ने बताया कि गर्भ गृह में पुजारी को कई तरह की समस्या भी आ रही है. गर्भ गृह का निर्माण करने से पहले सोचना चाहिए था कि गर्मी ठंडी और बरसात में पानी निकालने का रास्ता नहीं है. अयोध्या के और भी मंदिर में गर्भगृह हैं, उसको देखना चाहिए था. उसके जल का निकास कैसा है और कैसे उन मंदिरों की व्यवस्था है. -उ लगना है मंदिर में कैसे लगेगी. लेकिन, निर्माण कार्य में लगे लोग यह सब नहीं सोचे. गर्भ गृह का निर्माण अच्छा किया गया है. लेकिन भौतिक सुविधा नहीं है. मंदिर में -उ भी लगाया गया है, लेकिन वह चल नहीं रहा है. यहां कितनी समस्या हो रही है, ये कोई सोचता. गर्मी में कूलर के सहारे प्रभु राम की सेवा हो रही है.

वहीं, राम मंदिर के कार्यालय प्रभारी प्रकाश गुप्ता ने बताया कि गर्भ गृह का निर्माण बहुत अच्छे से किया गया है.

यूपी में कांग्रेस नेता की गाड़ी से उतारा गया हूटर कट गया दो हजार का चालान

देवरिया (ईएमएस): उत्तर प्रदेश के देवरिया में कांग्रेस के प्रवक्ता और लोकसभा प्रत्याशी रहे अखिलेश प्रताप सिंह की कार को पुलिस ने रोक कर हूटर उतार लिया और दो हजार रुपये का चालान कट दिया। इसके बाद कांग्रेस नेता ने भी पुलिस से सरकारी गाड़ी के दस्तावेज और ड्राइवर का लाइसेंस दिखाने को कह दिया, तब पुलिस कागजात नहीं दिखा सकी।

जानकारी के अनुसार, देवरिया लोकसभा से कांग्रेस के प्रत्याशी रहे सिंह कार्यकर्ताओं के साथ क्षेत्र का दौरा करके वापस लौट रहे थे। उनके साथ उनकी दो गाड़ियां चल रही थीं। तभी देवरिया कोतवाली पुलिस जांच अभियान चला रही थी। पुलिस ने बीच रास्ते में कांग्रेस नेता की एक गाड़ी को रोक कर कार्रवाई में जुट गई।

देश के खिलाफ साजिश है पेपर लीक मामले : अखिलेश यादव

लखनऊ(ईएमएस): उत्तर प्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री और समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव ने नीट मामले के बाद यूजीसी नेट की परीक्षा रद्द किये जाने को लेकर अब मोदी सरकार को घेरे में लिया है। सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने सोशल मीडिया के प्लेटफार्म एक्स पर पोस्ट करते हुए लिखा, की भाजपा के राज में पेपर माफिया एक के बाद एक, हर एग्जाम में धांधली कर रहा है। यह देश के खिलाफ किसी की बड़ी साजिश भी हो सकती है।

गौतरलब हो, १८ जून को ही यूजीसी नेट की परीक्षा हुई थी। यूजीसी को गृह मंत्रालय से पेपर आउट होने का इनपुट मिला, जिसके बाद परीक्षा रद्द कर दी गई है। यह परीक्षा भी नेशनल टेस्टिंग एजेंसी यानी एनटीए ही कराती है। इसी के साथ केंद्र सरकार ने मामले की जांच सीबीआई को सौंप दी है। नीट पर चल रहे विवाद के बीच यूजीसी-नेट की परीक्षा रद्द होने पर अखिलेश यादव ने एक्स पर लिखा, और अब गड़बड़ी की खबर के बाद यूजीसी-नेट की परीक्षा भी रद्द कर दी गई है। भाजपा के राज में पेपर माफिया एक के बाद एक, हर एग्जाम में धांधली कर रहा है। यह देश के खिलाफ किसी की बड़ी साजिश भी हो सकती है।

अखिलेश यादव आगे लिखते हैं कि गहरी बात समझिए। पुलिस भर्ती की परीक्षा का पेपर लीक होगा तो कानून-व्यवस्था नहीं सुधरेगी। जिससे देश-प्रदेश में अशांति और अस्थिरता बनी रहेगी। नीट की परीक्षा में घपला होगा तो ईमानदार लोग डॉक्टर नहीं बन पाएंगे और देश के लोगों के इलाज के लिए भविष्य में डॉक्टरों की कमी और बढ़ जाएगी और बेईमान लोग, जनता के जीवन के लिए खतरा बन जाएंगे।

इस प्रकार अखिलेश ने देश के खिलाफ साजिश रचने जेसा बताया है पेपर लीक मामले को और इसके लिए सीधे तौर पर मोदी सरकार को जिम्मेदार ठहराया है।

सैकड़ों छात्र हो रहे डिप्रेशन का शिकार

पटना (ईएमएस): नीट का कथित फर्जीवाड़ा कई होनहार छात्रों के लिए मुसीबत बन गया है। उनकी कठिन मेहनत का नतीजा फर्जीवाड़ा निकल रहा है। इससे परेशान छात्र डिप्रेशन में जा रहे हैं। दो-तीन साल से नीट की तैयारी में जुटे छात्रों का पढ़ाई से मन उचट रहा है। कई बच्चों ने पढ़ाई बंद कर दी है। सीबीएसई के काउंसलिंग सेल पर ज्यादातर मामलों में किशोरों का आत्मविश्वास बुरी तरह खत्म होना सामने आ रहा है।

नीट पेपर लीक मामले में एक्शन, 3 अधिकारी निलंबित

पटना (एजेंसी): बिहार के उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा ने नीट पेपर लीक मामले को लेकर प्रेस कॉन्फ्रेंस किया. इस दौरान उन्होंने बताया कि पटना में एनएचएआई गेस्ट हाउस मामले में लापरवाही और तथ्य को छुपाने के आरोप में तीन अधिकारी को निलंबित किया गया है. जिनमें प्रदीप कुमार, जूनियर इंजीनियर धर्मेंद्र कुमार धर्मकांत और अधीक्षण अभियंता उमेश राय को निलंबित किया गया है. डिप्टी सीएम विजय सिन्हा ने कहा कि पथ निर्माण विभाग से जुड़ा एनएचएआई का मामला है मेरे संज्ञान में आने पर मुख्य सचिव के साथ सभी वरीय पदाधिकारी के साथ जानकारी प्राप्त की, किसके आदेश पर उन्हें ठहरने का अवसर मिला था. उन्होंने कहा कि १ मई को रात ९ बजकर ७ मिनट पर फोन किया गया कि सिकंदर कुमार यादवेंदु के लिए कमरा दिया जाए. तेजस्वी यादव के सचिव प्रीतम कुमार के मोबाइल नंबर से गेस्ट हाउस के कर्मी प्रदीप कुमार के मोबाइल पर किया गया.

कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
राष्ट्रीय उच्च पथ प्रमंडल, धनबाद – 826001
(संयुक्त कार्यालय भवन परिसर)

दूरभाष : 0326-2313339 e-mail: eenhdhanbad-jhr@nic.in

सूचना

एतद् द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि राष्ट्रीय उच्च पथ संख्या 218 (मुर्गातल, पश्चिम बंगाल सीमा से चन्दनकियारी, डिगवाडीह होते हुए बैंक मोड़, धनबाद) के कि. मी. 39.00 में दामोदर नदी पर पर स्थित बिरसा पुल की मरम्मति पूर्ण होने तक उक्त पुल से होकर तत्काल प्रभाव से सभी प्रकार के भारी वाहनों का एवं दिनांक 26.05.2024 से सभी प्रकार के वाहनों के आवागमन को पूर्णतः बन्द किया गया है तथा आवागमन हेतु तीन अद्द वैकल्पिक मार्गों के चयन की व्यवस्था दी गयी है । इन वैकल्पिक मार्गों के अतिरिक्त दो पहिया एवं छोटे वाहनों के आवागमन हेतु निम्न वैकल्पिक मार्गों का भी उपयोग किया जा सकता है :–

1. मानपुर चौक से भोजुडीह होते हुए गोरीग्राम के निकट दामोदर नदी पर बने पुल को पार कर सुदामडीह रीभर साईड होते हुए मोहलबनी, झरिया, धनबाद अपने गंतव्य की ओर जा सकते है ।
2. सीतानाला से अमलाबाद होते हुए दामोदर नदी पर बने बिनोद पुल डुमरी घाट को पार कर भौरा झरिया, धनबाद अपने गंतव्य की ओर जा सकते है ।

पुनः वापसी हेतु उपर्युक्त मार्गों का उपयोग किया जा सकता है ।

असुविधा के लिए खेद है ।

कार्यपालक अभियन्ता,
राश्ट्रीय उच्च पथ प्रमण्डल,
धनबाद ।

PR.NO.327087 Road(24-25):D

झारखण्ड सरकार
अधीक्षक, उपकारा तेनुघाट, जिला– बोकारो का कार्यालय
गृह कारा एवं आपदा प्रबन्धन विभाग

Telephone - 06549- 230654
email - sj-tenughat@jharkhandmail.gov.in, tenughatjail.123@gmail.com

ई0–निविदा सूचना

1.	कारा का नाम	उपकारा, तेनुघाट, जिला– बोकारो
2.	विषय	कारा में संसीमित बंदियों के भोजनादी की व्यवस्था हेतु विभिन्न प्रकार के खाद्यान्नों, हरी सब्जियों, आलु, चीनी, फलों एवं अन्य विविध सामग्रियों के क्रय/आपूर्ति के निमित्त ई0–निविदा का आमंत्रण। तृतीय त्रैमासिक निविदा (दिनांक–01.07.2024 से 30.09.2024 तक)
3.	निविदा प्रपत्र का मूल्य (Non-refundable) Online स्वीकार की जायेगी।	₹ 5,000.00 (पाँच हजार) मात्र।
4.	वेबसाईट पर निविदा प्रपत्र के उपलब्धता की तिथि एवं समय।	तिथि–08.07.2024 के पूर्वाहन् 10:00 बजे से 12.07.2024 के अपराहन् 4:00 बजे तक।
5.	निविदा Online upload करने की तिथि	तिथि–08.07.2024 के पूर्वाहन् 10:00 बजे से 12.07.2024 के अपराहन् 4:00 बजे तक।
6.	आपूर्ति हेतु खाद्य सामग्रियों का नमूना (Sample) जमा करने की तिथि।	तिथि–13.07.2024 के पूर्वाहन् 10:00 बजे से 14.07.2024 के अपराह्न 4:00 बजे तक कार्यालय अवधि में जमा करना होगा।
7.	अग्रधन राशि (EMD) (₹2500 /–से अधिक होने पर) जमा करने की तिथि।	तिथि–13.07.2024 के पूर्वाहन् 10:00 बजे से 14.07.2024 के अपराह्न 4:00 बजे तक कार्यालय अवधि में जमा करना होगा।
8.	निविदा खुलने की तिथि/समय/स्थान	तिथि–15.07.2024 को पूर्वाह्न 11:00 बजे अद्योहस्ताक्षरी के कार्यालय कक्ष में अनुमण्डल पदाधिकारी, बेरमो तेनुघाट की उपस्थिति में।

1. उपरोक्त निविदा झारखण्ड सरकार की वेबसाईट https://jharkhandtenders.gov.in पर केवल e-Tender के माध्यम से प्राप्त/स्वीकृत की जायेगी।
2. निविदा शुल्क एवं अग्रधन की राशि केवल Online ही स्वीकार की जायेगी।
3. अतिरिक्त सूचना प्राप्ति हेतु अधीक्षक, केन्द्रीय कारा, हजारीबाग के कार्यालय में कार्यालय अवधि में सम्पर्क स्थापित किया जा सकता है। e-Tender को online upload करने से संबंधित जानकारी हेतु कार्यालय अवधि में Helpline No. 9430342752 से सम्पर्क किया जा सकता है।

अधीक्षक,
उपकारा, तेनुघाट

PR 327064 Home(24-25)#D

झारखण्ड औद्योगिक क्षेत्र विकास प्राधिकार

बोकारो प्रक्षेत्र, बियाडा भवन, बालीडीह, बी0एस0सिटी0–14
Gmail.mdbiadabokaro@gmail.com

प्रेस विज्ञप्ति

एतद द्वारा सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि इकाई सर्वश्री पारस इन्फ्राटेक, प्लॉट सं0 I/C-63, रकवा 0.48 एकड़ बोकारो औधोगिक क्षेत्र, बी0एस0सिटी–14 के स्वत्वाधिकारी श्री महेश कुमार जैन, पिता श्याम सुन्दर लाल जैन, बैंक मोड़ फुसरो के अस्वस्थ रहने के कारण इकाई को सुचारू रूप से नहीं चला पा रहे है। इकाई को सुचारू रूप से चलाने हेतु श्रीमती सरोज पाण्डेय, पति श्री अखिलेश कुमार पाण्डेय को 90% (प्रतिशत) एवं श्री अनिल कुमार, पिता स्व0 कन्हैया राय को 10% (प्रतिशत) नाम मे साझेदारी परिवर्तन किया जाना है।

अतः उपर्युक्त प्रस्ताव पर किसी को कोई आपत्ति हो तो सुचना प्रकाशन की तिथि से 10 दिनों के अन्दर अपना लिखित आपत्ति दर्ज करे अन्यथा निर्धारित समय अवधि–समाप्ति के उपरान्त प्रस्ताव पर अग्रेत्तर कार्रवाई की जायेगी।

क्षेत्रीय निदेशक,
जियाडा, बोकारो प्रक्षेत्र

PR 327116 Industries(24-25)#D

झारखण्ड सरकार
ग्रामीण कार्य विभाग
कार्यपालक अभियंता का कार्यालय
कम्बाईण्ड बिल्डिग, प्रथम तल्ला, एल०सी० रोड, धनबाद

ई–अति अल्पकालीन पुनर्निविदा आमंत्रण सूचना

ई–निविदा संख्या:- 03/RWD/DHANBAD/24-25 दिनांक :- 18.06.2024

कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, धनबाद द्वारा निम्न विवरण के अनुसार e-procurement पद्धति से निविदा आमंत्रित की जाती है।

क्र0 सं0	आईडेन्टी फिकेशन संख्या/पैकेज संख्या	प्रखण्ड	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (लाख में)		कार्य समाप्ति की अवधि	टेण्डर कॉल संख्या
				अंक में	अक्षर में		
7	RWD/DHN/DMF T/46	टुण्डी	फतेहपुर पगला मोड़ साहेबगंज पथ से श्मशान घाट तक निर्माण कार्य (लम्बाई–1.30 कि0मी0)	99.664	निनानवे लाख छियासठ हजार चार सौ	06 माह	प्रथम

2. वेबसाईट में निविदा प्रकाशन की तिथिः– 25.6.2024
3. ई–निविदा प्राप्ति की अंतिम तिथि एवं समयः– 04.06.2024 अपराह्न 5.00 बजे तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समयः– 06.07.2024 अपराह्न 3.30 बजे।
5. निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पताः– कार्यपालक अभियंता, ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, धनबाद, पिन– 826001
6. ई–निविदा प्रकोष्ठ का दूरभाष सं0– 0326–3554757

विस्तृत जानकारी के लिए वेबसाईट jharkhandtenders.gov.in में देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता
ग्रामीण कार्य विभाग, कार्य प्रमण्डल, धनबाद

PR 327096 Rural Work Department(24-25).D

कार्यालय
जिला शिक्षा अधीक्षक, गिरिडीह

समाहरणालय भवन (तृतीय तल्ला) पपरवाटांड, गिरिडीह – 815301
ई-मेलः-mdmgiridih@gmail.com

आवश्यक सूचना

विभागीय संकल्प संख्या 283 दिनांक 28.02.2024, निदेशक, प्राथमिक शिक्षा, स्कूली शिक्षा एवं साक्षरता विभाग, झारखण्ड राँची के पत्रांक 15/मु.–1–114/2019 165/विधि दिनांक 15.03. 2024 एवं पत्रांक 15/मु.–1–114/2019–771 दिनांक 13.06.2024 तथा संशोधित पत्र के पत्रांक 15/मु.–1–114/2019–786 दिनांक 19.06.2024 के आलोक में एतद् द्वारा संबंधित अभ्यर्थी जिला के प्रकाशित विज्ञापन सं0–04/2015 (कक्षा 6–8 पारा एवं गैर–पारा) एवं विज्ञापन सं0– 05/2015 (कक्षा 01–05 पारा एवं गैर–पारा) के अन्तर्गत आवेदन किया गया है, को सूचित किया जाता है कि उपरोक्त विज्ञापन के विरुद्ध वर्ष 2015 एवं 2019 के अंतिम काउंसिलिंग के उपरान्त शेष रह गये रिक्त पदों के विरुद्ध नियुक्ति हेतु अपना आवेदन पारा एवं गैर–पारा कोटि, विकल्प का उल्लेख एवं पूर्व में किये गये आवेदन का साक्ष्य सहित (स्पीड पोस्ट/निबंधित डाक की छायाप्रति) एवं माननीय उच्च न्यायालय झारखण्ड राँची द्वारा एल0पी0ए0 सं0 203/2022 एवं अन्य में संबद्ध तथा सदृश्य वादों में पारित न्यायादेश की प्रति एवं सभी वांछित मूल प्रमाण पत्र यथा शैक्षणिक/प्रशैक्षणिक / टेट / जाति/ आवासीय एवं अन्य, के साथ कार्यालय अवधि में दिनांक 22.06.2024 से 22.07.2024 तक पता जिला शिक्षा अधीक्षक कार्यालय समाहरणालय भवन (तृतीय तल्ला) पपरवाटांड, गिरिडीह को स्पीड पोस्ट अथवा निबंधित डाक के माध्यम से उपलब्ध कराया जाय। निर्धारित अवधि के उपरान्त प्राप्त आवेदनों अथवा दावों पर विचार नहीं किया जायेगा।

आवश्यक सूचना जिला के अधिकारिक बेवसाईट www.giridih.nic.in पर देखी जा सकती है।

जिला शिक्षा अधीक्षक, गिरिडीह।
उपायुक्त, गिरिडीह।

PR.NO.326969 School Education and Literacy(24-25):D

जिला समादेष्टा का कार्यालय, झारखण्ड गृह रक्षा वाहिनी, बोकारो

आवश्यक सूचना

बोकारो जिला के वैसे सभी गृह रक्षक जिनका बॉण्ड समाप्त हो चुका है को सूचित किया जाता है कि उपायुक्त–सह–अध्यक्ष पुनः नामांकन समिति निदेशानुसार पुनः नामांकन की प्रखण्डवार तिथि एवं पुनः नामांकन केन्द्र का निर्धारण निम्न प्रकार से किया गया हैः–

क्र0 सं0	प्रखण्ड/क्षेत्र	पुनः नामांकन किये जाने वाले गृह रक्षकों की संख्या	पुनः नामांकन की निर्धारित तिथि	पुनः नामांकन केन्द्र
1	चास	10	22.06.2024	जिला समादेष्टा कार्यालय, झारखण्ड गृह रक्षा वाहिनी, बोकारो
2	गोमिया	01		
3	बेरमो	03		
4	कसमार	01		
5	जरीडीह	05		
6	चन्दनकियारी	02		
7	पेटरवार	04		
8	नावाडीह	0		
9	शहरी पुरुष	19		
10	शहरी महिला	04		

पुनः नामांकन हेतु गृह रक्षक पूरी वर्दी में अपने प्रखण्ड हेतु निर्धारित तिथि को जिला समादेष्टा कार्यालय, बोकारो में प्रातः 10:00 बजे निम्नलिखित प्रमाण पत्रों की मूल प्रति के साथ प्रमाण पत्र जाँच हेतु उपस्थित होगे। इसके साथ ही उक्त प्रमाणपत्रों की एक–एक छायाप्रति कार्यालय में पुनः नामांकन प्रपत्र के साथ जमा करेंगे ।

1. शैक्षणिक प्रमाण–पत्र
2. नव नामांकन प्रमाण–पत्र
3. ऑनलाईन आवासीय एवं जाति प्रमाण–पत्र
4. आधार कार्ड
5. 03 (तीन) रंगीन पासपोर्ट साईज फोटो

ह0/–
जिला समादेष्टा
झारखण्ड गृह रक्षा वाहिनी, बोकारो।

PR.NO.327110 Home(24-25):D

उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी का न्यायालय, बोकारो।

नोटिस

प्रथम पक्ष

Authorised Officer
AADHAR HOUSING FINANCE LTD,
Office No. 5, 3rd Floor, Shree Sai Towers,
Burdman Compound Lalpur, Ranchi

द्वितीय पक्ष

1. Abdul Rahim 2. Norani Bibi
1. Karim Khan 4. Jani Shekh
All At. - Pindrajora, Narayanpur, Chas, Bokaro

सूचना बनाम् द्वितीय पक्ष

एतद् द्वारा सूचित किया जाता है कि Authorised Officer, Aadhar Housing Finance Ltd. Office No. 5, 3rd Floor, Shree Sai Towers Burdman Compound Lalpur, Ranchi ने आपके विरूद्ध धारा–14 (1) एवं (2) सरफेसी एक्ट–2002 के अन्तर्गत बैंक में गिरवी रखे गए सम्पत्ति/भूमि/निर्मित संरचना पर दखल–कब्जा प्राप्त करने के लिए उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी, बोकारो के न्यायालय में **सरफेसी वाद सं0–44/2023–24** दायर किया गया है जिसकी सुनवाई हेतु दिनांक– **01.09. 2023** को निर्धारित करते हुए स्वंय अथवा अधिवक्ता के माध्यम से न्यायालय में उपस्थित होकर अपने बचाव में किसी भी तरह के कागजात या माननीय् न्यायालय का कोई स्थगन आदेश प्रस्तुत करने हेतु नोटिस के माध्यम से निदेशित किया गया था, किन्तु आप सुनवाई के दौरान पुकार पर अनुपस्थित रहे। आपको अन्तिम रूप से सूचित किया जाता है कि अगली निर्धारित तिथि **09.07.2024** को निश्चित रूप से उपस्थित होकर अपना पक्ष रखें अन्यथा एक पक्षीय आदेश पारित कर दिया जाएगा।

प्रभारी पदाधिकारी
विधि शाखा, बोकारो।

PR 327022 (Law) 24-25 (D)

कार्यपालक अभियन्ता का कार्यालय,
भवन निर्माण विभाग, भवन प्रमंडल, गिरिडीह

e-mail:- eebcdgiridih@gmail.com

पत्रांक दिनांक /

अल्पकालिन निविदा आमंत्रण सूचना सं0 – 08/2024–25

1. विज्ञापनदाता का पदनाम एवं पता :– कार्यपालक अभियन्ता, भवन प्रमंडल, गिरिडीह।
2. परिमाण विपत्र की ब्रिकी की तिथि एवं समय :– 28–06–2024 को 1.00 बजे अपराहन् तक।
3. निविदा प्राप्ति की तिथि एवं समय :– 29–06–2024 को 3.00 बजे अपराहन् तक।
4. निविदा खोलने की तिथि एवं समय :– 29–06–2024 को 3.30 बजे अपराहन्।
5. परिमाण विपत्र बिकी का स्थान :– 1. कार्यपालक अभियन्ता, भवन प्रमंडल, गिरिडीह। 2. अधीक्षण अभियन्ता, भवन अंचल, हजारीबाग।
6. निविदा प्राप्ति का स्थान :– 1. टाउन थाना, गिरिडीह। 2. अधीक्षण अभियन्ता, भवन अंचल, हजारीबाग।
7. कार्य की विवरणी :–

क्रमाक	कार्य का नाम	प्राक्कलित राशि (रूपये में)	परिमाण विपत्र का मूल्य (रूपये में)	अग्रधन राशि (रूपये में)	कार्य समाप्ति की अवधि।
1	गिरिडीह जिलान्तर्गत मार्गीय सुविधा केन्द्र, बगोदर की मरम्मति, रंग–रोगन एवं जीर्णोद्धार कार्य।	49,92,650=00	5,000=00	1,00,000=00	06 माह।

निविदा की शर्तें को कार्यालय सूचना पट्ट पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियन्ता,
भवन प्रमंडल, गिरिडीह।

PR.NO.327058 Building(24-25):D

झारखण्ड सरकार
पेयजल एवं स्वच्छता विभाग,पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल चास

ई–प्रोक्योरमेंट सूचना
(तृतीय आमंत्रण)

अति–अल्पकालीन निविदा सूचना संख्या–(चास) 15/2023–24 दिनांक 20.06.2024

1. Name of Work - Replacement of Rotten Riser Pipe of 32mm dia, connecting rod, C.I.Cylinders (whichever required) etc Under D.W. & S. Division Chas on Turn Key Basis for the year 2023-24

ग्रुप संख्या	ड्रिल्ड न0 की संख्या	प्राक्कलित राशि (लाख में)	अग्रधन की राशि (लाख में)	परिमाण विपत्र का मुल्य (रूपये में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि
CHAS/ RRP -1	126 अदद	18.38870	0.37000	5000.00	45 दिन
CKY/ RRP -2	102 अदद	14.88608	0.30000	2500.00	45 दिन

2	वेबसाइट पर निविदा प्रकाशन की तिथि	दिनांक 20.06.2024 को 04.00 बजे अपराहन
3	निविदा प्राप्ति (ऑन लाईन बिडींग) की अन्तिम तिथि एवं समय	दिनांक 27.06.2024 को 04.00 बजे अपराहन तक
4	सरकार के सचिव, सूचना प्रौद्योगिकी एवं ई– गवर्नेस, झारखण्ड मंत्रालय, के ज्ञापांक 120 दिनांक 03.10.2023 के आलोक में विपत्र का मूल्य एवं अग्रधन की राशि Online जमा करने की अन्तिम तिथि एवं समय	दिनांक 27.06.2024 को 04.00 बजे अपराहन तक
5	तकनीकी बिड खोलने की तिथि एवं समय	दिनांक 28.06.2024 को 04.00 बजे अपराहन
6	तकनीकी बिड खोलने का स्थान	अधीक्षण अभियंता का कार्यालय पेयजल एवं स्वच्छता अंचल धनबाद।
7	निविदा आमंत्रित करने वाले पदाधिकारी का नाम एवं पदनाम	कार्यपालक अभियंता, पेयजल एवं स्वच्छता प्रमण्डल चास।
8	निविदा आमंत्रित करने वाले कार्यालय का टेलीफोन नम्बर – 06542–265810	
9	ई–प्रोक्योरमेंट सेल का हेल्पलाईन नं0 – 0651–2480345	

नोट :–(1) केवल ई निविदा ही स्वीकार किये जायेंगे।
(2) प्राक्कलित राशि घट–बढ़ सकती है, तद्नुसार परिमाण विपत्र में अंकित प्राक्कलित राशि के आधार पर अग्रधन की राशि एवं परिमाण विपत्र का मूल्य मान्य होगा।
(3) अधिक जानकारी के लिए वेबसाईट http://jharkhandtender.gov.in पर देखा जा सकता है।

कार्यपालक अभियंता
पेयजल एवं स्वच्छता प्रमंडल चास

PR 327007 Drinking Water and Sanitation(24-25).D

कार्यालय फुसरो नगर परिषद (बोकारो)।

आम सूचना

फुसरो बस पड़ाव की बन्दोस्ती हेतु निलामी की सूचना।

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है, कि फुसरो नगर परिषद क्षेत्र अन्तर्गत स्थित बस पड़ाव का बन्दोबस्ती 01.07. 2024 से 31.03.2025 तक के लिए की जानी है। इस हेतु निलामी मे भाग लेने वाले सभी इच्छुक एजेन्सी/व्यक्ति आदि को सूचित किया जाता है कि दिनांक–28.06.2024 को फुसरो नगर परिषद के बस पड़ाव के निलामी प्रशासक –सह–कार्यपालक पदाधिकारी फुसरो नगर परिषद के कक्ष में अपराहन् 02:00 बजे से किया जायेगा। निलामी की शर्त फुसरो नगर परिषद के कार्यालय के सूचना पट्ट पर देखी जा सकती है।

फुसरो बस पड़ाव की बन्दोस्ती हेतु निलामी की विवरणी।

क0सं0	क्षेत्र	स्थान का नाम	2024–25 हेतु न्यूनतम बन्दोबस्ती राषि एवं 10 प्रतिषत बढ़ोतरी तथा 18 प्रतिषत GST Including	डाक में भाग लेने हेतु सुरक्षित राषि का 10 प्रतिषत	अवधि
01	फुसरो नगर परिषद।	01. फुसरो बस पड़ाव फुसरो–चन्द्रपुरा स्टैण्ड सहित। 02. फुसरो–बोकारो बस पड़ाव (फुसरो ओवर ब्रीज के पास)। 03. फुसरो–गोमिया स्टैण्ड। 04. फुसरो–नावाडीह स्टैण्ड।	20,98,851.00	2,09,885.00	01 जुलाई 2024 से 31.03.2025 तक।

प्रशासक
–सह– कार्यपालक पदाधिकारी, फुसरो नगर परिषद।

PR 326971 Urban Development(24-25)D

कार्यालय, जिला उद्यान पदाधिकारी, जामताड़ा
किसान भाईयों के लिए आवश्यक सूचना

वर्त्तमान वित्तीय वर्श 2024–25 में केन्द्र प्रायोजित इन्टीग्रेटेड डेवलपमेंट ऑफ हॉटीकल्चर (MIDH) राश्ट्रीय बागवानी मिशन के कार्यान्वयन हेतु जामताड़ा जिलान्तर्गत निम्नवत् लक्ष्य प्राप्त हुआ हैः–

क्र0	कार्य अवयव	लक्ष्य
1	ड्रेगन फ्रुट Dragon Fruit (Kamalam) (int. Drip system and trells)	02 हेक्टेयर
2	ड्रेगन फ्रुट Dragon Fruit (Kamalam) (without integration)	01 हेक्टेयर
3	स्ट्रोबेरी की खेती (ड्रीप एवं मलचार पद्धति के साथ) Strawberry (int. Drip and Mulching system)	05 हेक्टेयर
4	स्ट्रोबेरी की खेती Strawberry-without integration	01 हेक्टेयर
5	केला Banana(TC) (int. Drip system)	05 हेक्टेयर
6	केला Banana(TC) (without integration)	01 हेक्टेयर
7	पपीता की खेती (ड्रीप पद्धति के साथ) Papaya (int. Drip system)	05 हेक्टेयर
8	पपीता की खेती Papaya- without integration	01 हेक्टेयर
9	आम की खेती Mango Farming	30 हेक्टेयर
10	नीबू की खेती Lime Farming	08 हेक्टेयर
11	चीकू की खेती Sapota Farming	05 हेक्टेयर
12	अमरूद की खेती Guava Farming	10 हेक्टेयर
13	अनार की खेती Pomegranate Farming	05 हेक्टेयर
14	आँवला की खेती Aonla Farming	02 हेक्टेयर
15	बेल की खेती Bael Farming	02 हेक्टेयर
16	लिची की खेती Litchi Farming	02 हेक्टेयर
17	कटहल की खेती Jack Fruit Farming	01 हेक्टेयर
18	सब्जी की खेती Hyd vegetable Farming	60 हेक्टेयर
	कटिंग फूलों की खेती Cut Flower Farming	20 हेक्टेयर
19	बल्बस फूलों की खेती Bulbulous Flower Farming	20 हेक्टेयर
20	लूस फूलों की खेती Loose Flower Farming	20 हेक्टेयर
21	मिर्चा/अदरख की खेती Spices and Rhizomatic Spices Farming	30 हेक्टेयर
22	GREEN HOUSE N.V.S TUBLAR STRUCTURE	1000 sqm
23	शेडनेट (टुयब्लर स्ट्राक्चर) Shadenet (Tubular Structure)	5000 sqm
24	प्लास्टीक मालचिंग Plastic Mulching	100 हेक्टेयर
25	पक्षी रोधक जाल Anti Bird /Anti Hail Nets	20000 sqm
26	उच्च मूल्य की सब्जी खेती पॉली/शेडनेट के अन्दर Cost of planting material of high value Vegetable grown in poly house/shadenet house	2000 sqm
27	उच्च मूल्य का जरबेरा एवं कारनेशन फूल खेती पॉली/शेडनेट के अन्दर Cost of planting material of high value Carnation & Gerbera grown in poly house/shadenet house	2000 sqm
28	उच्च मूल्य की गुलाब एवं लिलियम फूल खेती पॉली/शेडनेट के अन्दर Cost of planting material of high value Rose & Lilum grown in poly house/shadenet house	2000 sqm
29	वर्मी बेड HDPE Vermibed	30 यूनिट
30	पैक हाउस Pack House	15 यूनिट
31	PHM- Eveporation/low energy cool chamber - 8MT	4 यूनिट
32	PHM- Low cost onion structure – 25 MT	05 यूनिट
33	Marketing Infrstructure Static Mobile Vending Cart/platform with cool chamber	02 यूनिट
34	राज्यस्तरीय प्रशिक्षण Within State Training	360 कृषक
35	अन्तराज्कीय प्रशिक्षण Outside state Training	50 कृषक
36	अन्तराज्कीय परिभ्रमण Outside state Exposure	50 कृषक

योजना के विभिन्न कार्य अवयवों का लाभ लेने हेतु इच्छुक कृशक/स्वयं सहायता समूह/किसान उत्पादन संगठन अपना आवेदन पंचायती राज संस्था के मुखिया/जनप्रतिनिधि/जिला परिशद् सदस्य से अनुशंसा कराकर आवश्यक कागजात यथा पहचान पत्र/आधार कार्ड/बैंक पासबुक विवरणी/मोबाईल नम्बर/जमीन का रकबा/जमीन का खाता संख्या/प्लॉट नम्बर के साथ पूर्ण विवरणी संलग्न करते हुए विहित आवेदन पत्र दिनांक– 29.06.2024 के संध्या 5:00 बजे तक जिला उद्यान कार्यालय, संयुक्त जिला कृशि भवन, सर्खेलडीह, जामताड़ा में जमा कर सकते है।

लाभुक का चयन प्रखण्डवार निर्धारित लक्ष्य अनुरूप पहले आओ–पहले पाओ के आधार पर किया जाएगा।

अनुदान हेतु लाभुक चयन के लिए निम्नाकित न्यूनतम मापदण्ड आवश्यक होगा–

1. आवेदन पूर्ण रुप से भरा हुआ एवं सभी कागजात के साथ होगा।
2. आवेदन की प्रति मुखिया अथवा अन्य जनप्रतिनिधि द्वारा अनुशंसित किया हुआ हो।
3. आवेदक द्वारा पूर्व के तीन वर्शो तक इस योजना कार्य अवयव का लाभ नहीं लिया हो–
4. आवेदक के पास पर्याप्त भूमि हो तथा सब्जी, फल, फूल आदि की खेती करते हों।
5. कृशक अंशदान की राशि व्यय करने को इच्छुक हो।
6. आवेदक द्वारा स्वयं हस्ताक्षरित आवेदन ही स्वीकार्य होगा।
7. लाभुक के चयन में FPO/प्रगतिशील कृशकों/महिला स्वयं सहायता समूह/सिंचाई सुविधा युक्त कृशकों को प्राथमिकता दी जाएगी तथा लाभुकों के चयन में टोकन प्रणाली को अपनाते हुए सूची संधारित की जाएगी।
8. वित्तीय वर्श 2024–25 में राज्य द्वारा लक्ष्य अनुरुप लाभुक का चयन किया जाएगा।
9. विशेष परिस्थिति में किसी भी आवेदन को स्वीकृत करना या रद्द करने का अधिकार जिला उद्यान पदाधिकारी, जामताड़ा के पास सुरक्षित रहेगा, जिसपर किसी भी प्रकार का दावा मान्य नहीं होगा।

योजना की विस्तृत जानकारी जिला उद्यान कार्यालय, संयुक्त जिला कृषि भवन, सर्खेलडीह, जामताड़ा से प्राप्त की जा सकती है। आवेदन का प्रारूप atmajamtara.org.in पर उपलब्ध है।

जिला उद्यान पदाधिकारी,
जामताड़ा।

PR 327085 Agriculture,Animal Husbandry And Co-operative Department(24-25)D

उपायुक्त–सह–जिला दण्डाधिकारी का कार्यालय, बोकारो।
(जिला योजना शाखा)

(REQUEST OF PROPOSAL)

अति अल्पकालीन निविदा सूचना

सरकारी विद्यालयों में Bench desk अधिष्ठापन हेतु प्रतिष्ठित संस्थानो से सशर्त निविदा आमंत्रित की जाती है। इच्छुक संस्थान दिनांक 01.07.2024 के अपराहन 01:00 बजे तक अधोहस्ताक्षरी के कार्यालय में निविदा जमा कर सकते है। इस संबंध में विस्तृत विवरणी बोकारो जिला के वेबसाईट http:/bokaro.nic.in पर देखा जा सकता है।

जिला योजना पदाधिकारी,
बोकारो।

PR 327146 (Planning and Development) 24-25 (D)

Office of the Executive Engineer
Soil Investigation Division, Advance Planning,

Road Construction Department, Nirupan Bhawan, Doranda, Ranchi-834002.
Ph. No. 0651-2490406Email :eercdapsid-jir@nic.in

Letter No- **Corrigendum** Ranchi, Date-

NOTICE INVITING e-Tender No : RCD/SID/AP/RAN/04/2023-24
P.R.No-326285 Road (24-25) :D

Name of Work- Consultancy Services for Preparation of Detailed Project Report (DPR) for Construction of Bridge/High Level Bridge over Bokaro River at Lalpania More to Gomia including Approach Road, Land Acquisition proposal Ownership details all complete as per latest guidelines, Resettlement and Rehabilitation Proposal, Forest Diversion Proposal and Proposal of Utility Shifting in details etc. As required by the Department(if any) under Bokaro District in the State of Jharkhand. (Tetative Length 200.m.)

It is hereby notified that the Tender **Last Date/Time of Bid Submission** has been change of the above mentioned Tender bearing P.R.No-326285 Road (24-25) :D Hence the following changes have been made-

In place of: Last Date/Time of Bid Submission 23.06.2024
To be read as: Last Date/Time of Bid Submission 22.06.2024

Yours Faithfully
Sd./-, (Ravi Shankar Pravakar)
Executive Engineer, Soil Investigation Division, Advance Planning, Road Construction Department, Ranchi

PR 327057 Road(24-25)#D

झारखण्ड सरकार
कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग,
जिला गव्य विकास कार्यालय, गिरिडीह।

पशुपालकों के लिए आवश्यक सूचना

गिरिडीह जिला के वैसे दुधारू मवेशी पशुपालक जो कृषि, पशुपालन एवं सहकारिता विभाग (गव्य प्रभाग) द्वारा संचालित मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना/गव्य विकास द्वारा संचालित दुधारू मवेशी वितरण कार्यक्रम से लाभान्वित अथवा स्वयं से दुधारू पशुओं को पालते है, को किसान क्रेडिट कार्ड (KCC) से आच्छादित करने हेतु, इच्छुक पशुपालकों से आवेदन पत्र दिनांक 05/06/2024 से आमंत्रित किये जाते है। पशुपालकों को दुधारू पशुओं के लिए चारा–दाना, पशु आहार, हरा चारा उत्पादन एवं अन्य कार्य हेतु बैंकों द्वारा कार्यशील पूंजी के रूप में KCC की सुविधा प्रदत्त की जायेगी।

KCC से संबंधित आवेदन पत्र दिनांक 05/06/2024 तक कार्यालय में निःशुल्क उपलब्ध है। आवेदन पत्र प्राप्त करने हेतु इच्छुक पशुपालक मूल आधार कार्ड के साथ स्वयं कार्यालय पहुँच कर आवेदन पत्र प्राप्त करेंगे एवं यथाशीघ्र पूर्ण रूप से भरे हुए आवेदन पत्र, कार्यालय में समर्पित करे ताकि आवेदन पत्र जांचोपरांत बैंकों को ससमय अग्रसारित किया जा सके।

दुधारू पशुपालकों के लिए KCC अन्तर्गत कार्यकारी पूंजी की अधिकतम सीमा निम्नवत है:–

क्र०	इकाई	कार्यकारी पूंजी (रू०)
1	02 दुधारू मवेशी हेतु	45,000.00
2	05 दुधारू मवेशी हेतु	1,25,000.00
3	10 दुधारू मवेशी हेतु	2,25,000.00

विशेष जानकारी के लिए कार्य दिवस में जिला गव्य विकास कार्यालय, गिरिडीह से संपर्क किया जा सकता है।

जिला गव्य विकास पदाधिकारी, गिरिडीह।

PR 326995 Animal Husbandry(24-25)D

सीएम चंपाई के मास्टर स्ट्रोक से सियासी फिजा में कास्ट सर्वे की गूंज

रांची (ससे): सीएम चंपाई सोरेन के मास्टर स्ट्रोक से कास्ट सर्वे सियासी फिंजा में गुंजने लगा है. कार्मिक विभाग की देख-रेख में कास्ट सर्वे होगा.

इंडिया गठबंधन इस विधेयक पर भाजपा को घेरता रहा है कि भाजपा नौंवी अनुसूची में डालकर इसे कानूनन संरक्षित नहीं करना चाहती है. अब जब राज्य में विधानसभा के चुनाव होने हैं, मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने भी फरवरी में एक्स पर पोस्ट किया था कि जिसकी जितनी संख्या, उतनी ही उसे हिस्सेदारी मिलेगी, झारखंड इसके लिए तैयार है. राज्य सरकार ने साल २०२१ में ओबीसी आरक्षण से जुड़ा विधेयक भी पास करवाया था, जिसमें ओबीसी आरक्षण को बढ़ाने का फैसला लिया गया था.

झामुमो, कांग्रेस और राजद हैं पक्षधर

सत्ता में शामिल झामुमो, कांग्रेस और राजद जातीय जनगणना के समर्थन में हैं. गाहे-बेगाहे एनडीए में शामिल आजसू भी कास्ट सर्वे की मांग करती रही है. लेकिन विपक्षी दल भाजपा इस मसले पर ज्यादा कुछ नहीं बोल रही. पूर्व सीएम हेमंत ने कहा था कि जिस समूह की जितनी आबादी है, उसे उसी के अनुसार अधिकार मिलना चाहिए. जाति आधारित जनगणना के मुद्दे पर दो साल पहले ही राज्य में सभी दलों की सहमति बनी थी. इसके बाद सर्वदलीय शिष्टमंडल के सदस्यों ने सितंबर २०२१ में दिल्ली जाकर इससे संबंधित मांग पत्र गृह मंत्री को सौंपा था.

ओडिशा और बिहार में हो चुका है जातीय सर्वेक्षण

झारखंड के पड़ोसी राज्य बिहार और ओडिशा में राज्य सरकार जातीय सर्वेक्षण करा चुकी है. झारखंड सरकार ने कैबिनेट में जातीय सर्वेक्षण कराने का फैसला लिया है.

कांग्रेस विधायक प्रदीप यादव ने फरवरी महीने में जतीय जनगणना की मांग करते हुए आरक्षण की सीमा १४ प्रतिशत से बढ़ाकर २७ प्रतिशत करने की मांग की थी.

इस मांग के बाद ही कार्मिक विभाग से जातीय सर्वेक्षण कराने का फैसला लिया था.

सुपर-8 में अफगानिस्तान को 47 रनों से हराकर भारत ने किया जीत से आगाज

ब्रिजटाउन (एजेंसी): टी२० वर्ल्ड कप २०२४ में टीम इंडिया ने जीत का चौका लगा दिया है. न्यूयॉर्क में झंडा गाड़ने के बाद सुपर-८ का आगाज भी टीम इंडिया ने जीत के साथ किया. भारत ने अफगानिस्तान पर ४७ रन से शानदार जीत दर्ज की है. मुकाबले की शुरुआत में अफगानिस्तान ने रोहित एंड कंपनी को शानदार टक्कर दी. लेकिन भारत की घातक गेंदबाजी का तोड़ अफगानिस्तान के पास नहीं था. स्टार गेंदबाज जसप्रीत बुमराह का कहर वेस्टइंडीज में भी देखने को मिला है.

अफगानिस्तान के खिलाफ मैच में रोहित शर्मा ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी करने का फैसला किया था. हिटमैन बैटिंग में फेल नजर आए और महज ८ रन पर अपना विकेट गंवा बैठे. न्यूयॉर्क में फ्लॉप रहे विराट कोहली ने वेस्टइंडीज में भी फैंस की उम्मीदें तोड़ दी. उन्होंने महज २४ रन बनाए. लेकिन इसके बाद टी२० के किंग सूर्यकुमार यादव ने अफगानिस्तान को आड़े हाथों लिया. उन्होंने गेंदबाजों की जमकर क्लास ली और मुश्किल समय में अर्धशतक ठोका. उन्होंने २८ गेंद में ३ छक्के और ५ चौकों की मदद से ५३ रन ठोके. उनका साथ हार्दिक पांड्या ने दिया. उन्होंने ३२ रन की शानदार पारी खेली. अफगानिस्तान की गेंदबाजी शानदार रही. तेज गेंदबाज फजलहक फारुखी ने रोहित, सूर्या और जडेजा जैसे बहुमूल्य प्लेयर्स को पवेलियन का रास्ता दिखाया. वहीं, राशिद खान ने विराट समेत कुल ३ बल्लेबाजों का शिकार किया. सूर्या और हार्दिक की साझेदारी के दम पर टीम इंडिया ने स्कोरबोर्ड पर १८१ रन लगा दिए. जवाबी कार्यवाही में भारत की घातक गेंदबाजी के सामने अफगानिस्तान की बल्लेबाजी फिसड्डी साबित हुई. जसप्रीत बुमराह ने अफगानिस्तान की आते ही कमर तोड़ दी. उन्होंने अफगानिस्तान के दोनों ओपनर्स को सस्ते में चलता किया. रहमनुल्लाह गुरबाज महज ११ रन बनाकर आउट हो गए.

मूसलाधार बारिश से शहर की बत्ती गुल

रांची (एजेंसी): तेज हवाओं के साथ वज्रपात और मूसलाधार बारिश ने गुरुवार को शहर की बत्ती गुल कर दी. इतनी बारिश आई और कई जगहों में बिजली तारों पर पेड़ और पेड़ की डाल गिरने से रांची शहर के मौजूद १० फीडरों से दो से तीन घंटे बिजली आपूर्ति बाधित हो गई. झिमझिम बारिश देर शाम तक होने के कारण मरम्मत कार्य पूरी तरह प्रभावित रहे और राहत कार्य में विलंब हुआ. इससे लोगों को देर शाम तक बाधित बिजली से परेशानी उठाना पड़ा और बड़े इलाके में घंटों अंधेरा पसरा रहा. न्यू कैपिटल डिवीजन अंतर्गत सर्किट हाउस फीडर, पहाड़ी फीडर, ३३ केवी हटिया-राजभवन लाइन, राजभवन-कांके लाइन लाइटनिंग के कारण ट्रिप कर गई. जिसके कारण इन इलाकों में एक से दो घंटे आपूर्ति ठप रही. रांची सेंट्रल डिविजन अंतर्गत कडरू में पेड़ गिरने के कारण अशोक नगर फीडर से आपूर्ति ठप हो गई. वहीं, अरगोड़ा में मेघगर्जन के साथ ट्रांसफार्मर का फ्यूज उड़ने से अतिरिक्त एक घंटे बिजली बंद रही. जबकि अशोक नगर फीडर में शाम तक मरम्मत कार्य जारी रहा. डोरंडा में फ्यूज उड़ने से कई ट्रांसफार्मरों से बिजली आपूर्ति बाधित रही. जिसे आधे से एक घंटे के अंतराल में दुरुस्त किया गया. कोकर डिविजन अंतर्गत करम टोली क्षेत्र में लाइन ब्रेक डाउन हो गया था. यहां पेड़ की डाल बिजली तार में गिर गई थी. जबकि हरिओम टावर समीप अशोक का पेड़ गिर जाने से बिजली आपूर्ति ठप हो गई थी. जबकि नामकुम जोरार बस्ती में ब्रेक डाउन होने से दो से तीन घंटे बड़े इलाके में बिजली आपूर्ति ठप रही.

राष्ट्रपति मुर्मू ने अपने जन्मदिन पर जगन्नाथ मंदिर में की पूजा, पीएम मोदी समेत कइयों ने दी बधाई

नई दिल्ली (एजेंसी): राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू का ६६वां जन्मदिन है। इस मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह समेत कई मंत्रियों और नेताओं ने बधाई दी। पीएम मोदी ने राष्ट्रपति द्रौपदी मुर्मू को उनके जन्मदिन पर बधाई देते हुए उनकी अच्छी सेहत और लंबे जीवन की कामना की है।

राष्ट्रपति मुर्मू का जन्म २० जून १९५८ को ओडिशा के मयूरभंज जिले के उपरबेड़ा गांव में एक संथाली आदिवासी परिवार में हुआ था। उन्होंने २५ जुलाई २०२२ को राष्ट्रपति पद की शपथ ली थी। इससे पहले वह झारखंड की राज्यपाल थीं। अपने जन्मदिन पर राष्ट्रपति मुर्मू ने आज दिल्ली में जगन्नाथ मंदिर में दर्शन किए और पूजा-अर्चना की।

द्रौपदी मुर्मू का प्रारंभिक जीवन कठिनाइयों और संघर्षों से भरा रहा। गांव के स्कूल से प्राथमिक शिक्षा पूरी करने के बाद मुर्मू आगे की पढ़ाई के लिए भुवनेश्वर गईं। उन्होंने रमादेवी महिला महाविद्यालय, भुवनेश्वर से कला स्नातक की उपाधि प्राप्त की। वे अपने गांव से कॉलेज जाने वाली प्रथम बालिका बनीं।

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने सोशल मीडिया मंच एक्स पर कहा, 'राष्ट्रपति जी को जन्मदिन की हार्दिक शुभकामनाएं। हमारे राष्ट्र के प्रति उनकी अनुकरणीय सेवा और समर्पण हम सभी को प्रेरित करता है। गरीबों और हाशिए पर पड़े लोगों की सेवा करने पर उनका ज्ञान और जोर एक मजबूत मार्गदर्शक शक्ति है। उनकी जीवन यात्रा करोड़ों लोगों को उम्मीद देती है। उनके अथक प्रयासों और दूरदर्शी नेतृत्व के लिए भारत हमेशा उनका आभारी रहेगा। उनके लंबे और स्वस्थ जीवन की कामना करता हूं।'

कोलकाता पुलिस से मुझे खतरा, असुरक्षित महसूस कर रहा हूं : राज्यपाल

कोलकाता : पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सीवी आनंद बोस ने कोलकाता पुलिस को लेकर बड़ा दावा किया है। उन्होंने पुलिस ने अपनी सुरक्षा को खतरा बताया है और कहा है कि वह राजभवन में असुरक्षित महसूस कर रहे हैं। राज्यपाल आनंद बोस का यह बयान तब आया है जब उन्होंने दो दिन पहले बंगाल पुलिस को राजभवन खाली करने का फरमान सुना दिया था। अब उन्होंने कोलकाता पुलिस के मौजूदा दल की वजह से अपनी सुरक्षा को खतरा होने का अंदेशा जताया है।

पश्चिम बंगाल के राज्यपाल सी.वी. आनंद बोस ने गुरुवार को कहा कि उन्हें राजभवन में तैनात कोलकाता पुलिस के मौजूदा दल की वजह से अपनी सुरक्षा को खतरा होने का अंदेशा है। मेरे पास कारण हैं, जिनकी वजह से मुझे लगता है कि मौजूदा प्रभारी और उनका दल मेरी निजी सुरक्षा के लिए खतरा है। उन्होंने कहा, मैंने बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी को सूचित किया कि राजभवन में कोलकाता पुलिस के साथ मैं असुरक्षित महसूस कर रहा हूं लेकिन कोई कार्रवाई नहीं हुई।

राजभवन की हो रही जासूसी

उधर, राजभवन के सूत्रों ने बताया कि राज्यपाल बोस ने राज्य सरकार से राजभवन में तैनात पुलिसकर्मियों द्वारा उनकी और उनके कर्मचारियों की लगातार जासूसी किये जाने की शिकायत की है और उन्हें लगता है कि वे बाहर के प्रभावशाली लोगों के कहने पर ऐसा कर रहे हैं।

बता दें, बीते सोमवार को राज्यपाल ने कोलकाता पुलिस को तत्काल राजभवन खाली करने का आदेश दिया था। एक अधिकारी ने बताया कि बोस राजभवन के उत्तरी द्वार के पास स्थित पुलिस चौकी को 'जन मंच' में बदलने की योजना बना रहे हैं।

कुछ दिन पहले राजभवन में तैनात बंगाल पुलिस ने भारतीय जनता पार्टी के नेता शुभेंदु अधिकारी और राज्य में चुनाव के बाद हुई हिंसा के कथित पीड़ितों को बोस से मिलने के लिए राजभवन में प्रवेश करने से रोक दिया था। इसके बाद से यह मुद्दा गर्माया हुआ है, जबकि राज्यपाल ने मुलाकात की लिखित अनुमति दी थी।

गुजरात की महिला ने रांची में की आत्महत्या, पुलिस जांच में जुटी

रांची (एजेंसी): गुजरात की एक महिला द्वारा रांची में आत्महत्या कर लिये जाने की खबर है. यह घटना गुरुवार को पंडरा में घटी है. यहां गुजरात की रहने वाली पूजा कुमारी नाम की महिला ने फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली. महिला ने पिछले साल दिसंबर माह में शादी की थी. इसके बाद से पंडरा ओपी क्षेत्र स्थित देवी मंडप रोड में रह रही थी. इस घटना की जानकारी महिला के परिजनों को दे दी गयी है. जानकारी मिलने पर उसके परिजन रांची पहुंच रहे हैं. पुलिस घटनास्थल पर पहुंच कर मामले की जांच में जुट गयी. पुलिस के अनुसार पोस्टमार्टम रिपोर्ट आने के बाद ही आत्महत्या की सही जानकारी सामने आ पायेगी.

सरला बिरला पब्लिक स्कूल के छात्रों ने फिल्म निर्माण की बारीकियां सीखी

रांची (एजेंसी): सरला बिरला पब्लिक स्कूल के जलतरंग कार्यक्रम में झारखंड के प्रमुख फिल्म निर्माता और सामाजिक कार्यकर्ता मेघनाथ ने फिल्म निर्माण से संबंधित कई बारीकियां छात्रों और शिक्षकों को सिखाई. छात्रों और शिक्षकों ने उनके साथ बातचीत की. उन्होंने छात्रों को पृथ्वी, दिन और रात तथा पृथ्वी पर जीवन की रचना से संबंधित एक एनीमेटेड फिल्म द मुंडारी सृष्टि कथा दिखायी, जो एक लोक-कथा पर आधारित थी. उन्होंने सतत विकास और संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग पर आधारित एक प्रसिद्ध गीत गांव छोड़ब नहीं तथा ट्रेन रूट टू लोहरदगा डॉक्युमेंट्री फिल्म भी दिखाई. उन्होंने मीडिया और संचार क्लब के सदस्यों के साथ सत्यजीत रे की फिल्म क्लब से संबंधित बातचीत की. छात्रों के लिए यह अनुभव ज्ञानवर्धक और समृद्ध रहा. प्राचार्या परमजीत कौर ने कहा कि छात्रों का मेघनाथ जैसे अनुभवी फिल्म निर्माता के साथ बातचीत करना उपयोगी रहा.उन्हें फिल्म निर्माण की सूक्ष्म जानकारी प्राप्त हुई. साथ ही इस क्षेत्र में करियर बनाने के अवसरों के बारे में मार्गदर्शन मिला.

नीट धांधली के खिलाफ कांग्रेस का विरोध मार्च शुक्रवार को

रांची (एजेंसी): झारखंड प्रदेश कांग्रेस २१ जून को नीट परीक्षा में भ्रष्टाचार के खिलाफ शहीद चौक से राजभवन तक विरोध मार्च आयोजित करेगी. इस कार्यक्रम के जरिए केंद्रीय शिक्षा मंत्री को बर्खास्त करने की मांग की जाएगी. यह कार्यक्रम सुबह ११.३० बजे शहीद चौक से शुरू होगा. यह जानकारी प्रदेश मीडिया प्रभारी राकेश सिन्हा ने दी.

नए आपराधिक कानून पर 163 मास्टर ट्रेनर को ई-सख्या- एप का

रांची (एजेंसी): नए आपराधिक कानून को लेकर १६३ मास्टर ट्रेनर को ई-सख्या- एप का प्रशिक्षण दिया गया. यह प्रशिक्षण गुरूवार को अनुसंधान प्रशिक्षण विद्यालय होटवार में दिया गया. जिसमें झारखंड पुलिस की पूर्व से चयनित प्रशिक्षण १६३ मास्टर ट्रेनरों ने हिस्सा लिया. इस कार्यक्रम का संचालन राज्य सूचना विभाग पदाधिकारी एनआईसी झारखंड द्वारा किया गया. इस कार्यक्रम में एडीजी आधुनिकीकरण और प्रशिक्षण सुमन गुप्ता सहित प्रशिक्षण गृह विभाग द्वारा गठित कमेटी के सभी सदस्य शामिल हुए.

व्रत-पूजन 21 और स्नान-दान करें 22 को

रांची (एजेंसी): सनातनी पूर्णिमा व्रत-पूजन को अति महत्व देते हैं. मान्यता है कि इस व्रत को धारण कर श्रीहरि और श्रीलक्ष्मी जी की पूजा-अर्चना करने वालों की सारी मनोकामनाएं पूरी होती है. विद्वान बताते हैं कि पूर्णिमा में चंद्रमा १६ कलाओं से परिपूर्ण होते हैं, ऐसे में चंद्र दर्शन से मानसिक लाभ भी प्राप्त होता है. लेकिन इस बार दो तिथि मिलने से संशय की स्थिति है. आचार्य अजय मिश्रा और पंडित सुरेंद्र इंद्र गुरु ने पंचांगों की गणना कर बताया कि २१ और २२ जून दोनों दिन पूर्णिमा मान्य है. इन तिथियों में व्रत-पूजन और स्नान, दान-पुण्य किये जा सकते हैं, लेकिन पूर्णिमा में सूर्योदय और चंद्रोदय का ध्यान रखना जरूरी होता है. सुरेंद्र इंद्र गुरु ने बताया कि पूजा-अर्चना कर चंद्रदेव को अर्घ्य अर्पित नहीं करने से व्रत फलीभूत नहीं होते. २१ जून को चंद्रोदय शाम ६.२८ बजे के बाद होगा, जबकि २२ जून को चंद्रोदय ७.४८ बजे होगा. इससे पहले आषाढ़ मास की शुरुआत हो जायेगी. इस कारण शुक्रवार को व्रत धारण कर पूजा-अर्चना और चंद्र देव को अर्घ्य अर्पित करना शास्त्रसम्मत रहेगा।

बारिश होते ही लू से राहत, सभी जिलों का पारा 40 डिग्री से रहा नीचे

रांची (एजेंसी): झारखंड में पानी की बूंदों ने आग उगलती गर्मी से निजात दिलाई है. झारखंड में सभी जिलों का पारा ४० डिग्री से. नीचे आ गया है. गुरुवार को दोपहर के बाद बोकारो, गढ़वा, गुमला, हजारीबाग, खूंटी, लातेहार, लोहरदगा, रामगढ़, रांची, सिमडेगा और पलामू में जमकर बारिश हुई. वहीं किसी भी जिले में हीट वेब नहीं रहा. बारिश के बाद झारखंड में मौसम सुहाना हो गया. बारिश के बाद ६ डिग्री तक तापमान में गिरावट दर्ज की गई. झारखंड में सबसे अधिक तापमान गोड्डा में ३८.७ डिग्री दर्ज किया गया. मौसम विभाग के अनुसार, बारिश के बाद अगले २४ घंटों के दौरान अधिकतम तापमान में २-३ डिग्री से. की गिरावट की संभावना है. पिछले २४ घंटे में राज्य में कुछ स्थानों पर गर्जन व आंधी के साथ हल्के से मध्यम दर्जे की बारिश हुई. सबसे अधिक वर्षा ६३.५ एमएम खूंटी में दर्ज की गयी.

26 जून तक बारिश के आसार

मौसम विभाग के पूर्वानुमान के अनुसार, २६ जून तक राज्य में कई स्थानों पर गर्जन के साथ हल्के से मध्यम दर्जे की वर्षा होने की प्रबल संभावना है. शुक्रवार को राज्य के सात जिलों में भारी बारिश को लेकर येलो अलर्ट जारी किया गया है. राज्य के उत्तर-पूर्वी एवं दक्षिण-पूर्वी भागों गोड्डा, साहिबगंज, दुमका, पाकुड़, सरायकेला खरसावां, पूर्वी सिंहभूम, पश्चिमी सिंहभूम में भारी बारिश की संभावना है.

तीन दिनों में मॉनसून प्रवेश कर सकता है

३ से ४ दिनों में मॉनसून के झारखंड में प्रवेश करने की संभावना है. मौसम विभाग के अनुसार, अगले ३ से ४ दिनों के दौरान उत्तरी अरब सागर, गुजरात राज्य, महाराष्ट्र, मध्य प्रदेश, ओडिशा, उत्तर-पश्चिमी बंगाल की खाड़ी, पश्चिम बंगाल के गंगा के कुछ हिस्सों, उप-हिमालयी पश्चिम बंगाल के शेष हिस्सों, झारखंड के कुछ हिस्सों, बिहार के कुछ और हिस्सों और पूर्वी उत्तर प्रदेश के कुछ हिस्सों में दक्षिण-पश्चिम मॉनसून के आगे बढ़ने के लिए परिस्थितियां अनुकूल हैं.

एकरा मस्जिद से कर्बला चौक तक चला अतिक्रमण मुक्त अभियान

रांची (एजेंसी): रांची नगर निगम ने गुरुवार को एकरा मस्जिद से कर्बला चौक तक अतिक्रमण मुक्त अभियान चलाया. जिसके तहत अवैध रूप से लगाई गई दुकानों और अस्थाई संरचनाओं पर बुल्डोजर चला कर उसे हटाया गया.

मौके पर निगम ने १ टेबल, बास-बल्ली, १० एडवरटाइजिंग बोर्ड को भी जब्त किया. रांची शहर के सड़कों को जाम मुक्त और अतिक्रमण मुक्त करने को लिए निगम द्वारा लगातार अभियान चलाया जा रहा है. इस दौरान स्थानीयों द्वारा विरोध प्रदर्शन किया गया.

लोगों ने कहा कि बिना नोटिस दिए ही निगम की टीम ने कार्रवाई शुरू कर दी.

कुछ लोगों ने कहा कि यदि निगम ने कुछ दिन पहले नोटिस दे दिया होता तो हम सब अपनी दुकानों में पहले से व्यवस्था कर लेते. कम से कम इस तरह से तोड़फोड़ तो नहीं की जाती है और हमारा इतना नुकसान भी नहीं होता.

किसानों की एनपीए माफी के लिए बैंकों से बात करें अधिकारी:मुख्यमंत्री

रांची (ससे): मुख्यमंत्री चंपाई सोरेन ने कृषि विभाग के अफसरों को निर्देश दिया है कि वह किसानों के लोन एमपीए माफी के लिए बैंकों से बात करें. यह निर्देश उन्होंने गुरूवार को कृषि विभाग की समीक्षा बैठक के दौरान दिया. राज्य सरकार द्वारा झारखंड कृषि ऋण माफी योजना के तहत दो लाख रुपए तक का ऋण माफ करने की योजना है. इससे पहले किसानों के ५० हजार रुपए तक का लोन माफ किया गया था. ऐसे में जिन किसानों का कृषि ऋण बकाया है, उनके एनपीए माफी के लिए बैंकों से बातचीत करें. ताकि सरकार की इस योजना का ज्यादा से ज्यादा लाभ किसानों को मिल सके. इसके साथ मृतक लाभुकों का सही तरीके से सत्यापन करने के बाद ऋण माफी की राशि का भुगतान किया जाए.

योजनाओं के क्रियान्वयन में समय का ख्याल रखे

मुख्यमंत्री ने अफसरों को निर्देश देते हुए कहा कि योजनाओं के क्रियान्वयन में टाइम लाइन का ख्याल रखें. कृषि कार्य में टाइम फ्रेम बड़ा फैक्टर है. इसलिए किसानों के बीच समय पर खाद - बीज का वितरण करने के साथ अन्य कृषि से जुड़ी सामग्रियां उपलब्ध कराई जाए, ताकि वे इसका पूरा सदुपयोग कर सकें. बैठक में मुख्य सचिव एल खियांग्ते, मुख्यमंत्री के अपर मुख्य सचिव अविनाश कुमार, मुख्यमंत्री के सचिव अरवा राजकमल, कृषि सचिव अबू बकर सिद्दीक, निबंधक, सहयोग समितियां सूरज कुमार, निदेशक कृषि कुमार ताराचंद, निदेशक पशुपालन किरण पासी, निदेशक, उद्यान फैज अक अहमद, निदेशक गव्य शाहनवाज़ अख्तर, निदेशक मत्स्य एचएन द्विवेदी, निदेशक भूमि संरक्षण अजय कुमार सिंह, निदेशक, समेति विकास कुमार, जेएसएलपीएस के सीईओ संदीप सिंह और विशेष सचिव प्रदीप हजारी मौजूद थे.

राज्य में जल स्तर का आकलन कर बोरिंग हो

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य के अलग-अलग क्षेत्र में जल स्तर में काफी भिन्नताएं हैं. किसी इलाके में ग्राउंड वाटर लेवल काफी नीचे है तो कहीं यह थोड़ा ऊपर है. ऐसे में किसी भी क्षेत्र में बोरिंग वहां के भूमिगत जल स्तर को देखते हुए किया जाना चाहिए.ताकि यह असफल साबित नहीं हो.इस योजना के तहत किसानों के बीच पंप सेट वितरित किया जाना है.

खाद बीज की उपलब्धता से जुड़ी जानकारी डिस्प्ले हो

मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार द्वारा लैम्प्स -पैक्स के माध्यम से किसानों को खाद- और बीज उपलब्ध कराया जाता है।

ऐसे में सभी लैम्प्स -पैक्स के नोटिस बोर्ड पर खाद बीज की उपलब्धता की जानकारी डिस्प्ले होनी चाहिए, ताकि किसानों को सुलभता से इसकी जानकारी मिल सके.

किसानों और कृषक संगठन तथा समूह से संवाद करें

मुख्यमंत्री ने कहा कि सरकार की कृषि से जुड़ी योजनाएं तभी सफल होगी, जब किसानों को उसका पूरा लाभ मिलेगा. उन्होंने अधिकारियों से कहा कि वे योजनाओं को लेकर किसानों, कृषक समूहों और कृषक संगठनों से संवाद करें. उनसे उनकी समस्याओं की जानकारी लें. अगर सरकार की किसी योजना में कोई त्रुटि है तो उसे जानने का प्रयास करें, ताकि समय पर उन त्रुटियों को दूर कर किसानों तक उसका लाभ पहुंचाया जा सके.

सीएम पशुधन विकास योजना में तालमेल बनाकर कार्य करें

मुख्यमंत्री ने कहा कि मुख्यमंत्री पशुधन विकास योजना सरकार की एक महत्वाकांक्षी योजना है. ऐसे में ये योजना इस तरह से क्रियान्वित हो कि किसानों को सुलभता के साथ पशु धन मिल सके.

इसके लिए जरूरी है कि पशु के साथ शेड और अन्य जरूरी सुविधाएं भी उपलब्ध कराई जाए.इसके लिए कृषि विभाग के अंतर्गत आने वाले सभी निदेशालय समन्वय बनाकर कम करें. मुख्यमंत्री ने बकरी पालन पर भी विशेष जोर दिया. इसके लिए उन्होंने जिला स्तर पर बकरी फार्म बनाने का निर्देश दिया, जहां इसके ब्रीडिंग की भी व्यवस्था हो.

संपादकीय

मोहन भागवत के बयान के बाद जागे अमित शाह...

मणिपुर में शांति बहाली को लेकर अब केंद्र सरकार कुछ गंभीर नजर आई है। गृहमंत्री की अध्यक्षता में हुई बैठक में वहां सुरक्षा बलों की तैनाती बढ़ाने, हिंसा करने वालों के खिलाफ सख्त कदम उठाने और जल्दी ही मैतेई और कुकी समुदाय के लोगों के साथ बातचीत करने का फैसला किया गया। एक वर्ष से ऊपर हो गया वहां हिंसा होते, मगर न तो केंद्र और न राज्य सरकार ने कोई उल्लेखनीय कदम उठाया। इसे लेकर लगातार दोनों सरकारों पर अंगुलियां उठती रही हैं।

पिछले वर्ष मई में जब वहां हिंसा भड़की, तब सेना की गश्ती बढ़ा दी गई थी। इससे नतीजा यह हुआ कि हिंसा पर एकदम से काबू पा लिया गया था। मगर फिर महीने भर के भीतर ही फिर से हिंसा भड़क उठी थी। उसके बाद उस पर काबू पाने का कोई गंभीर प्रयास नहीं किया गया। उपद्रवियों ने पुलिस शस्त्रागार से बड़े पैमाने पर हथियार लूट लिए, दोनों समुदाय घात लगा कर एक-दूसरे पर हमले करने लगे थे। उस दौरान केंद्रीय गृहमंत्री ने वहां का दौरा किया था। तब भी उन्होंने हिंसा करने वालों को कड़ी चेतावनी दी थी, लूटे गए हथियार वापस करने का आह्वान किया था, मगर उसका कोई खास असर नहीं हुआ। तब से जैसे वहां के लोगों को उनके हाल पर छोड़ दिया गया है। राज्य सरकार हाथ पर हाथ धरे बैठी रही और केंद्र सरकार ने कोई कड़ाई नहीं दिखाई। इसका नतीजा यह हुआ कि बहुत सारे घर जला दिए गए, पूजा स्थलों को ध्वस्त कर दिया गया, साठ हजार से ऊपर लोग अपने घरों से विस्थापित होकर राहत शिविरों में रह रहे हैं, दो सौ से ऊपर लोग मारे जा चुके हैं, कई महिलाओं से सामूहिक बलात्कार किया गया, कुछ को निर्वस्त्र घुमाया गया।

इन सबके बावजूद सरकारें तमाशबीन बनी रहीं। प्रधानमंत्री पर आरोप है कि वे आज तक मणिपुर पर कुछ नहीं बोले। इस स्थिति में सर्वोच्च न्यायालय ने संज्ञान लेते हुए अपनी निगरानी में जांच समिति गठित की और राज्य पुलिस को कड़ी चेतावनी दी। मगर उसका भी कोई उल्लेखनीय नतीजा नहीं निकल पाया है। अभी स्थिति यह है कि इफल से ऊपर के पहाड़ी इलाकों में रहने वाले कुकी समुदाय के लोग खुद अपनी सुरक्षा चौकियां बना कर पहरेदारी करते हैं। राहत शिविरों में रह रहे लोगों को न तो ढंग का भोजन मिल पाता है, न पीने का पानी, न स्वास्थ्य सुविधाएं। बच्चों की पढ़ाई-लिखाई सब कुछ बाधित है। इस तरह एक पूरे राज्य के लोगों को उनके हाल पर छोड़ देना किसी भी कल्याणकारी सरकार की जवाबदेही पर स्वाभाविक ही सवाल खड़े करता है। इसे लेकर राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रमुख मोहन भागवत ने भी कुछ दिनों पहले सरकार की कड़े शब्दों में निंदा की। शायद उसी का असर हो कि केंद्रीय गृह मंत्रालय ने मणिपुर की सुरक्षा को लेकर फिक्र जताई है। लोकसभा चुनाव में मणिपुर के हालात की अनदेखी के नतीजे भी सामने हैं। विपक्ष उसे लेकर लगातार सत्तापक्ष को घेरता रहा है। नई सरकार में अब विपक्ष इसे और मजबूती के साथ उठाता, इसलिए भी संसद का सत्र शुरू होने से पहले सरकार ने मणिपुर पर बैठक बुलाई और कड़ाई से पेश आने का आश्वासन दिया। देखने की बात होगी कि मणिपुर को लेकर केंद्र सरकार कितनी गंभीर है, गृहमंत्रालय की बैठक में किए गए फैसले केवल घोषणा तक सीमित रहते हैं या वास्तव में उन पर गंभीरता से अमल भी किया जाता है।

बेटियों के नाम पर झूठा सम्मान

आज जब दुनिया भर में लोग अपने पूर्वाग्रहों और दुराग्रहों को छोड़ कर सामाजिक-आर्थिक विकास की नई राह पर निकल रहे हैं, उसमें ऐसी खबरें दुखद लगती हैं कि किसी पिता ने सिर्फ इसलिए अपनी बेटी की जान ले ली कि उसने किसी अन्य जाति के लड़के से प्रेम किया और उससे शादी करना चाहती थी। दिल्ली के प्रेमनगर इलाके में एक व्यक्ति को इस बात पर आपत्ति थी कि उसकी बेटी किसी अन्य जाति के लड़के से विवाह करे। उसने योजनाबद्ध तरीके से बेटी की हत्या कर दी। आरोपी पिता को गिरफ्तार कर लिया गया है, लेकिन इस घटना से एक बार फिर यह सवाल उठा है कि देश के विकास के मोर्चे पर सामाजिक मसलों की प्राथमिकता क्या है और उसमें सुधार के लिए क्या किया जा रहा है। झूठे सम्मान के नाम पर की गई हत्या की यह कोई अकेली घटना नहीं है। देश के अलग-अलग इलाकों से अक्सर ऐसी घटनाएं सामने आती रहती हैं, जिनमें किसी प्रेमी जोड़े को उनके परिवार वालों ने ही मार डाला, क्योंकि लड़की और लड़के की जाति या धर्म अलग था। विडंबना है कि बहुत सारे लोग आधुनिकता और तकनीकी विकास के मामले में खुद को मुख्यधारा में शामिल दिखाना चाहते हैं, मगर जाति और धर्म के मसले पर वे एक विचित्र किस्म की संकीर्णता से घिरे रहते हैं। दुनिया की कोई भी संस्कृति प्रेम के विरुद्ध नहीं है और न किसी व्यक्ति को जाति, धर्म या झूठे सम्मान के नाम पर हत्या करने की शिक्षा देती है। मगर अफसोसनाक है कि अनपढ़ से लेकर कई पढ़े-लिखे लोग भी जाति की जड़ता में जकड़े रहते और इस मसले पर कई बार इस हद तक क्रूर हो जाते हैं कि अंतरजातीय प्रेम या विवाह करने वाली अपनी बहन या बेटी की भी हत्या कर डालते हैं। आखिर क्या कारण है कि शिक्षा के प्रसार और तमाम जागरूकता अभियानों में सामाजिक पूर्वाग्रहों को दूर करने के लिए ऐसे उपायों का अभाव दिखता है, जो लोगों को जाति और धर्म की जड़ता से मुक्त कर सकें और मानवीय संवेदना के साथ सामाजिक दायरे के विस्तार को लेकर एक प्रगतिशील सोच का विकास हो!

राजनीतिः सेवा का माध्यम या सत्ता का साधन

राजनीति का नाम सुनते ही हमारे मन में दो प्रमुख विचार आते हैं- सेवा और सत्ता। यह विषय व्यापक चर्चा और विचार-विमर्श का केंद्र बना रहता है कि क्या राजनेता वास्तव में जनता की सेवा करने के लिए राजनीति में आते हैं या सत्ता प्राप्ति और उसे बनाए रखने के लिए।

अश्वनी कुमार गुप्ता

बहुत से राजनेता राजनीति में आने का मुख्य उद्देश्य जनता की सेवा करना बताते हैं, जबकि उनके कार्य और नीतियां दर्शाती हैं कि उनका मुख्य उद्देश्य सत्ता प्राप्ति और उसे बनाए रखना है। भारतीय दर्शन में 'सेवक' का अर्थ अत्यंत व्यापक और गहन है। सेवक वह है जो निस्स्वार्थ भाव से, बिना किसी व्यक्तिगत लाभ की इच्छा के अपने स्वामी या किसी उच्च उद्देश्य की सेवा करता है। लोकतंत्र में जनता ही स्वामी है तथा किसी भी राजनेता का दायित्व निस्स्वार्थ भाव से जनता की सेवा करना ही होना चाहिए।

साम-दाम-दंड भेद का हर चुनाव में खुला इस्तेमाल इस बात का शक पैदा करता है कि क्या वास्तव में यह प्रयास सेवा करने के लिए चर्चस्व प्राप्त करने का है या फिर सत्ता प्राप्त करने का। विभिन्न राजनीतिक दलों द्वारा मतदाता को दिए जा रहे प्रलोभनों से तो अब यह लगने लगा है कि सेवा की जगह सौदेबाजी का वायदा किया जा रहा है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के एक शोध में पाया गया कि सत्ता की चाहत मानव स्वभाव का हिस्सा है और इसे एक महत्वपूर्ण प्रेरक के रूप में देखा जा सकता है। सत्ता व्यक्ति को प्रभावशाली और शक्तिशाली महसूस कराती है, जिससे उनके आत्मसम्मान में वृद्धि होती है। स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा किए गए अध्ययन में यह बताया गया कि सत्ता प्राप्त करने वाले व्यक्ति अपने निर्णयों में अधिक स्वायत्तता और स्वतंत्रता महसूस करते हैं, जिससे वे अपने विचारों और योजनाओं को लागू करने में सक्षम होते हैं।

कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के अध्ययन में बताया गया कि निस्स्वार्थ सेवा करने वाले राजनेता अधिक लोकप्रिय होते हैं और लंबे समय तक सत्ता में बने रहते हैं क्योंकि जनता उनके कार्यों और ईमानदारी की सराहना करती है। कई राजनेता सेवा का ढोंग करते हैं, जबकि उनके इरादे सत्ता प्राप्त करना और बनाए रखना होता है। समाज सेवा करने के लिए राजनीति ही एकमात्र माध्यम नहीं है।

समाज सेवा के कई अन्य रास्ते और तरीके हैं जिनसे व्यक्ति समाज में सकारात्मक परिवर्तन ला सकता है। एन.जी.ओ. और स्वयंसेवी संस्थाएं विभिन्न सामाजिक मुद्दों पर काम करती हैं। विडंबना यह है कि जब समाज सेवा के इतने सारे प्रभावी और बेहतर तरीके मौजूद हैं, तो राजनेता सत्ता की लालसा को संतुष्ट करने के लिए जनता की सेवा का दावा क्यों करते हैं? यह प्रश्न भी उठता है कि क्या वास्तव में लोग उनकी सेवा की मांग कर रहे हैं?

यहां यह देखना महत्वपूर्ण है कि कालांतर में सेवा का दावा करने वाले अधिकांश नेता राजनीति में प्रवेश करते समय न तो आर्थिक रूप से समृद्ध होते हैं और न ही उनके पास बौद्धिक संसाधन होते हैं। लेकिन कुछ ही वर्षों में उनकी व्यक्तिगत संपत्ति कई गुणा बढ़ जाती है। भारत में राजनीतिज्ञों की संपत्ति सत्ता में आने के बाद कैसे बढ़ी, इस पर कई रिपोर्ट्स और डाटा उपलब्ध हैं। ए.डी.आर. की रिपोर्ट के अनुसार, 2009 से 2014 के बीच सांसदों की औसत संपत्ति में 137 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। 2014 के आम चुनाव के बाद चुने गए सांसदों की औसत संपत्ति 14.61 करोड़ रुपए थी, जबकि 2009 में यह 5.33 करोड़ रुपए थी। चुनाव आयोग को जमा किए गए हलफनामों के विश्लेषण से भी यह स्पष्ट होता है कि कई राजनीतिज्ञों की संपत्ति में सत्ता में आने के बाद तेजी से वृद्धि हुई है। इसके अतिरिक्त नेताओं में शक्ति प्रदर्शन की लालसा भरसक रूप से होती है, जो कि सुरक्षा गार्डों, बड़ी गाड़ी और बड़े सरकारी बंगलों के माध्यम से प्रकट होती है।

यदि हम अपने राजनीतिक इतिहास में देखें तो पाएंगे कि ऐसे अनेक विद्वानों तथा साधन संपन्न नेताओं ने देश एवं समाज के कल्याण के लिए अपना सम्पूर्ण जीवन राजनीति को समर्पित कर दिया। बाबा साहेब डॉ. अम्बेडकर जैसे उच्चकोटि के विद्वानों, महापुरुषों एवं नीति-निर्माताओं ने राजनीति में एक संरक्षक की भांति अपनी भूमिका निभाई। ऐसे नेताओं में निश्चय ही सत्ता की लालसा नहीं रही होगी लेकिन स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय द्वारा किए गए अध्ययन के अनुसार, सत्ता द्वारा अपने निर्णयों में अधिक स्वायत्तता और स्वतंत्रता प्राप्त करने के महत्व को महसूस करते होंगे, जिससे वे अपने विचारों और योजनाओं को लागू करने में सक्षम हुए।

मेरा निष्कर्ष यह है कि आज के युग में कोई भी व्यक्ति बिना सत्ता की लालसा के राजनीति में नहीं आता लेकिन ऐसा होना पूरी तरह गलत भी नहीं है। हार्वर्ड विश्वविद्यालय के एक शोध में इसे एक महत्वपूर्ण प्रेरक के रूप में देखा गया है। परन्तु हमने विभिन्न स्तरों पर ऐसे बहुत कम नेता देखे हैं जो सेवा से आम लोगों के जीवन में वास्तविक परिवर्तन ला सके हैं। राजनीति में सत्ता की लालसा और व्यक्तिगत लाभ का लोभ अधिकतर नेताओं के सेवा के भाव पर भारी पड़ता दिखाई देता है, जिससे यह सवाल उठता है कि सच्चे सेवा भाव से राजनीति करने वाले नेता कहां हैं? हमें एक जागरूक और सतर्क मतदाता के रूप में सही नेताओं को चुनने की आवश्यकता है, ताकि राजनीति का वास्तविक उद्देश्य 'जनता की सेवा' सफल हो सके।

आज भी प्रासंगिक है चाणक्य नीति...!

किशनगिरि गोस्वामी

आज से कोई 2500 साल पहले जन्मे विष्णु गुप्त कौटिल्य (आर्य चाणक्य) ने अत्याचारी नंद वंश को समाप्त कर चन्द्रगुप्त मौर्य को गद्दी पर बिठाया था। उनका दिशा-निर्देश एक निष्पक्ष शासन के लिए विकेंद्रित समाज को पूरा जिम्मा सौंपता है, ''राज राज्य के सैन्य बल या धर्म सत्ता से नहीं, जनशक्ति से सफल होता है।'' निर्भीकता से यह कहने वाले आर्य चाणक्य सत्ता से कोसों दूर एक झोंपड़ी में रहते थे। सेना पर निर्भर देशों के बिगड़े हालात हम देख रहे हैं और धर्माध देश आधुनिक युग में कैसे लचर साबित हो रहे हैं यह भी देख रहे हैं। यह सही है कि वह काल औद्योगिक बसावट वाला नहीं था, लेकिन आज की तरह विदेशी प्रभाव उस समय भी था। जब विदेशी आक्रमण हुआ तो चाणक्य के कुशल मार्गदर्शन में चंद्रगुप्त की सेना ने सिकंदर को परास्त कर दिया था। ''राज्य की सफलता के लिए शस्त्र, शास्त्र और भूमि का समुचित दोहन जरूरी है। यह चाणक्य विधान आज ज्यादा प्रासंगिक है। हमारे पूर्व प्रधानमंत्री शास्त्री जी ने एकदम सही नारा दिया था, 'जय जवान जय किसान'।

भारत में 'पंचायती राज' चाणक्य ने प्रारंभ किया था। इस देश को दिया हुआ उनका यह सर्वोत्तम उपहार है। खेत और वन भारत के मूलधन हैं और जब व्यापारी अपना मूलधन ही खाना शुरू कर दे, तो उसका व्यापार चौपट होना स्वाभाविक है। इसी बात को लेकर चाणक्य ने खेती में सुधार के लिए काम किया। देवदासी, विधवा, त्याज्य, विकलांग और वेश्याओं के भरण-पोषण के लिए उन्हें स्थानीय रोजगार उपलब्ध कराया जाता था जिसमें कपड़ा बुनाई और मंदिरों में दीपों के लिए कपास की बत्तियां आदि बनवाना शामिल था। हर गांव में तालाब और चरनोई हो, यह कौटिल्य ने किया। चरनोई की व्यवस्था बहुत ही वैज्ञानिक थी। 'पड़त-भूमि' पर पशुओं को रखा जाता था। वहां उनके लिए चारे-पानी की व्यवस्था पंचायत करती थी। 12 साल तक वहां पशुओं के गोबर और गौमूत्र से जब वह भूमि उर्वर हो जाती तब चरनोई दूसरी पड़त भूमि पर ले जाई जाती थी। इस तरह से कृषि भूमि का विस्तार हो जाता था। वन और खेत पंचायतों की स्वायत्तता में रहेंगे। यह चाणक्य ने किया। उनका मानना था कि खेत और गांव छोटे आकार के होने चाहिएं। हर गांव में 100 से 500 मकान ही हों। चाणक्य ने वनीकरण करवाया, वृक्षों से पशुओं के लिए चारा, इमारती लकड़ी और जलाऊ लकड़ी की व्यवस्था की। वन काटने वाले को कड़ी सजा मिलती थी। पशुओं के लिए गांव-गांव में चिकित्सक थे। उन्हें भरण-पोषण के लिए जमीन दी जाती थी, जिसे वे बेच नहीं सकते थे। किसानों से वाजिब लगान लिया जाता था और नियमित रूप से लगान देने वालों को पुरस्कृत किया जाता था। हर गांव में संदेश वाहक रखे जाते थे, ताकि राजा तक वहां की समस्याएं पहुंचाई जा सकें। कौटिल्य के अर्थशास्त्र में कहीं भी मुद्रा विनिमय और लेन-देन का उल्लेख नहीं है। उनका लिखा अर्थशास्त्र एक प्रकार से समाज शास्त्र है जो यह बताता है कि राजा से लेकर सामान्य नागरिक के कर्त्तव्य क्या हैं। दुर्भाग्य से उनका लिखा अर्थशास्त्र हमारे स्कूल और कालेज से नदारद है। चाणक्य ने गांवों के साथ-साथ नगर-विधान भी लिखा। वे यह निश्चित करते थे कि नगरों में जनसंख्या सीमित हो। नगरों में भीड़ बढ़ने पर वे उन्हें वापस गांवों में भेज देते थे। शाम को नगरों के द्वार बंद कर दिए जाते थे।

यह प्रसन्नता की बात है कि भारत के विभिन्न राज्यों में कई स्थानीय पंचायतों ने क्रांतिकारी कदम उठा कर वहां के समाज को सशक्त किया है फिर वह धर्म उद्योग हो, हस्तशिल्प हो, कच्ची घाणी का तेल हो, साबुन हो, सौंदर्यीकरण के नाम पर स्थानीय वस्तु को उखड़ने का विरोध हो, वैद्यराय की समाप्ति हो या मशीनीकरण आदि का विरोध हो। इन्हें और सुचारू रूप देने के लिए चाणक्य आज भी इतने ही प्रासंगिक हैं। गांधी विचार में इस दर्शन को गहराई से समझने को प्रमाण मौजूद हैं।

आज का कार्टून

बिहारः उद्यान के पहले ही गिरा 12 करोड़ का पुल

गति में एक अलग ही रंग में दिखता है संसार

जब हम गति में होते हैं तो एक-एक कर दुनिया अपने ही निराले अंदाज में सामने आती रहती है। हम कुछ करें या न करें, चलते-चलते संसार को संसार की तरह देखें, थोड़ा रुकें, थोड़ी बातचीत करें, संवाद करें। आसपास की धरती को और उन जगहों के लोगों को इस तरह देखें कि वे परिचय भर में नहीं हैं। उनके साथ परिचित होने से कहीं ज्यादा आत्मवत रिश्ता है। जब इस तरह हम गतिमान होते हैं, तो कोई जगह अलग नहीं लगती और न ही हम अलगाव के शिकार होते हैं। बल्कि तब हमारे लिए यह संसार यह सब कुछ इतना परिचित और सहज लगने लगता है कि बस लगता है कि यह सब अपना ही तो है। यह दुनिया अपनी ही है, जिसे सहज गति में हम देख रहे हैं और समझ-बूझ रहे हैं।

विवेक कुमार मिश्र

चलते-चलते एक दुनिया को सामान्य से अलग हट कर देखा जाए तो वह आमतौर पर इस तरह दिखती है कि हम कुछ अलग और अपूर्व देख रहे हैं। गति में संसार एक अलग ही रंग में दिखता है। गति दरअसल, सौंदर्य से, जीवन रस से और अलग ही ढंग से देखने को कहती है। संसार को समझने के लिए गति के पंख को लेकर चलना पड़ता है। गति में पूरी दुनिया पृथ्वी के साथ घूमती हुई दिखती है। जब एक ऊंचाई से संसार को देखते हैं, तो एक अलग ही संसार दिखता है। यह संसार कुछ ज्यादा साफ, कुछ अलग और ऐसे दिखता है कि पहली बार ही वह सब देख रहे हों। भले सैकड़ों बार वह दृश्य आंखों से गुजरा हो, पर गति के क्रम में हर बार अंदाज बदल जाता है। हो सकता है कि हमारे सामने हमेशा से इसी तरह संसार आता रहा हो, पर जरूरी नहीं कि वही संसार आए जो एक जगह बैठे रहने में आता है।

एक जगह से एक गतिशील दुनिया को स्थिर रूप में देखते हैं, जबकि चलते-चलते स्थिर संसार भी इतना गतिशील हो जाता है कि संसार को गति करते ही देखते हैं। चलते-चलते पहाड़ भी घूमता है। अलग-अलग कोणों से दिखाई देता है। एक भाग जो कह रहा होता है, तो वही दूसरा नहीं कहता। दूसरा सिरा नुकीले रूप में

दिखता है तो पिछला सिरा पठार की तरह दिखता है और हर हिस्सा सौंदर्य का अलग-अलग रूप दिखाता है। यह दिखना हमारी दृष्टि के साथ हमारी गति और सोच के साथ उस समय की उपस्थिति पर निर्भर करता है।

यह सब कुछ चलते-चलते ही संभव होता है। जब हम चलते हैं तो सड़क और रेल की पटरियां गति पकड़ती दिखती हैं और अपनी गति से इस तरह जोड़ देती हैं कि हम एक अलग ही दुनिया को देखने लगते हैं। यह भी एक विचित्र दृश्य है कि पटरियां और सड़क तो अपनी जगह स्थिर ही रहती हैं, मगर हमारे चलने के समांतर उनके भी गतिमान होने का दृश्य उपस्थित होता है। हालांकि हम अपने गंतव्य या मंजिल पर पहुंचते हैं तो वही सड़क और रेल की पटरियां हमारा साथ बनती हैं।

दरअसल, भागती हुई दुनिया शुरू से ही आकर्षण का केंद्र रही है। न जाने कितनी कितनी तरह की दुनिया को छोड़ते हुए हम चलते चले जाते हैं। सड़क और रेल की पटरियां बहुत दूर के दृश्य को आंखों में बसा देती हैं। दूर से क्षितिज पर घूमते पेड़ ऐसे दिखते हैं कि बस यही लगता है कि चारों तरफ हरियाली भरी हुई है। इसी के साथ खेत और दूर-दूर तक खेत बाग बगीचे और नदियां, नहर, तालाब से भरी दुनिया के वे दृश्य भी सामने आ जाते हैं, जिससे यह पता चलता है कि धरती पर कितना कुछ है और हम हैं कि ठहर कर रुक कर देखने की जगह बस भागते रहते हैं। अगर कभी चलते-चलते हम थोड़ा-सा ठहर कर इन छूटी हुई चीजों को देखते हैं, इन पर विचार करते हैं तो यह दुनिया एक अलग ही रंग रूप में दिखाई देने लगती है। नए आयाम खुलते हैं और इस तरह हमारे विचार के या सोचने-समझने के दायरे को नया विस्तार मिलता है।

किसी भी रास्ते पर निकल जाएं क्षितिज, पहाड़ और आकाश अलग ही तरह से ध्यान खींचते रहते हैं। पहाड़, खेत, हरियाली और बादलों के बीच एक सहज संवाद बन ही जाता है। जब सड़क के रास्ते चलते हैं तो एक अलग ही दृश्यता ध्यान खींचती है। इतना कुछ इस संसार में है कि अपने-अपने हिसाब से सब दुनिया को देखते ही रहते हैं। सबको अपनी रुचि का संसार अलग-अलग रंग में दिख ही जाता है। दुनिया एक जगह रुके रहने में नहीं होती, वह तो चलते-चलते ही दिखती है।

इस क्रम में एक नई दुनिया ही सामने आ जाती है। संसार को हम कहीं और से नहीं, प्रकृति के किनारे से ही देखते हैं और यह सारा विस्तार चलते-चलते ही दिखता है। जो एक जगह से ही दुनिया देखने की कोशिश करते हैं, वे एक तरह से बंद आंखों से ही संसार को देखते हैं या यह भी कह सकते हैं कि उनके लिए बस वहीं तक दुनिया होती है, जितना भर संसार वे एक स्थिर गति में देखते थे। पर संसार तो गति में दिखता है। बल्कि यों कहा जाए कि संसार का दायरा हमें तभी समझ में आता है, जब हम अपने दायरे से बाहर जाकर संसार को समझने की कोशिश करते हैं, उस प्रक्रिया में शामिल होते हैं।

जब हम गति में होते हैं तो एक-एक कर दुनिया अपने ही निराले अंदाज में सामने आती रहती है। हम कुछ करें या न करें, चलते-चलते संसार को संसार की तरह देखें, थोड़ा रुकें, थोड़ी बातचीत करें, संवाद करें। आसपास की धरती को और उन जगहों के लोगों को इस तरह देखें कि वे परिचय भर में नहीं हैं। उनके साथ परिचित होने से कहीं ज्यादा आत्मवत रिश्ता है। जब इस तरह हम गतिमान होते हैं, तो कोई जगह अलग नहीं लगती और न ही हम अलगाव के शिकार होते हैं। बल्कि तब हमारे लिए यह संसार यह सब कुछ इतना परिचित और सहज लगने लगता है कि बस लगता है कि यह सब अपना ही तो है। यह दुनिया अपनी ही है, जिसे सहज गति में हम देख रहे हैं और समझ-बूझ रहे हैं। यह सब चलते-चलते ही संभव होता है।

भारतीय क्रिकेटर डेविड जॉनसन की अचानक मौत, चौथी मंजिल से गिरे, अनिल कुंबले हैरान

बेंगलुरु (एजेंसी)। एक ओर जहां भारतीय टीम टी20 विश्व कप 2024 के सुपर-8 में आज अफगानिस्तान के खिलाफ जंग की तैयारी कर रही है तो दूसरी ओर क्रिकेट वर्ल्ड कप झकझोर देने वाली खबर सामने आई है। पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज डेविड जॉनसन की मौत हो गई है। रिपोर्ट्स में दावा किया जा रहा है कि उन्होंने अपने अपार्टमेंट की चौथी मंजिल से छलांग लगा दी थी। उनकी मौत की खबर से भारतीय क्रिकेटरों में शोक है। पूर्व कप्तान अनिल कुंबले ने हैरानी जताई है। पुलिस के अनुसार, पूर्व भारतीय क्रिकेटर डेविड जॉनसन गुरुवार को अपने अपार्टमेंट के बाहर मृत पाए गए। एक पुलिस अधिकारी ने कहा- ऐसा माना जा रहा है कि 52 वर्षीय डेविड जूड जॉनसन कोथनूर के कनक श्री लेआउट में अपने अपार्टमेंट से गिर गए, जिससे आत्महत्या का संदेह पैदा हो गया। उन्होंने आगे कहा कि आगे की जांच जारी है। पुलिस सूत्रों ने बताया कि क्रिकेटर पिछले कुछ समय से अस्वस्थ थे।

उन्होंने बताया कि पूर्व तेज गेंदबाज जॉनसन के परिवार में पत्नी, एक बेटा और एक बेटी हैं। क्रिकेटर ने 1996 में भारत के लिए दो टेस्ट मैच खेले थे। बता दें कि वह कर्नाटक की उस टीम का हिस्सा थे, जिसमें अनिल कुंबले, वेंटकेश प्रसाद, डोडा गणेश और जवागल श्रीनाथ दोनों खेलते थे। उन्होंने कुल 39 फर्स्ट क्लास मैच खेले। वह अपने घर के पास ही एक क्रिकेट अकैडमी चलाते थे। भारत के पूर्व कप्तान अनिल कुंबले ने एक्स पर लिखा-मेरे क्रिकेट साथी डेविड जॉनसन के निधन की खबर सुनकर दुख हुआ। उनके परिवार के प्रति हार्दिक संवेदना। बहुत जल्दी चले गए बेनी! उल्लेखनीय है कि उन्होंने कर्नाटक के लिए डोमेस्टिक क्रिकेट खेला। उन्होंने 1995-96 के रणजी ट्रॉफी सत्र में केरल के खिलाफ 152 रन देकर 10 विकेट लेकर अपना सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन किया, जिसने उन्हें राष्ट्रीय स्तर पर पहचान दिलाई। इसके बाद उन्होंने 1996 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ फिरोज शाह कोटला में एकमात्र टेस्ट मैच में डेब्यू किया था। प्रथम श्रेणी क्रिकेट में उन्होंने 39 मैचों में 28.63 की औसत और 47.4 की स्ट्राइक रेट से 125 विकेट लिए। वह एक निचले क्रम के बल्लेबाज थे, जिनके नाम प्रथम श्रेणी क्रिकेट में एक शतक भी था।

जय शाह और गौतम गंभीर ने जताया शोक - भारतीय क्रिकेट कंट्रोल बोर्ड के सचिव जय शाह ने एक्स पर लिखा- हमारे पूर्व भारतीय तेज गेंदबाज डेविड जॉनसन के परिवार और दोस्तों के प्रति गहरी संवेदना। खेल में उनके योगदान को हमेशा याद रखा जाएगा। 33 लिस्ट ए खेलों में, उन्होंने 41 विकेट लिए। प्रतिस्पर्धी क्रिकेट का उनका आखिरी मैच 2015 में कर्नाटक प्रीमियर लीग में था। गौतम गंभीर ने लिखा, %डेविड जॉनसन के निधन से दुखी हूं। भगवान उनके परिवार और प्रियजनों को शक्ति दे।

157.8 किमी प्रतिघंटा की रफ्तार से गेंद फेंककर हैरान कर दिया था - 16 अक्टूबर 1971 को जन्मे डेविड जॉनसन ने 1990 के दशक के मध्य में अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में भारत का प्रतिनिधित्व किया। जॉनसन ने अक्टूबर 1996 में ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ भारत के लिए टेस्ट क्रिकेट में डेब्यू किया। जॉनसन के करियर का सबसे शानदार पल ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ टेस्ट मैच के दौरान 157.8 किमी/घंटा की गति से गेंदबाजी करना था। उनका आखिरी टेस्ट मैच 1996 में डरबन में दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ था। उन्होंने भारत के लिए वनडे मैच नहीं खेले।

संक्षिप्त समाचार

हंगरी को हराकर जर्मनी ने यूरो कप के नॉकआउट चरण में किया प्रवेश

लीपजिग(एजेंसी)। जर्मनी ने जमाल मुसियाला के शानदार गोल की बदौलत यूरो कप के ग्रुप ए के मुकाबले हंगरी को 2-0 से हराकर नॉकाआउट चरण में प्रवेश कर लिया है। बुधवार की रात खेले गये मुकाबले में अपने घरेलू मैदान में खेल रहे मुसियाला ने पहले हाफ के 22वें मिनट में गोल दाग कर जर्मनी को बढ़त दिलाई।

दूसरे हाफ में जर्मनी के कप्तान इल्के गुंडोगन ने 67वें मिनट में एक आसान गोल कर बढ़त को दो गुना कर दिया। यूरो कप के दो मुकाबले बराबरी पर समाप्त हुए। क्रोएशिया और अल्बानिया के बीच खेला गया मुकाबला 2-2 की बराबरी पर रहा। वहीं स्कॉटलैंड और स्विट्जरलैंड के बीच खेला गया मुकाबला भी 1-1 से ड्रॉ रहा।

आज टी-20 वर्ल्ड कप में दक्षिण अफ्रीका के मजबूत गेंदबाजी आक्रमण से होगा इंग्लैंड के बल्लेबाजों का सामना

ग्रोस आइलेट (एजेंसी)। सह मेजबान वेस्टइंडीज को हराकर फॉर्म में लौटे इंग्लैंड के बल्लेबाजों के सामने टी20 विश्व कप सुपर आठ चरण के दूसरे मैच में शुक्रवार को दक्षिण अफ्रीका के दमदार गेंदबाजी आक्रमण की कठिन चुनौती होगी। इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज को सुपर आठ चरण के पहले मैच में आठ विकेट से हराया। अब वह ग्रुप में नेट रनरेट (प्लस 1.34) के आधार पर शीर्ष पर है चूंकि दक्षिण अफ्रीका का नेट रनरेट उससे कम (प्लस 0 . 90) है। अब दक्षिण अफ्रीका को हराने पर सेमीफाइनल में उसका प्रवेश लगभग तय हो जाएगा।

दूसरी ओर दक्षिण अफ्रीका को सुपर आठ चरण के पहले मैच में अमेरिका ने कड़ी चुनौती दी हालांकि उसने 18 रन से जीत दर्ज की। इंग्लैंड ने वेस्टइंडीज के खिलाफ जीत के लिए 181 रन के लक्ष्य का पीछा करते हुए फिल साल्ट के 47 गेंद में नाबाद 87 रन की मदद से 17.3 ओवर में लक्ष्य हासिल कर लिया। साल्ट एक बार फिर कप्तान जोस बटलर के साथ इंग्लैंड को शानदार शुरूआत दिलाना चाहेंगे।

आस्ट्रेलिया के खिलाफ ग्रुप चरण में मिली हार में 42 रन बनाने वाले बटलर अब तक चार पारियों में 91 रन ही बना सके हैं। जॉनी बेयरस्टो ने वेस्टइंडीज के खिलाफ नाबाद 48 रन बनाकर फॉर्म में वापसी की है। इससे पहले वह कुल 46 रन ही बना सके थे। इंग्लैंड के बल्लेबाजों के सामने हालांकि कगिसो रबाडा की रफ्तार और केशव महाराज की फिरकी का सामना करने की चुनौती होगी। दोनों ने अमेरिका के खिलाफ बीच के और डैथ ओवरों में संयम और अनुशासन के साथ गेंदबाजी करते हुए दक्षिण अफ्रीका को जीत दिलाई।

दक्षिण अफ्रीका के लिए क्विंटोन डिकॉक का फॉर्म में लौटना भी शुभ संकेत है जिन्होंने अमेरिका के खिलाफ 40 गेंद में 74 रन बनाए। इंग्लैंड ने सुपर आठ चरण का पहला मैच यहीं खेला था जिसका उसे फायदा मिलेगा। इंग्लैंड के गेंदबाजों ने भी बेहतरीन प्रदर्शन करते हुए वेस्टइंडीज को 200 रन के भीतर रोक दिया। आदिल रशीद ने 5.25 की इकॉनॉमी रेट से गेंदबाजी की जबकि जोफ्रा आर्चर ने 12 डॉट गेंदें डाली।

भारतीय तीरंदाज विश्व कप में पदक से चूके

ओलंपिक टीम कोटा हासिल करने पर निगाहें

अंताल्या (तुर्की) (एजेंसी)। भारतीय रिकर्व तीरंदाजी टीमों का निराशाजनक प्रदर्शन जारी रहा जिससे दोनों बृहस्पतिवार को यहां विश्व कप के तीसरे चरण में पदक से चूक गयीं लेकिन अपनी विश्व रैंकिंग के आधार पर पेरिस ओलंपिक टीम कोटा हासिल करने के करीब हैं। विश्व कप के तीसरे चरण में भारतीय महिला टीम चौथे स्थान पर रही जबकि पुरुष टीम अंतिम 16 तक पहुंची। अब दोनों टीमों को सोमवार तक का इंतजार करना होगा जब विश्व तीरंदाजी द्वारा रैंकिंग के आधार पर आधिकारिक सूची की घोषणा की जाएगी।

नए नियम के अनुसार रैंकिंग से उन दो शीर्ष देशों को ओलंपिक कोटा दिया जाता है जो ओलंपिक क्वालीफायर के जरिए कोटा हासिल नहीं कर सके। इस विश्व कप से पहले अंताल्या में फाइनल ओलंपिक क्वालीफायर कराया गया था। भारत ने धीरज बोम्मादेवरा और भजन कौर की बदौलत क्रमशः पुरुष और महिला वर्ग का ओलंपिक कोटा हासिल कर लिया है। क्वालीफाई नहीं करने वाले देशों में भारत को शीर्ष दो रैंकिंग में बने रहने के लिए टीम स्पर्धाओं में अच्छा प्रदर्शन करने की जरूरत थी ताकि वे कट हासिल कर सकें।

टीम कोटे से भारत अगले महीने पेरिस ओलंपिक में सभी पांच स्पर्धाओं (पुरुष और महिला टीम, व्यक्तिगत और मिश्रित टीम स्पधा) में हिस्सा लेने में सफल रहेगा। भारतीय पुरुष टीम रैंकिंग में दक्षिण कोरिया के बाद दूसरे नंबर पर है। दक्षिण कोरिया पहले ही क्वालीफाई कर चुका है। भारतीय महिला टीम रैंकिंग में आठवें नंबर पर है जबकि शीर्ष सात देश दक्षिण कोरिया, चीन, जर्मनी, फ्रांस, मेक्सिको, अमेरिका और चीनी ताइपे पहले ही क्वालीफायर से ओलंपिक कोटा हासिल कर चुके हैं।

विश्व कप का तीसरा चरण रैंकिंग के आधार पर क्वालीफाई करने के लिए अंतिम मौका था। भजन कौर, दीपिका कुमारी और अंकिता भकत की महिला तिकड़ी ने यूक्रेन को 5-3 (53-52, 53-54, 57-54, 53-53) से हराया और अपना स्थान पक्का करने के लिए उन्हें एक और जीत की दरकार थी। पर सेमीफाइनल में उन्हें ओलंपिक के मेजबान देश फ्रांस से शूटऑफ में 4-5 (52-59, 56-57, 58-55, 57-53) (25-28) से पराजय मिली। कांस्य पदक के प्लेऑफ में भारतीय तिकड़ी जापान से सीधे सेट में 0-6 (51-55, 53-54, 53-54) से हार गयी। धीरज, तरूणदीप राय और प्रवीण जाधव की पुरुष तिकड़ी प्री क्वार्टरफाइनल में नीदरलैंड से 1-5 (58-58, 53-54, 57-58) से पराजित हुई।

न्यूजीलैंड के लिए खेलना मेरी प्राथमिकता, एसए-20 भी दिलचस्प : केन विलियमसन

वेलिंगटन (एजेंसी)। केन विलियमसन ने कहा है कि अगले साल एसए 20 लीग खेलने के लिए उन्होंने न्यूजीलैंड का केंद्रीय अनुबंध ठुकराया लेकिन उन्होंने यह भी कहा कि इस टी20 लीग से इतर वह न्यूजीलैंड के लिये तीनों प्रारूपों में खेलने के लिए उपलब्ध हैं। एसए 20 नौ जनवरी से आठ फरवरी 2025 के बीच खेली जायेगी और इसी दौरान न्यूजीलैंड में सुपर स्मैश भी होना है।

न्यूजीलैंड के नियमों के अनुसार केंद्रीय अनुबंध वाले खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट नहीं खेलने की दशा में सुपर स्मैश में खेलना अनिवार्य है। विलियमसन ने टी20 विश्व कप के ग्रुप चरण से बाहर होने के बाद स्वदेश लौटने पर मीडिया से कहा, 'मैं जब तक खेल सकता हूं, खेलना चाहता हूं। उस दौरान कई बेहतरीन टूर्नामेंट है लेकिन एसए 20 दिलचस्प लग रहा है। इसके लिए मुझे केंद्रीय अनुबंध ठुकराना होगा।

विलियमसन ने सीमित ओवरों की कप्तानी भी छोड़ दी है लेकिन यह कहा कि अभी उनका अंतरराष्ट्रीय करियर खत्म नहीं हुआ है। उन्होंने कहा, 'मेरी प्राथमिकता न्यूजीलैंड के लिए खेलना है। तीन सप्ताह के दौरान मैं कुछ मैचों से बाहर रह सकता हूं। इसके मायने हैं कि वह जनवरी में श्रीलंका के खिलाफ वनडे और टी20 श्रृंखला नहीं खेलेंगे। वह हालांकि सितंबर में अफगानिस्तान के खिलाफ टेस्ट के लिए उपलब्ध होंगे।

इसके साथ ही भारत और श्रीलंका के खिलाफ डब्ल्यूटीसी टेस्ट और इंग्लैंड के खिलाफ तीन मैचों की श्रृंखला खेलेंगे। उन्होंने कहा, 'मैने न्यूजीलैंड की कप्तानी का पूरा मजा लिया है। मैं काफी उत्सुक हूं कि आने वाले समय में टीम नए कप्तान के साथ कैसा करती है और मैं भी उसका हिस्सा बना रहूंगा। 33 बरस के विलियमसन ने अपने करियर को लेकर कोई समय सीमा तय करने से इनकार करते हुए कहा, 'अभी कहना मुश्किल होगा। मैं फिट और फॉर्म में रहना चाहता हूं, प्रदर्शन में सुधार करते रहना चाहता हूं। जब तक मैं योगदान दे सकता हूं, इस टीम का हिस्सा बने रहना चाहूंगा।

साल्ट ने इस खिलाड़ी को दिया धमाकेदार पारी का श्रेय, कहा- उन्होंने मुझ पर से दबाव हटा दिया

न्यूयार्क (एजेंसी)। फिल साल्ट के 47 गेंद में नाबाद 87 रन की मदद से गत चैम्पियन इंग्लैंड ने टी20 विश्व कप सुपर आठ चरण के अपने पहले मैच में सह मेजबान वेस्टइंडीज को आठ विकेट से हराया। साल्ट ने अपनी धमाकेदार पारी का श्रेय साथी जॉनी बेयरस्टो को दिया जिन्होंने उन पर से दबाव हटा दिया जिससे उन्हें मैदान पर खुलकर खेलने का मौका मिला।

मैच के बाद साल्ट ने कहा, एक समय ऐसा भी था जब मैंने बहुत अधिक गेंदों का सामना नहीं किया, बाउंड्री सूख गई थी, लेकिन जॉनी (बेयरस्टो) ने अपनी सोची-समझी बल्लेबाजी से मुझ पर से दबाव हटा दिया, उनकी पारी बहुत महत्वपूर्ण थी। सलामी बल्लेबाज ने बताया कि बीच के ओवरों में स्पिनरों के खिलाफ खेलना थोड़ा मुश्किल था। साल्ट ने 16वें ओवर में रोमारियो शेफर्ड के खिलाफ 4, 6, 4, 6, 6 और 4 रन बनाए। उन्होंने कहा, मुझे यहां बल्लेबाजी करना पसंद है, लेकिन मैं टीम की जीत में योगदान देकर अधिक खुश हूं। बीच के ओवरों में स्पिन के खिलाफ खेलना मुश्किल था, लेकिन मुझे पता था कि किसी समय गति आएगी, एक छोर पर हवा चल रही थी, एक छोटी बाउंड्री थी और मैंने खुद को उनका सामना करने के लिए तैयार किया (शेफर्ड के खिलाफ उनके 30 रन के ओवर में)।

वेस्टइंडीज की टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में आठ मैचों की जीत का सिलसिला खत्म हो गया क्योंकि इंग्लैंड ने हर विभाग में शानदार प्रदर्शन किया। शानदार डेथ बॉलिंग के साथ वेस्टइंडीज को 180 रनों पर रोकने के बाद इंग्लैंड के सलामी बल्लेबाजों ने 67 रनों की ओपनिंग साझेदारी करके टीम को मजबूत शुरुआत दिलाई।

टी-20 वर्ल्ड कप

फिल साल्ट की आक्रामक पारी से बने कई रिकॉर्ड्स

न्यूयार्क (एजेंसी)। फिल साल्ट के 47 गेंद में नाबाद 87 रन की मदद से गत चैम्पियन इंग्लैंड ने टी20 विश्व कप सुपर आठ चरण के अपने पहले मैच में सह मेजबान वेस्टइंडीज को बृहस्पतिवार को आठ विकेट से हराया। अफगानिस्तान को आखिरी ग्रुप मैच में हराने वाली वेस्टइंडीज टीम ने पहले बल्लेबाजी के लिए भेजे जाने पर चार विकेट पर 180 रन बनाए लेकिन जवाब में इंग्लैंड की टीम ने ग्रुप दो के मैच में 17 . 3 ओवर में ही दो विकेट पर 181 रन बना लिए। साल्ट ने अपनी आक्रामक पारी में सात चौके और पांच छक्के लगाए। वहीं जॉनी बेयरस्टो ने 26 गेंद में नाबाद 48 रन जोड़े जिसमें पांच चौके और दो छक्के शामिल थे। इंग्लैंड ने इस मैच में दो-चार नहीं बल्कि चार रिकॉर्ड अपने नाम किए। आइए इस रिकॉर्ड्स पर नजर डाल लेते हैं-

टी20 विश्वकप में इंग्लैंड की सबसे बड़ी जीत का अंतर (विकेट के हिसाब से)

- भारत के खिलाफ 10 विकेट से, एडिलेड, 2022 एस.एफ.
- ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ 8 विकेट से, दुबई, 2021
- बांग्लादेश के खिलाफ 8 विकेट से, अबू धाबी, 2021
- ओमान के खिलाफ 8 विकेट से, नॉर्थ साउंड, 2024
- वेस्टइंडीज के खिलाफ 8 विकेट से, ग्रॉस आइलेट, 2024

टी20 में फिल साल्ट बनाम वेस्टइंडीज

इन्स- 9
रन- 478
औसत- 68.28
एसआर- 186.71
50/100- 2/2
चौके/छक्के- 34/32

वेस्टइंडीज के खिलाफ टी20 में साल्ट ने लगभग हर चार गेंदों पर एक चौका या छक्का लगाया है।

इंग्लैंड के बल्लेबाज द्वारा किसी प्रतिद्वंद्वी के खिलाफ सबसे अधिक छक्के (टी20आई)

32 - फिल साल्ट बनाम वेस्टइंडीज
26 - इयोन मोर्गन बनाम न्यूजीलैंड
25 - जोस बटलर बनाम ऑस्ट्रेलिया
24 - जोस बटलर बनाम दक्षिण अफ्रीका

इंग्लैंड बनाम वेस्टइंडीज टी20आई में सबसे अधिक रन

478 - फिल साल्ट (9 पारी)
423 - एलेक्स हेल्स (13 पारी)
422 - क्रिस गेल (14 पारी)
420 - निकोलस पूरन (15 पारी)
390 - जोस बटलर (16 पारी)

टी20 विश्व कप में इंग्लैंड के लिए सर्वोच्च व्यक्तिगत स्कोर

116* - एलेक्स हेल्स बनाम स्रु चटगाँव, 2014
101* - जोस बटलर बनाम स्रु शारजाह, 2021
99* - ल्यूक राइट बनाम अफगानिस्ता , कोलंबो आरपीएस, 2012
87* - फिल साल्ट बनाम वेस्टइंडीज ग्रोस आइलेट, 2024
86* - एलेक्स हेल्स बनाम भारत, एडिलेड, 2022

टी20 अंतरराष्ट्रीय मैचों में वेस्टइंडीज के लिए सबसे लंबी जीत का सिलसिला

8 - 2024 (आज यह सिलसिला खत्म हुआ)
7 - 2012-2013
5 - 2017
4 - 2015-2016

पुरुषों के टी20 विश्व कप में सबसे महंगा ओवर

36 - स्टुअर्ट ब्रॉड (इंग्लैंड) बनाम भारत, डरबन, 2007
36 - अजमतुल्लाह उमरजई (अफगानिस्तान) बनाम वेस्टइंडीज, ग्रोस आइलेट, 2024
33 - जेरेमी गॉर्डन (कनाडा) बनाम अमेरिका, डलास, 2024
32 - इज़ातुल्लाह दौलतजई (अफगानिस्तान) बनाम इंग्लैंड, कोलंबो (आरपीएस), 2012
30 - बिलावल भट्टी (पाकिस्तान) बनाम ऑस्ट्रेलिया, मीरपुर, 2014
30 - रोमारियो शेफर्ड (वेस्टइंडीज) बनाम इंग्लैंड, ग्रोस आइलेट, 2024

बुमराह का मुरीद हूं, उसे अपने एक्शन में किसी बदलाव की जरूरत नहीं:एम्बरोज

ब्रिजटाउन (एजेंसी)। वेस्टइंडीज के महान तेज गेंदबाज कर्टली एम्बरोज भारत के जसप्रीत बुमराह के प्रशंसक हैं और वह नहीं चाहते कि अपने गैर पारंपरिक गेंदबाजी एक्शन में बुमराह कोई भी बदलाव करे क्योंकि उनका मानना है कि हर तेज गेंदबाज चोटिल होने के जोखिम के साथ ही मैदान पर उतरता है।

इस समय दुनिया के सर्वश्रेष्ठ तेज गेंदबाजों में शुमार बुमराह ने पिछले साल मार्च में कमर की तकलीफ के कारण सर्जरी कराई थी। लंबे रिहैबिलिटेशन (स्वास्थ्य लाभ) के बाद उन्होंने नवंबर में भारत में वनडे विश्व कप के जरिए वापसी की और तब से शानदार फॉर्म में हैं।

एम्बरोज ने कहा कि गंभीर चोट नहीं होने की दशा में बुमराह को अपने एक्शन में कोई बदलाव नहीं करना चाहिए। उन्होंने कहा, 'मैं जसप्रीत बुमराह का बड़ा प्रशंसक हूं। जब से मैने उसे पहली बार देखा है। वह गैर पारंपरिक गेंदबाज है लेकिन बेहद प्रभावी है और मुझे यही पसंद है। उसने भारत के लिए सभी प्रारूपों में अच्छा प्रदर्शन किया है। उन्होंने कहा, 'मैं कुछ साल पहले उससे मिला था जब भारतीय टीम एंटीगा में खेल रही थी। उसकी गेंदबाजी देखने में मजा आता है क्योंकि वह इतना अलग है।

बुमराह के गेंदबाजी एक्शन से उनकी कमर पर काफी दबाव पड़ता है लेकिन एम्बरोज का मानना है कि हर तेज गेंदबाज को इस तरह के जोखिम से गुजरना पड़ता है। उन्होंने कहा, 'मेरा अनुभव यही है कि दो गेंदबाज कभी एक जैसे नहीं होते। गेंदबाजों में समानता हो सकती है लेकिन वे बिल्कुल एक से नहीं होते। सभी की शैली जुदा होती है। हर तेज गेंदबाज को चोटिल होने का खतरा रहता है और यह सभी को पता होता है।

उन्होंने कहा, 'आपको अपना काम पूरी क्षमता के साथ करना होता है। फिर जो होगा, होगा। अगर उसे कोई गंभीर चोट लगती है तो ही उसे अपने एक्शन में बदलाव करना चाहिए। एम्बरोज ने यह भी कहा कि अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट काफी खेला जाने लगा है जिसका खेल पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ रहा है। उन्होंने कहा, 'अब खेल का व्यवसायीकरण हो गया है। इतना ज्यादा क्रिकेट खेला जा रहा है। एक श्रृंखला के बाद दूसरी श्रृंखला और फ्रेंचाइजी क्रिकेट अलग। यह रोमांचक है लेकिन इतना ज्यादा क्रिकेट चिंता का विषय है।

एम्बरोज ने सीमित ओवरों की क्रिकेट भी काफी खेली है लेकिन उनका मानना है कि लीजैंड टेस्ट क्रिकेट से ही निकलते हैं। उन्होंने कहा, 'मैने हमेशा टेस्ट क्रिकेट को तरजीह दी है। मैने वनडे और चार दिवसीय क्रिकेट भी खेला है लेकिन मेरे लिए वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट नहीं है। टेस्ट क्रिकेट ही असली क्रिकेट है। अपने करियर के आखिर में आप लीजैंड तभी कहलाएंगे जब आपने टेस्ट क्रिकेट में अच्छा किया हो।

गर्मियों में फटाफट बाथरूम की सफाई के लिए अपनाएं ये हैक्स

अगर आपको भी गर्मी के मौसम में साफ-सफाई का काम करने में काफी परेशानी होती है, तो आप यहां बताए गए क्लिनिंग हैक्स को फॉलो कर फटाफट काम निपटा सकती हैं।

गर्मी में अगर कोई घर में साफ-सफाई करने को कह दे, तो मानो आफत ही आ जाती है। खासकर बाथरूम की सफाई में तो बारिकियों से काम करना पड़ता है। अगर आपको भी गर्मी के मौसम में बाथरूम की सफाई करना एक मुश्किल काम लगता है, तो तो अब आपको ज्यादा परेशान होने की जरूरत नहीं है। आज हम आपको कुछ ऐसे हैक्स और टिप्स बताएंगे, जिसकी मदद से आप गर्मियों में भी फटाफट काम निपटा सकती हैं।

बाथरूम को साफ करने के लिए सबसे पहले करें प्लान

बाथरूम को साफ करने के लिए आपको चाहिए कि आप सबसे पहले प्लानिंग कर लें कि आपको सबसे पहले किस चीज की सफाई करनी है, क्योंकि बाथरू में बहुत सारी चीजें होती हैं, जिसे साफ करना होता है। ऐसे में अपनी सुविधा अनुसार काम जल्दी निपटाने की टेकनीक अपना सकती हैं।

बाथरुम की सफाई में शॉवर क्लीनर का करें उपयोग

बाथरुम में आप शॉवर क्लीनर का उपयोग करके फर्श और दीवारों को तेजी से और आसानी से साफ कर सकती हैं। आपको बार-बार मग या किसी बर्तन में पानी भरने और उसमें से निकालने की जरूर भी नहीं पड़ेगी।

बाथरूम के शीशे को करें साफ

बाथरूम में सबसे जल्दी साफ होने वाला एक मात्र चीज शीशे ही होते हैं। इसलिए, ऐसी चीजों की सफाई सबसे पहले करें। इसके लिए आप माइक्रोफाइबर कपड़े और सफाई करने वाले स्प्रे का इस्तेमाल कर सकते हैं।

सिंक और बाथटब को इस तरीके से करें क्लीन

सिंक और बाथटब को तेजी से साफ करने के लिए एक हल्फ डिटर्जेंट और गर्म पानी का यूज कर सकती हैं। इसमें ज्यादा गंदगी बैठ गई है, तो इसे रगड़ने के लिए स्पंज या ब्रश का उपयोग कर सकती हैं।

बाथरुम के फर्श को फटाफट ऐसे करें साफ

गर्मी में फास्ट और अच्छे से बाथरूम के फर्श को साफ करने के लिए आप डिटर्जेंट और गर्म पानी का उपयोग कर सकती हैं। फर्श को पोछने के लिए मोप का इस्तेमाल कर सकती हैं।

टॉयलेट की सफाई में लें क्लीनर की मदद

बाथरुम की सफाई कर रही हैं, तो जाहिर सी बात है, कि टॉयलेट की सफाई की तो जरूरत पड़ेगी ही। पर गर्मी में झटपट काम निपटाने के लिए टॉयलेट क्लीनर की मदद ले सकती हैं। यह साफ करने का एक प्रभावी तरीका है।

इंश्योरेंस लेने से पहले इन बातों का रखें ध्यान

इंश्योरेंस खरीदने से पहले कई प्रकार की बातों का ध्यान का रखना चाहिए जैसे कि आप किस प्रकार का बीमा करवाना चाहते हैं। इसके अलावा क्या इसका चयन आपके लिए बेहतर साबित होगा।

लाइफ को बेहतर बनाने के लिए अक्सर लोग बीमा करवाने का रूख करते हैं ताकि किसी भी प्रकार की अनहोनी होने वाली स्थितिओं से सुरक्षित रह सकें। इसके अलाव उस दौरान उन्हें फाइनेंशियल सपोर्ट मिल सकें। वैसे तो कई प्रकार की बीमा योजनाएं जैसे लाइफ इंश्योरेंस, हेल्थ, ट्रेवल और कार इंश्योरेंस शामिल है। इन सभी चीजों का इंश्योरेंस कराना भविष्य के लिए फायदेमंद साबित होता है। इससे जुड़ी जरूरते हर इंसान के लिए अलग-अलग होती है लेकिन उसे किस कराते समय किन बातों का ध्यान रखना है यह सामान होता है। हालांकि बाजार में तमाम प्रकार के बीमा प्रोडक्ट मौजूद होने के साथ इसके साथ होने वाले कागजी कार्रवाई कभी ताम-झाम भरी होती है। ऐसे में लोग इंश्योरेंस का सही चुनाव नहीं कर पाते हैं।

इंश्योरेंस करवाते समय रखें इन बातों का ध्यान

जैसा कि हमने ऊपर आपको बताया कि बीमा कई प्रकार के होते हैं। हम अपनी जरूरत के हिसाब से इसे कराना पसंद करते हैं। बता दें, कि जिस प्रकार से बीमा कई प्रकार के होते हैं उसी प्रकार से इंश्योरेंस कंपनिया भी कई प्रकार की होती है। ऐसे में सही इंश्योरेंस प्लान का चुनाव करना बहुत जरूरी होता है। अगर आप बीमा खरीदने का प्लान कर रहे है, तो कुछ खास बातों का ख्याल रखना बहुत जरूरी होता है।

कंपनी का करें सही चयन

बीमा करवाते समय यह ध्यान रखें कि आप किस कंपनी से इंश्योरेंस पॉलिसी ले रहे हैं। कंपनी पर रिसर्च करके उसका चुनाव करें। उस कंपनी से बीमा करवाएं, जिसका पुराना रिकॉर्ड अच्छा रहा हो। इसके साथ ही यह भी तय करें कि आप किस प्रकार का इंश्योरेंस करवाना चाहते हैं। उस बीमा पॉलिसी से जुड़ी हर एक प्रकार की जानकारी के बारे में कंपनी से बात करें।

कवर राशि का रखें ध्यान

अक्सर हम भविष्य की सुरक्षा और सेफ्टी के लिए बीमा करवाते हैं। ऐसे में आप इसे खरीदते समय यह ध्यान रखें कि वह प्लान आपकी जरूरतों को पूरा करता है या नहीं। कई बार या तो बहुत कम राशि वाला बीमाकरवाते या फिर बहुत ज्यादा वाला। लेकिन इसे करवाते समय इस बात का खास ख्याल रखें कि आप कितने का बीमा करवाएंगे तो आपको फायदा होगा। अपने बजट को देखते हुए प्लान को चुनें।

उम्र का रखें खास ख्याल

बीमा करवाते समय यह भी मायने रखता है कि आप किस उम्र से बीमा करवा रहे हैं। वैसे आमतौर पर 80-85 साल तक का बीमा प्लान मौजूद होता है। हालांकि उस वक्त तक बीमा की जरूरत नहीं होती है। ऐसे में आप एक सही उम्र तक के लिए बीमा करवाएं।

ये सवाल, जो आप किसी भी कंपनी से पूछ सकते हैं -

- क्या पॉलिसी में कोई छूट उपलब्ध है?
- क्या पॉलिसी में कोई अलग से फायदा है?
- क्या पॉलिसी को ऑनलाइन या किसी एजेंट के माध्यम से खरीदा जा सकता है?
- एक ही पॉलिसी के लिए अलग-अलग कंपनियों के बीच प्रीमियम में काफी अंतर हो सकता है, इसलिए अंतर के बारे में जरूर जान लें।
- आपको किस प्रकार का पॉलिसी कवरेज चाहिए? आप कितना भुगतान करने को तैयार हैं? बजट के अनुसार आप इंश्योरेंस खरीद सकते हैं।
- इंश्योरेंस कंपनी से बात करते समय, आपके सभी सवालों के जवाब देने के लिए एजेंट को समय निकालने के लिए कह सकते हैं। यह आपको इंश्योरेंस पॉलिसी को समझने और सही निर्णय लेने में मदद कर सकता है। इंश्योरेंस लेने से पहले कंपनी से ये सवाल पूछने पर नुकसान होने का खतरा कम हो सकता है, इस मामले पर एक्सपर्ट क्या कहते हैं?

इंश्योरेंस पॉलिसी खरीदते समय इन सवालों के जवाब जरूर लें

- आपको यह तय करना होगा कि आप किस प्रकार की इंश्योरेंस पॉलिसी खरीदना चाहते हैं, जैसे कि जीवन बीमा, स्वास्थ्य बीमा, गाड़ी बीमा या किसी अन्य प्रकार की इंश्योरेंस।
- आपको यह भी तय करना होगा कि आपको कितना कवर चाहिए, अर्थात आपको कितनी इंश्योरेंस राशि की आवश्यकता है।
- आपको पॉलिसी की प्रीमियम की जानकारी होनी चाहिए, जिससे आपको पॉलिसी की कीमत और भुगतान की तारीख का पता चल सकें।
- आपकी खास जरूरतों के आधार पर बनाई गई पॉलिसी की जानकारी होनी चाहिए, जैसे कि क्या आपको मेडिकल कवर चाहिए, किस प्रकार की गाड़ी बीमा आवश्यक है, आदि।
- पॉलिसी के रिन्यू प्रोसेस के बारे में जानकारी होनी चाहिए, जैसे कि पॉलिसी को कितने साल के लिए खरीदा गया है और क्या आपको नियमित अंतरालों में प्रीमियम भुगतान करना होगा।
- आपको यह देखना होगा कि आपकी इंश्योरेंस कंपनी विश्वासी है और उसका प्रिडिक्टिव रिटर्निंग क्या है।
- आपको यह जानकारी होनी चाहिए कि क्लेम प्रक्रिया क्या है और कैसे क्लेम दर्ज किया जाता है।
- आपको यह देखना होगा कि पॉलिसी मे छुट्टियों की विशेष शर्तें क्या हैं और कैसे वे कार्य करती हैं।
- आपको यह जानकारी होनी चाहिए कि आप स्वयं से पॉलिसी को कैसे रद्द कर सकते है।

इंश्योरेंस लेने से पहले कंपनी से जरूर पूछें ये सवाल वर्ना होगा नुकसान

इंश्योरेंस एक बेहतर वित्तीय निर्णय हो सकता है। अपने विकल्पों को समझने और सही पॉलिसी चुनने के लिए आप इन तरीकों का पालन कर सकते हैं।

इंश्योरेंस आपको वित्तीय तौर पर सुरक्षित महसूस करने में मदद कर सकता है। अगर आपके साथ कोई दुर्घटना या आपदा होती है, तो इंश्योरेंस कंपनी आपको मुआवजा दे सकती है। इससे आपको अपने खर्चों को कवर करने और आपको फिर से काम शुरू करने में मदद मिल सकती है। क्योंकि, इंश्योरेंस आपको अपने परिवार के लिए वित्तीय सुरक्षा प्रदान कर सकता है। अगर आपके साथ किसी तरह का हादसा हो जाता है, तो आपका जीवन बीमा आपके परिवार को वित्तीय सहायता प्रदान कर सकता है। इससे उन्हें अपने जीवन को सुगम बनाए रखने में मदद मिल सकती है।

कुछ प्रकार के इंश्योरेंस आपको टैक्स में लाभ दे सकते हैं। उदाहरण के लिए, आप अपने जीवन बीमा प्रीमियम पर टैक्स के छूट का दावा कर सकते हैं। वहीं कुछ ऐसे प्रकार के इंश्योरेंस में अन्य लाभ भी शामिल हो सकते हैं, जैसे कि चिकित्सा बीमा में शामिल यात्रा चिकित्सा सहायता। इंश्योरेंस एक बेहतर वित्तीय निर्णय हो सकता है। अपने विकल्पों को समझने और सही पॉलिसी चुनने के लिए आप इन तरीकों का पालन कर सकते हैं।

पटियाला सूट के साथ इन इयररिंग्स को करें वियर, लगेंगी खूबसूरत

अगर आप पटियाला सूट पहन रही हैं और इसके साथ स्टाइल करने के लिए इयररिंग्स सर्च कर रही हैं तो ये डिजाइन आपको पसंद आ सकते हैं।

कई लड़कियां होती हैं जिन्हें अलग - अलग तरीके के सूट पहनने पसंद होते हैं। पटियाला सूट लड़कियों को पहनना काफी पसंद होता है। इसमें वो कई तरह के डिजाइन को ट्राई करती हैं। इसमें भी आजकल अलग-अलग तरह के डिजाइन देखने को मिलते हैं। जिन्हें हर कोई अपने तरीके से स्टाइल करता है। लेकिन लुक तब परफेक्ट बनता है आप इयररिंग्स को स्टाइल करती हैं। इसके लिए अलग-अलग डिजाइन वाले इयररिंग्स को ट्राई कर सकती हैं। जिसके डिजाइन ऑप्शन हम आपको बताएंगे ताकि आपका लुक परफेक्ट लगे।

झुमकियां

अगर आपको कुछ सिंपल और सोबर पहनने का मन है तो इसके लिए आप झुमकियां ट्राई कर सकती हैं। इन्हें आप पटियाला सूट के साथ स्टाइल कर सकती हैं। इसमें आप डोम स्टाइल झुमकियां भी ट्राई कर सकती हैं, साथ ही चेन स्टाइल झुमकियां भी आप ट्राई कर सकती हैं। इस तरह की झुमकियां पहनने के बाद आपका लुक बिल्कुल ट्रेडिशनल लगेगा। इसके कलर और डिजाइन आपको मार्केट और ऑनलाइन मिल जाएंगे।

चांद बालियां

कई सारी महिलाएं होती हैं जो ट्रेडिशनल लुक को काफी पसंद करती हैं। इसलिए वो सूट के साथ भी एंटीक या फिर ट्रेडिशनल ज्वेलरी पहनना पसंद करती हैं। अगर आपको भी पसंद है इस तरह की ज्वेलरी तो इस बार पटियाला सूट के साथ चांद बालियों को ट्राई करें इस तरह के इयररिंग्स डिजाइन काफी खूबसूरत लगते हैं साथ ही स्टाइल करने के बाद आपके लुक में चार चांद लगा देते हैं। इसमें आप गोल्ड, सिल्वर और स्टोन वर्क चांद बाली ट्राई कर सकती हैं।

हूप्स इयररिंग्स

अगर आपको सिंपल हूप्स पहनना पसंद है तो इसके लिए आप झुमकी के साथ हूप्स इयररिंग्स डिजाइन को स्टाइल कर सकतीहैं। इस तरह के इयररिंग्स के डिजाइन आपको ऑनलाइन और मार्केट में आसानी से मिल जाते हैं। इनकी खास बात ये होती है कि अगर आपका पटियाला सूट हैवी है तो इस तरीके के इयररिंग्स को स्टाइल कर सकती हैं ये दिखने में और पहनने में सिंपल होते है और अच्छे लगते हैं।

स्टड इयररिंग्स

अगर आपको टॉप्स स्टाइल में इयररिंग्स पहनने पसंद है तो इस तरह के स्टड डिजाइन को ट्राई कर सकती हैं। ये दिखने में सिंपल होते हैं साथ ही पहनने के बाद काफी अच्छे लगते हैं। पटियाला सूट के साथ भी आप इन्हें स्टाइल कर सकती हैं। डिजाइन और कलर पैटर्न आपको ऑनलाइन और मार्केट में मिल जाएंगे।

संक्षिप्त समाचार

ऑस्ट्रेलिया में सख्त नियंत्रण के बावजूद बर्ड फ्लू का प्रकोप बढ़ा, मारे जाएंगे 10 लाख पक्षी

मेलबर्न , एजेंसी। ऑस्ट्रेलिया में मई में शुरू हुआ बर्ड फ्लू का प्रकोप लगातार बढ़ता जा रहा है। मेलबर्न के सातवें विक्टोरियन फार्म में वायरस का पता चलने के बाद देश इस वायरस के सबसे बड़े प्रकोप का सामना कर रहा है। यह प्रकोप मई में शुरू हुआ और सख्त नियंत्रण उपायों के बावजूद फैलता रहा। सभी

प्रभावित फार्मों में या तो एच7एन3 या एच7एन9 स्ट्रेन हैं, जो अमेरिका में मवेशियों और पक्षियों को प्रभावित करने वाले एच7एन1 प्रकार के बर्ड फ्लू से अलग हैं। सातवें विक्टोरियन फार्म में बर्ड फ्लू का पता चलने के बाद 10 लाख से ज़्यादा पक्षियों को मार दिया जाएगा। ऑस्ट्रेलिया में बर्ड फ्लू का सबसे बड़ा प्रकोप भयावह साबित हुआ है। विक्टोरियन अधिकारियों ने पुष्टि की है कि वायरस के प्रसार को रोकने के लिए 1 मिलियन यानि 10 लाख से अधिक पक्षियों को मारा जाएगा। दक्षिण-पश्चिम विक्टोरिया के सात फार्मों में एवियन इन्फ्लूएंजा के अत्यधिक रोगजनक उपभेद पाए गए हैं, जिससे सैकड़ों हज़ारों पक्षी प्रभावित हुए हैं। यह प्रकोप मई में मेरेडिथ के पास एक अंडा फार्म से शुरू हुआ था, और इस क्षेत्र में फैलता रहा है क्योंकि स्थानीय किसान ऑस्ट्रेलिया की कठोर वास्तविकता का सामना कर रहे हैं।

ईरान की सेना को बड़ा झटका, कनाडा की सरकार ने इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड को आतंकी संगठन घोषित किया

ओटावा, एजेंसी। कनाडा की सरकार ने ईरान को बड़ा झटका देते हुए उसके सशस्त्र बल के एक अहम निकाय इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स को आतंकी संगठन घोषित कर दिया। कनाडा के सार्वजनिक सुरक्षा मामलों के मंत्री डोमिनिक लीब्लांक ने सरकार के फैसले का एलान किया। एक प्रेस विज्ञप्ति में कनाडा की सरकार ने कहा कि इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स (आईआरजीसी) के

कृत्यों और तथ्यों के आधार पर यह मानने के पर्याप्त कारण हैं कि ईरान की सेना आतंकी गतिविधियों में लिप्त है। वह जानबूझकर किसी के साथ मिलकर या किसी के निर्देश पर आतंकी गतिविधियों को अंजाम दे रहे हैं। ऐसे में आईआरजीसी को आतंकी संगठन घोषित किया जाता है।

आईआरजीसी की संपत्ति होगी जब्त- कनाडा की सरकार का कहना है कि क्रिमिनल कोड के तहत आईआरजीसी को आतंकी संगठन घोषित करने से कनाडा सख्त संदेश देगा कि कनाडा की सरकार आतंकी गतिविधियों से निपटने के लिए हर औजार का इस्तेमाल करेगी। कनाडा ने ये भी कहा कि ईरान की सेना का आतंकी संगठनों हिजबुल्ला और हमास के साथ भी नाता है। कनाडा ने कहा कि इस्लामिक रिवोल्यूशनरी गार्ड कॉर्प्स को आतंकी संगठन घोषित करने का मतलब ये होगा कि कनाडा के वित्तीय संस्थान जैसे बैंक और ब्रोकरेज फर्म आदि आईआरसीजी से जुड़ी संपत्ति को जब्त करेंगे। साथ ही किसी भी व्यक्ति या संस्था का आईआरजीसी से कोई भी समझौता या संबंध अपराध माना जाएगा।

ट्रूडो के पिता ने भी दिया आतंकियों को सेफ हेवन, कनाडा को 40 साल पहले ही बना दिया था खालिस्तानियों का ठिकाना

ओटावा , एजेंसी। कनाडा की भारत विरोधी गतिविधियां दोनों देशों के बीच संबंधों को तनावपूर्ण बना रही हैं। कुछ समय पहले कनाडा ने अपने यहां मारे गए आतंकी हरदीप सिंह निज्जर की हत्या का आरोप भारत पर लगाकर इस तनाव को और बढ़ा दिया। अब कनाडाई संसद में इ आतंकी निज्जर की पहली बरसी पर दो मिनट का मौन रखा गया जो एक तरह का इशारा है कि भारत में जिसे आतंकी माना जाएगा, वे वहां शहीद कहलाएगा। कनाडा सरकार का खालिस्तानी आंतकियों से रिश्ता कई दशकों से चला आ रहा है ।

दरअसल इस मामले में कनाडाई प्रधानमंत्री जस्टिन ट्रूडो अपने पिता पियरे ट्रूडो के नक्शे-कदम पर चल रहे हैं। दो बार देश के लीडर रह चुके पियरे ने जब दूसरी बार पद संभाला, तब भारत में खालिस्तानी आंदोलन सिर उठा रहा था। भारत की सख्ती से डरे हुए चरमपंथी कनाडा भागने लगे क्योंकि ये उनके लिए सेफ हेवन था, क्योंकि कनाडा में पहले से ही उनकी कम्युनिटी राजनीति से लेकर स्थानीय तौर पर भी पैठ बना चुकी थी। पंजाब में आतंक मचाए इन लोगों को रोकने के लिए सरकार कई कदम उठा रही थी। इसी दौर में ऑपरेशन ब्लू स्टार हुआ। अलगाववादी इसके बाद दल के दल कनाडा चले गए और वहीं से खौफनाक हमले की योजना तैयार की। कनिष्क प्लेन ब्लास्ट में 329 लोगों की मौत को ऑपरेशन ब्लू स्टार की जवाबी कार्रवाई की तरह देखा गया. हालांकि कनाडा सरकार ने पूरे मामले पर लीपापोती कर दी थी।

23 जून 1985 को एयर इंडिया का विमान मांट्रियल से मुंबई आ रहा था, जिसे आयरलैंड के समुद्र के ऊपर 31 हजार फीट पर बम से उड़ा दिया गया । घटना में सभी 329 लोगों की मौत के बाद मामला तब गरमाया, जब इसके खालिस्तानी कनेक्शन सामने आया ।ऑपरेशन ब्लू स्टार का बदला लेने के लिए ही एक्सट्रीमिस्ट्स ने विमान में बम रखा था। भारत ने कई बार मामले की जांच करवानी चाही, लेकिन कनाडा ढील देता रहा। यहां तक कि भारत सरकार ने जब खुद जांच करनी चाही तो कनाडा ने कानूनी अड़चनें पैदा कीं।

इकनॉमिक टाइम्स ने सीनियर कनाडाई पत्रकार टैरी मिलेव्स्की की किताब ब्लड फॉर ब्लड- फिफ्टी ईयर्स ऑफ ग्लोबल खालिस्तान प्रोजेक्ट के हवाले से बताया है कि परमार खुलेआम कहता था कि भारतीय विमान हवा में टपकेंगे। जब अलगाववादी भारत को नुकसान पहुंचाने की योजना बना रहे थे, तत्कालीन ट्रूडो सरकार आराम से बैठी रही। ये जस्टिन ट्रूडो के पिता पियरे ट्रूडो का दौर था। 9/11 के बाद दुनिया का सबसे बड़ा आतंकी हमला कनिष्क ब्लास्ट में केवल एक खालिस्तानी आतंकवादी तलविंदर सिंह परमार को कुछ समय के लिए सजा हुई, बाद में उसे भी आरोप मुक्त कर दिया गया।

अमेरिका ने चीनी नागरिकों पर कसी नकेल, फ्लोरिडा में ग्रीन कार्ड बिना संपत्ति खरीद पर लगाया प्रतिबंध

न्यूयार्क , एजेंसी। अमेरिकी राज्य फ्लोरिडा ने अमेरिकी ग्रीन कार्ड के बिना चीनी नागरिकों के राज्य में संपत्ति खरीदने पर प्रतिबंध लगाने वाले कानून पर हस्ताक्षर किए हैं, जिससे वे इस कानून से नाराज हैं। यह कानून अमेरिकी राष्ट्रपति चुनाव वर्ष में दुनिया की दो सबसे बड़ी अर्थव्यवस्थाओं के बीच बढ़ते तनाव को रेखांकित करता है, इन नियमों ने राज्य में रहने वाले जातीय चीनी लोगों के बीच बेचैनी और भ्रम को बढ़ावा दिया है। कुछ लोगों का कहना है कि इस कानून ने उनके व्यवसायों को नुकसान पहुंचाया है, जबकि अन्य का कहना है कि वे फ्लोरिडा को पूरी तरह से छोड़ने पर विचार कर रहे हैं।

31 वर्षीय सॉफ्टवेयर इंजीनियर बियान 12 साल से अमेरिका में रह रहा है और एच-1बी वीजा का प्राप्तकर्ता है। वह कंपनियों को विदेशी श्रमिकों को नियुक्त करने की अनुमति देता है, को बताया गया कि इस निर्णय से उसे जेल हो सकती है। बियान, जो मूल रूप से नानजिंग, चीन से हैं, ने कहा, यह मेरे लिए वास्तव में चौंकाने वाला था। यह सिर्फ संपत्ति खरीदना है। एक बार जब मुझे यह पता चला, तो मैंने और देखने की जहमत नहीं उठाई। 1 जुलाई, 2023 को फ्लोरिडा सीनेट बिल 264 के प्रभावी होने के बाद

से, ग्रीन कार्ड के बिना चीनी नागरिकों पर राज्य में संपत्ति खरीदने पर एक गंभीर आरोप और संभावित जेल की सजा का सामना करना पड़ सकता है। विक्रेता और रियल एस्टेट एजेंट भी कानून के तहत उत्तरदायी पाए जा सकते हैं।

बियान ने कहा कि उन्होंने हाल ही में फ्लोरिडा में अपने जीवन पर पुनर्विचार करना शुरू किया है, और वे अकेले नहीं हैं। कानून विशेष रूप से किसी भी व्यक्ति द्वारा अचल संपत्ति की खरीद या अधिग्रहण पर प्रतिबंध लगाता है जो चीन में रहता है और जो मेरिका का नागरिक या वैध स्थायी निवासी नहीं है। लेकिन निवासी शब्द कानून की भाषा में पूरी तरह से परिभाषित नहीं है।चीन में जन्मे और फ्लोरिडा एशियाई अमेरिकी न्याय गठबंधन के अध्यक्ष इको किंग ने कहा, हमें लगता है कि इस तरह के कानून के कारण हम बाकी सभी से अलग हैं। हमें लगता है कि हमारा स्वागत नहीं है। फ्लोरिडा के ऑरलैंडो में 47 वर्षीय एक छोटे व्यवसाय की मालिक सुसान ली, जिनके पास ग्रीन कार्ड है, ने कहा कि जब उन्हें इस बिल के बारे में पता चला तो उन्हें वास्तव में भेदभाव महसूस हुआ। बियान की तरह, ली भी कानून पारित होने के समय एक नया घर खोज रही थी। इस तथ्य के बावजूद कि वह अमेरिका की एक कानूनी निवासी है, उसके परिवार ने संभावित कानूनी जटिलताओं के डर से अपने आवास की खोज को रोकने का फैसला किया। एसबी 264 के तहत, रूस, ईरान, उत्तर कोरिया, क्यूबा, ??वेनेजुएला और सीरिया के नागरिकों को फ्लोरिडा में किसी भी सैन्य स्थापना या महत्वपूर्ण बुनियादी ढाँचे की सुविधा के 10 मील के भीतर संपत्ति खरीदने से प्रतिबंधित किया गया है।

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के नाम पर बने 4 वर्ल्ड रिकॉर्ड, अमेरिका के कार्यक्रम में भी जुटे सैकड़ों लोग

वाशिंगटन , एजेंसी। अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अमेरिका के वाशिंगटन में बुधवार को आयोजित एक कार्यक्रम में सैकड़ों की संख्या में योग प्रेमियों ने हिस्सा लिया। अमेरिका में भारत की उपराजदूत श्रीप्रिया रंगनाथन ने कार्यक्रम को संबोधित किया। पोटोमैक नदी के किनारे खूबसूरत घाट पर बुधवार को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस कार्यक्रम की शुरुआत प्रार्थना और भारतीय शास्त्रीय नृत्य प्रस्तुति के साथ हुई।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस हर वर्ष 21 जून को मनाया जाता है और इस वर्ष इसका शीर्षक स्वयं और समाज के लिए योग है। रंगनाथन ने कार्यक्रम में कहा कि योग समाज के उज्ज्वल भविष्य के लिए सद्भाव और संतुलन बनाने का मार्ग प्रशस्त करता है। उन्होंने कहा कि योग की सार्वभौमिक रुचि को मान्यता देते हुए 11 दिसंबर 2014 को संयुक्त राष्ट्र (संरा) ने 21 जून को अंतरराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया।

न्यू मैक्सिको के जंगलों में लगी भीषण आग, दो लोगों की हुई मौत; 1400 से ज्यादा इमारतें नष्ट

सांता फे , एजेंसी। दक्षिणी न्यू मैक्सिको के जंगलों में लगी आग में दो लोगों की मौत हो गई है। इस भीषण आग में 1,400 से ज्यादा घर और दूसरी इमारतें जल गई हैं और इसके चलते रुइदोसो के पहाड़ी रिसॉर्ट समुदाय से करीब 8,000 निवासियों को निकाला गया है।

न्यू मैक्सिको स्टेट पुलिस ने बुधवार को बताया कि एक जली हुई कार की ड्राइवर सीट पर एक व्यक्ति के अज्ञात कंकाल के अवशेष मिले हैं। वहीं, दूसरे पीड़ित की पहचान 60 वर्षीय पैट्रिक पियर्सन के रूप में हुई है। यह भीषण आग राज्य के सबसे बड़े शहर अल्बुकर्क से लगभग 135 मील दक्षिण-पूर्व में जल रही है (एक ऐसे क्षेत्र में जो कई जंगली आग का सामना कर चुका है) जिसमें 2022 में दो लोगों की मौत भी शामिल है। न्यू मैक्सिको के गवर्नर मिशेल लुजान ग्रिशम ने बुधवार को राष्ट्रपति जो बाइडन से साउथ फोर्क और साल्ट की आग के लिए एक बड़ी आपदा घोषणा की मांग की है। इस आग ने रुइदोसो के उत्तर और दक्षिण में 23,000 एकड़ (9,308 हेक्टेयर) से अधिक क्षेत्र को जला दिया है।

साल 2022 में भी लगा था विनाशकारी आग - न्यू मैक्सिको लगभग तीन दशक से सूखे की चपेट में है। सूखे की वजह से ही आग जंगल की और भी विनाशकारी और तेजी से फैल रहा है। साल 2022 में राज्य को महाद्वीपीय संयुक्त राज्य अमेरिका में सबसे बड़ी आग का सामना करना पड़ा था जिसमें 341,000 एकड़ से अधिक क्षेत्र जल गया।

अमेरिका ने किया सीरिया में हवाई हमला, आतंकी संगठन आईएसआईएस के वरिष्ठ अधिकारी को मारने का दिया दावा

वाशिंगटन , एजेंसी। सीरिया में अमेरिकी हवाई हमले में आईएसआईएस का एक वरिष्ठ अधिकारी मारा गया है। दावा करते हुए अमेरिका ने कहा कि मारे गए आईएसआईएस के वरिष्ठ अधिकारी की पहचान उसामा जमाल मुहम्मद इब्राहिम अल-जनाबी के रूप में की गई है जो कि आतंकियों की भर्ती का काम करता था। अमेरिकी सेंट्रल कमांड ने कहा कि उसकी मौत से आईएसआईएस की आतंकी हमले करने की क्षमता बाधित हो जाएगी।

एक्स पर साझा किए गए एक बयान में, यूएस सेंट्रल कमांड ने कहा कि कसीरिया में यूएस सेंट्रल कमांड के हवाई हमले में आईएसआईएस के वरिष्ठ अधिकारी की मौत हो गई। 16 जून को, यूएस सेंट्रल कमांड ने सीरिया में हवाई हमले को अंजाम दिया, जिसमें आईएसआईएस के एक वरिष्ठ अधिकारी उसामा जमाल मुहम्मद इब्राहिम अल-जनाबी की मौत हो गई।

सीएनएन की रिपोर्ट के अनुसार, अमेरिकी सेना अफ्रीका और मध्य पूर्व में आईएसआईएस आतंकियों को निशाना बना रही है। सीएनएन ने यूएस अफ्रीका कमांड के हवाले से बताया कि लगभग तीन हफ्ते पहले, सोमालिया में धरदार के पास एक दूरदराज के इलाके में किए गए हवाई हमले में तीन आईएसआईएस आतंकवादियों के मारे जाने की खबर सामने आई थी।

इराक में 11 आतंकवादी मारे गए- रिपोर्ट के मुताबिक जनवरी से मार्चतक, सेंटकॉम और उसके सहयोगियों ने सीरिया में सात आईएसआईएस गुर्गों को मार डाला और 27 अन्य को हिरासत में लिया। रिपोर्ट में कहा गया है कि इसी समय के दौरान इराक में 11 आतंकवादी मारे गए और 36 लोगों को हिरासत में लिया गया है।

मलेशिया जा रहे प्लेन में लगी भयानक आग, पायलट की समझदारी से बची 138 यात्रियों की जान

क्वालालंपुर , एजेंसी। मलेशिया जा रहे एक प्लेन के इंजन में भीषण आग लगने से 138 यात्रियों की जान आफत में फंस गई। जिसके बाद हैदराबाद एयरपोर्ट पर प्लेन की इमरजेंसी लैंडिंग कराई गई। गुरुवार सुबह करीब पौने एक बजे हुई इमरजेंसी लैंडिंग से बड़ा हादसा होने से बच गया। लैंडिंग इसलिए कराई गई, क्योंकि प्लेन के इंजन में भीषण आग लग गई थी, जिसका वीडियो भी सामने आया है। पायलट ने सूझबूझ दिखाते हुए,ञ्रष्ट अधिकारियों से इमरजेंसी लैंडिंग की परमिशन मांगी व तुरंत एक्शन लेकर हैदराबाद एयरपोर्ट के अधिकारियों ने रनवे पर फायर ब्रिगेड, एंबुलेंस, स्टाफ और सुरक्षा कर्मियों को तैनात होने के आदेश दिए। फिर जहाज की लैंडिंग होते ही इंजन में लगी आग बुझाई गई।

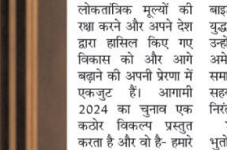

जहाज में सवार यात्रियों और क्रू मेंबर्स समेत सभी 138 लोग सुरक्षित हैं। जहाज के इंजन की मुरम्मत के प्रयास जारी हैं। मीडिया रिपोर्ट के अनुसार, मलेशिया एयरलाइंस के रूा-199 प्लेन ने गुरुवार सुबह करीब साढ़े उड़ान भरी थी और मलेशिया के कुआलाम्पुर से लैंडिंग होनी थी, लेकिन टेकऑफ होने के 14 मिनट बाद ही विमान के इंजन में आग भड़क गई। टेक्निकल फॉल्ट के कारण आग भड़की थी। प्लेन में करीब 138 लोग थे, इसलिए पायलट ने जान को खतरा देखते हुए रास्ते में हैदराबाद एयरपोर्ट अधिकारियों से मदद मांगी। ,ञ्रष्ट अधिकारियों ने तुरंत पायलट से संपर्क करके जहाज की इमरजेंसी लैंडिंग कराई। इस दौरान किसी भी तरह के खतरे से निपटने के लिए एयरपोर्ट के रनवे पर दल-बल मौजूद रहा।

राष्ट्रपति बाइडन के चुनावी अभियान ने दो सप्ताह में जुटाई बंपर रकम, चार करोड़ डॉलर से ज्यादा फंड किया एकत्र

वॉशिंगटन, एजेंसी। अमेरिका में इस साल नवंबर में राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव होने वाला है। इस दौड़ में मौजूदा राष्ट्रपति जो बाइडन और डोनाल्ड ट्रंप के बीच कड़ा मुकाबला है। दोनों ही एक दूसरे पर आरोप लगाने का कोई अवसर नहीं छोड़ रहे हैं। इस बीच, जो बाइडन के पुनर्निर्वाचन अभियान ने पिछले दो हफ्तों में चार करोड़ डॉलर से अधिक की राशि जुटाई है। यह जानकारी सत्तारूढ़ डेमोक्रेटिक पार्टी के उप राष्ट्रीय वित्त अध्यक्ष ने दी है।

इन लोगों ने भी दिया समर्थन- उन्होंने बताया कि इसमें दो तटों पर धन जमा करने के लिए रखे गए मात्र दो लोगों (फंडराइजर) ने तीन करोड़ डॉलर की राशि जुटाई है। धन जुटाने के दो कार्यक्रम लॉस एंजिल्स में आयोजित किए गए, जिनमें पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा और जॉर्ज क्लूनी तथा जूलिया रॉबर्ट्स जैसी हस्तियां शामिल हुईं। इसके अलावा वर्जीनिया के पूर्व गवर्नर टेरी मैकऑलिफ के घर पर भी कार्यक्रम आयोजित किए गए।

स ़ा ा रू ढ. डेमोक्रेटिक पार्टी के उप राष्ट्रीय वित्त अध्यक्ष अजय भुतोरिया ने कहा, हमारा अभियान लगातार धन जुटाने की मजबूत गति दिखा रहा है। हमने इस महीने टीवी विज्ञापनों के जरिए पांच करोड़ डॉलर जमा किए हैं। तीन दिन पहले बाइडन ने मशहूर हस्तियों और पूर्व राष्ट्रपति बराक ओबामा के साथ मिलकर लॉस एंजिलिस में तीन करोड़ डॉलर की धनराशि जुटाई। पिछले दो सप्ताह में ही चार करोड़ डॉलर से अधिक जुटाए।

यह चुनाव केवल राजनीतिक नहीं- उन्होंने कहा, डेमोक्रेट्स के तौर पर हम अपने लोकतांत्रिक मूल्यों की रक्षा करने और अपने देश द्वारा हासिल किए गए विकास को और आगे बढ़ाने की अपनी प्रेरणा में एकजुट हैं। आगामी 2024 का चुनाव एक कठोर विकल्प प्रस्तुत करता है और वो है- हमारे लोकतंत्र की सुरक्षा या फासीवादी - डोनाल्ड ट्रंप का चुनाव। यह चुनाव केवल राजनीतिक नहीं है, यह हमारे राष्ट्र के भविष्य के लिए एक निर्णायक पल है।

भारतीय-अमेरिकी समुदाय का महत्व- इस यात्रा में भारतीय-अमेरिकी समुदाय की महत्वपूर्ण भूमिका को रेखांकित करते हुए, भुतोरिया ने कहा कि राष्ट्रपति बाइडन के लिए उनका मजबूत समर्थन कई युद्ध के मैदानों में जीत का अंतर हो सकता है। उन्होंने कहा कि इस चुनाव में भारतीय-अमेरिकियों की भागीदारी और प्रतिबद्धता समावेशिता, आर्थिक विकास और अंतर्राष्ट्रीय सहयोग को बढ़ावा देने वाली नीतियों की निरंतरता सुनिश्चित कर सकती है।

डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ रैली- भुतोरिया ने कहा, लॉस एंजिल्स में हुए कार्यक्रम के दौरान बाइडन और पूर्व राष्ट्रपति ओबामा ने डोनाल्ड ट्रंप के खिलाफ रैली की।इस कार्यक्रम में जॉर्ज क्लूनी, जूलिया रॉबर्ट्स और बारब्रा स्ट्रीसैंड जैसी उल्लेखनीय हस्तियां शामिल हुईं, जिन्होंने इस ऐतिहासिक शाम का हिस्सा बनने के लिए 250 डॉलर से पांच लाख डॉलर के बीच का योगदान दिया।

रूसी राष्ट्रपति पुतिन राजकीय यात्रा पर वियतनाम पहुंचे

हनोई, एजेंसी। रूस के राष्ट्रपति व्लादिमीर पुतिन वियतनाम दौरे पर हैं। उत्तर कोरिया का दौरा समाप्त कर गुरुवार को राष्ट्रपति पुतिन हनोई के नोई बाई एयरपोर्ट पर पहुंचे। रूसी राष्ट्रपति के स्वागत के लिए रेड कार्पेट बिछाया गया। वियतनाम के उप प्रधानमंत्री ट्रान हॉन्ग हा, अंतर्राष्ट्रीय मामलों के विभाग सीपीवी केंद्रीय समिति के प्रमुख ली होआई ट्रंग और वियतनाम के डिप्टी विदेश मंत्री ले थी थू हैंग ने रूसी राष्ट्रपति से मुलाकात की। इस दौरे के दौरान राष्ट्रपति पुतिन ने वियतनाम के चार नेताओं से मुलाकात की, जिसमें राष्ट्रपति, देश की कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के महासचिव, प्रधानमंत्री और नेशनल असेंबली के चेयरमैन का नाम शामिल हैं। वह सोवियत और रूसी यूनिवर्सिटी के स्नातकों से भी मिलेंगे। वियतनाम आने से पहले पुतिन उत्तर कोरिया के दौरे पर थे।

समत्वं योग उच्यते।

अंतरराष्ट्रीय योग दिवस

पर करें मन की बेचैनी दूर

चिंता, तनाव या किसी शारीरिक समस्या के कारण मन में बहुत बेचैनी रहती है। कहीं ऐसा तो नहीं कि दिमागी झंझावतों की वजह से आप रातभर करवटें बदलते रहते हों। मन की बेचैनी को दूर करके मन को शांत रखना चाहते हैं तो योग दिवस पर आपके लिए हम लाए हैं मात्र 5 ऐसे उपाय जो आपकी मन की शांति को बढ़ा देंगे।

ये तीन प्राणायाम करें

चंद्रभेदी, सूर्यभेदी और भ्रामरी प्राणायाम को अपनी दिनचर्या का हिस्सा बना लें। इन्हें आसानी से सीखा जा सकता है।

योगासन

योगासनों में जानुशिरासन, सुप्तवज्रासन, पवनमुक्तासन, पश्चिमोतानासन, उष्ट्रासन, ब्रह्ममुद्रा या फिर रोज सूर्य नमस्कार करें।

ध्यान करें

यदि उपरोक्त में से कुछ भी नहीं कर सकते हैं तो प्रतिदिन 10 मिनट का ध्यान करें।

श्वास प्रश्वास

यदि उपरोक्त में से कुछ भी नहीं कर सकते हैं तो श्वास प्रश्वास की ये स्टेप करें। सबसे पहले पेट तक गहरी श्वास लें। फिर उससे दोगुने समय तक रोककर रखें और अंत में जितनी देर तक छोड़ते सकते हैं छोड़े। ऐसा कम से कम 10 बार तक करें।

योग निद्रा

प्राणायाम में भ्रामरी और प्रतिदिन पांच मिनट का ध्यान करें। आप चाहें तो 20 मिनट की योग निद्रा लें जिसके दौरान रुचिकर संगीत पूरी तन्मयता से सुनें और उसका आनंद लें। यदि आप प्रतिदिन योग निद्रा ही करते हैं तो यह रामबाण साबित होगी।

21 जून को पूरे विश्व में तृतीय अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा। भारत देश में योग दिवस का एक अपना ही अलग महत्व है। योग भारतीय प्राचीन संस्कृति की परम्पराओं को समाहित करता है। भारत देश में योग का प्राचीन समय से ही अहम स्थान है। पतंजलि योग दर्शन में कहा गया है कि - योगश्चित्तवृत्त निरोधः अर्थात चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है।

21 जून अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस विशेष

मनुष्य की समता और ममता को मजबूती प्रदान करता है योग

हर साल अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून को मनाया जाता है। इस साल पूरे विश्व में तृतीय अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया जाएगा। भारत देश में योग दिवस का एक अपना ही अलग महत्व है। योग भारतीय प्राचीन संस्कृति की परम्पराओं को समाहित करता है। भारत देश में योग का प्राचीन समय से ही अहम स्थान है। पतंजलि योग दर्शन में कहा गया है कि - योगश्चित्तवृत्त निरोधः अर्थात चित्त की वृत्तियों का निरोध ही योग है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो हरदय की प्रकृति का संरक्षण ही योग है। जो मनुष्य को समरसता की और ले जाता है।

योग मनुष्य की समता और ममता को मजबूती प्रदान करता है। यह एक प्रकार का शारारिक व्यायाम ही नहीं बल्कि जीवात्मा का परमात्मा से पूर्णतया मिलन है। योग शरीर को तो स्वस्थ्य रखता ही है इसके साथ-साथ मन और दिमाग को भी एकाग्र रखने में अपना योगदान देता है। योग मनुष्य में नए-नए सकारात्मक विचारों की उत्पत्ति करता है। जो कि मनुष्य को गलत प्रवृति में जाने से रोकते हैं। योग मन और दिमाग की अशुद्धता को बाहर निकालकर फेंक देता है। योग व्यक्तिगत चेतना को मजबूती प्रदान करता है। योग मानसिक नियंत्रण का भी माध्यम है। हिन्दू धर्म, बौध्द धर्म और जैन धर्म में योग को आध्यात्मिक दृष्टि से देखा जाता है। योग मन और दिमाग को तो एकाग्र रखता है ही साथ ही साथ योग हमारी आत्मा को भी शुध्द करता है। योग मनुष्य को अनेक बीमारियों से बचाता है और योग से हम कई बीमारियों का इलाज भी कर सकते हैं। असल में कहा जाते तो योग जीवन जीने का माध्यम है।

श्रीमद्भागवत गीता में कई प्रकार के योगों का उल्लेख किया गया है। भगवद गीता का पूरा छठा अध्याय योग को समर्पित है। इसमें योग के तीन प्रमुख प्रकारों के बारे में बताया गया है। इसमें प्रमुख रूप से कर्म योग, भक्ति योग और ज्ञान योग का उल्लेख किया गया है। कर्म योग- कार्य करने का योग है। इसमें व्यक्ति अपने स्थिति के उचित और कर्तव्यों के अनुसार कर्मों का श्रद्धापूर्वक निर्वाह करता है। भक्ति योग- भक्ति का योग। भगवान के प्रति भक्ति । इसे भावनात्मक आवरण वाले लोगों को सुझाया जाता है। और ज्ञान योग- ज्ञान का योग अर्थात ज्ञान अर्जित करने का योग। भगवत गीता के छठे अध्याय में बताए गए सभी योग जीवन का आधार है। इनके बिना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती। भगवद्गीता में योग के बारे में बताया गया है कि - सिद्धयसिद्धयो समोभूत्वा समत्वंयोग उच्यते। अर्थात दु:ख-सुख, लाभ-अलाभ, शत्रु-मित्र, शीत और उष्ण आदि द्वन्दों में सर्वत्र समभाव रखना योग है। दुसरे शब्दों में कहा जाए तो योग मनुष्य को सुख-दु:ख, लाभ-अलाभ, शत्रु-मित्र, शीत और उष्ण आदि परिस्थितियों में सामान आचरण की शक्ति प्रदान करता है। भगवान श्रीकृष्ण ने गीता में एक स्थल पर कहा है 'योग: कर्मसु कौशलम' अर्थात योग से कर्मों में कुशलता आती हैं। वास्तव में जो मनुष्य योग करता है उसका शरीर, मन और दिमाग तरोताजा रहता है और मनुष्य प्रत्येक काम मन लगाकर करता है।

27 सितंबर 2014 को प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने संयुक्त राष्ट्र में अपने पहले संबोधन में अंतरराष्ट्रीय योग दिवस मनाने की जोरदार पैरवी की थी। इस प्रस्ताव में उन्होंने 21 जून को ''अंतरराष्ट्रीय योग दिवस'' के रूप में मान्यता दिए जाने की बात कही थी। मोदी की इस पहल का 177 देशों ने समर्थन किया। संयुक्त राष्ट्र महासभा के 69वें सत्र में इस आशय के प्रस्ताव को लगभग सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया। और 11 दिसम्बर 2014 को को संयुक्त राष्ट्र में 193 सदस्यों द्वारा 21 जून को ''अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस'' को मनाने के प्रस्ताव को मंजूरी मिली। प्रधानमंत्री मोदी के इस प्रस्ताव को 90 दिन के अंदर पूर्ण बहुमत से पारित किया गया, जो संयुक्त राष्ट्र संघ में किसी दिवस प्रस्ताव के लिए सबसे कम समय है। पहला अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस 21 जून 2015 को मनाया गया और पूरे विश्व में धूमधाम से मनाया गया। इस दिन करोड़ों लोगों ने विश्व में योग किया जो कि एक रिकॉर्ड था। योग दिवस में 'सूर्य नमस्कार' व 'ओम' उच्चारण का कुछ मुस्लिम संगठन विरोध करते रहे हैं।

असल में कहा जाए तो 'ओम' शब्द योग के साथ जुड़ा हुआ है। इसे विवाद में तब्दील करना दुर्भाग्यपूर्ण है। लेकिन इसे हर किसी पर थोपा भी नहीं जा सकता। इसलिए योग करते समय लोगों को 'ओम' उच्चारण को अपनी धार्मिक मान्यता की आजादी के अनुसार प्रयोग करना चाहिए। अगर किसी का धर्म ओम उच्चारण की आजादी नहीं देता तो उन्हें बिना ओम जाप के योग करना चाहिए। लेकिन योग को किसी एक धर्म से जोडकर विवाद पैदा नहीं करना चाहिए। आज के समय में योग को भारत के जन-जन तक योग को पहुंचाने में योग गुरु बाबा रामदेव, आध्यात्मिक गुरु श्री श्री रविशंकर सहित अनेकों ऐसे महापुरुषों का अहम योगदान है। इनके योग के क्षेत्र में योगदान की वजह से ही आज भारत के घर-घर में प्रतिदिन योग होता है।

भगवद्गीता के अनुसार - तस्माद्दयोगायुज्यस्व योग: कर्मसु कौशलम। अर्थात करत्व्य कर्म बंधक न हो, इसलिए निष्काम भावना से अनुप्रेरित होकर करत्व्य करने का कौशल योग है। योग को सभी लोगों को सकारात्मक भाव से लेना चाहिए। कोई भी धर्म-संप्रदाय योग की मनाही नहीं करता। इसलिए लोगों को योग को विवाद में नहीं घसीटना चाहिए। योग बुध्दि कुशाग्र बनाता है और संयम बरतने की शक्ति देता है। योग की जितनी धार्मिक मान्यता है। उतना ही योग स्वस्थ्य शरीर के लिए जरूरी है। योग से शरीर तो स्वस्थ्य रहता है ही साथ ही साथ योग चिंता के भाव को कम करता है। और मनोबल भी मजबूत करता है। योग मानसिक शांति प्रदान करता है और जीवन के प्रति उत्साह और ऊर्जा का संचार करता है। योग मनुष्य में सकारात्मकता तो बढाता है ही, साथ ही साथ शरीर की प्रतिरोधक क्षमता भी बढाता है। इसलिए लोगों को इस तनाव भरे जीवन से मुक्ति पाने के लिए योग करना चाहिए। और दूसरे लोगों को भी प्रेरित करना चाहिए। जिससे कि अधिक से अधिक लोगों को इसका लाभ मिल सके।

2000 वर्ष पुराना है भारत में योग का इतिहास

योग का उद्भव भारत से ही माना जाता है। भारत में स्वामी विवेकानंद ने योग की शुरुआत बहुत पहले कर दी थी। स्वामी जी ने अपने शिकागो सम्मेलन के भाषण में योग का संदेश संपूर्ण विश्व को दिया था। योग पर आधारित पुस्तकों का संग्रह आज भी भारत के राष्ट्रीय संग्रहालयों में मिलता है। योग भारत के पास प्रकृति की एक अमूल्य वस्तु है।

योग के फायदे

मानसिक तनाव से छुटकारा

सुबह के समय योग करने का सबसे ज्यादा असर व्यक्ति की मानसिक स्थिति पर होता है। प्रात: योग करने से दिन भर के मानसिक तनाव से छुटकारा मिल जाता है एवं सभी कार्य आसानी एवं सरलता से हो जाते हैं।

वजन कम करने में सहायक

योग वजन घटाने में अत्यधिक सहायक है। सूर्य नमस्कार, योग का ऐसा अंग है जो वजन कम करने में अत्यंत सहायक है। प्रतिदिन सूर्य नमस्कार करने से व्यक्ति का 10 ग्राम तक वजन कम होता है।

डाईबिटीज रोगियों के लिए जरुरी

कहा जाता है कि डाईबिटीज एक ऐसी बीमारी है जो कभी ठीक नहीं होती। लेकिन ऐसा नहीं है, योग और प्राणायाम से इस बीमारी का इलाज भी संभव है। योग के नियमित अभ्यास से डाईबिटीज जैसी बीमारी से राहत पाई जा सकती है।

मन प्रसन्न

प्रतिदिन सुबह के समय योग करने से मन दिन भर प्रसन्न रहता है, साथ ही मानसिक शांति भी मिलती है। मानसिक रोगों को दूर कर प्रसन्न रहने के लिए यह एक बेहतरीन उपाय है।

आत्मविश्वास में बढ़ोत्तरी

योग से मस्तिष्क सक्रिय होता है और शारीरिक ऊर्जा में वृद्धि होती है, जिससे व्यक्ति का मन किसी भी कार्य में व्यवस्थित रूप से लगा रहता है एवं उसके सभी काम समय पर होने से उसका आत्मविश्वास भी बढ़ता है।

योग का महत्व

आज के समय में सभी के जीवन में योग का बहुत अधिक महत्व है। वर्तमान में बढ़ती बीमारियों से निपटने के लिए योग बहुत जरुरी है। जिस प्रकार डाईबिटीज के मरीज के लिए दवा जरुरी है, ठीक उसी प्रकार जीवन में योग बहुत आवश्यक है। प्रात: काल का समय, योग करने का सही समय माना जाता है। सुबह के समय योग करने से व्यक्ति के मस्तिष्क की सभी इंद्रियां भलीभांति गतिमान होती हैं, जिससे व्यक्ति का मन एकाग्र होकर कार्य करता है। योग एक ऐसी साधना है, जिसका जीवन में होना बहुत जरुरी है। योग एक ऐसी दवा है, जो बगैर खर्च के रोगियों का इलाज करने में सक्षम है। वहीं यह शरीर को ऊर्जावान बनाए रखता है, यही कारण हैं कि युवाओं द्वारा बड़े पैमाने पर जिम और एरोबिक्स को छोड़कर योग अपनाया जा रहा है।

योग का भविष्य

भारत के लिए बहुत गर्व की बात है की संपूर्ण विश्व में अंतराष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया जा रहा है। आज के समय में योग का उज्जवल भविष्य सामने है। वर्तमान में योग के प्रति लोगों की रुचि बढ़ती जा रही है, जिससे आने वाले समय में योग का स्तर और व्यापक होने की संभावनाओं से इंकार नहीं किया जा सकता। योग अब विदेशों में भी अपनाया जा चुका है जो यह दर्शाता है कि योग अब अंतराष्ट्रीय स्तर विकसित हो चुका है।

योग की सावधानियां

- योग सुबह या शाम के समय करना ज्यादा बेहतर होगा।
- योग हमेशा खाली पेट करें।
- योग अपने शरीर के हिसाब से करें। जो आसन आप कर सकते हैं वही आसन करें।

ब्रीदिंग एक्सरसाइज को योग का खजाना कहा जाता है। इसे करने से न सिर्फ हार्मोनल इबैलेंस बल्कि पाचन से जुड़ी कई दिक्कतें भी दूर हो सकती हैं। ऐसी ही एक एक्सरसाइज का नाम है कपालभाति। आइए जानते हैं कपालभाति प्राणायाम करने से शरीर को मिलते हैं कौन से फायदे।

हार्मोनल इबैलेंस ही नहीं पाचन से जुड़ी दिक्कतें भी दूर करता है कपालभाति

डाइजेस्टिव सिस्टम को बनाएं मजबूत

कपालभाति डाइजेस्टिव सिस्टम को मजबूत बनाकर गैस, एसिडिटी, कब्ज जैसी समस्याओं में भी राहत देता है।

दिल के लिए अच्छा

कपालभाति प्राणायाम फेफड़ों, स्प्लीन, लीवर, पैनक्रियाज के साथ-साथ दिल के कार्य में सुधार करता है। यह न केवल कोलेस्ट्रॉल को कम करता है बल्कि धमनी के अवरोध को दूर करने में भी मददगार है।

नर्वस सिस्टम

यह नर्वस सिस्टम यानि तंत्रिका तंत्र के लिए भी बहुत अच्छा प्राणायाम माना जाता है। इसे करते समय होने वाली पंपिंग से ब्रेन के सेल्स में ऑक्सीजन का लेवल बढ़ जाता है। कई महिलाओं को कपालभाति करते समय बीच में उबासी आती है। उबासी आने का मतलब यह है कि ब्रेन के सेल्स बहुत थके हुए हैं और जब ऑक्सीजन जाता है तब वह रिलैक्स हो जाते हैं।

हार्मोंस बैलेंस

यह रिप्रोडक्टिव सिस्टम के लिए भी बहुत अच्छा होता है। इसके नियमित अभ्यास करने से ब्लड की सप्लाई यूट्रस, फैलोपियन ट्यूब और ओवरीज में बढ़ती है, जहां पर साफ-सफाई का काम हो जाता है। जैसे कि पीसीओडी होने पर सिस्ट बन जाते हैं। यह सिस्ट हार्मोनल इबैलेंस के कारण बनते हैं। लेकिन जब कपालभाति प्राणायाम किया जाता है तब इससे हार्मोस बैलेंस होते हैं।

ग्लोइंग त्वचा

कपालभाति शरीर से विषाक्त पदार्थों को निकालने में मदद करता है। जिससे आपकी त्वचा के स्वास्थ्य में सुधार होता है और त्वचा ग्लोइंग बनती है।